CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूमिका

वन्दे वन्दारुमन्दारमिन्दुभूषणनन्दनम् ।
अमन्दान्दसंदोहबन्धुरं सिन्धुराननम् ॥

ज्योतिष, हस्तरेखा, स्वर, शकुन, शरीर-लक्षण इत्यादि विविध विद्याएं सत्य हैं। प्राचीन समय से ही ऋषि-मुनियों ने अपने आत्म-ज्ञान से भविष्य को जानकर जनसाधारण के लिए विविध विद्याओं को ग्रंथों के रूप में लिखा। उनकी भविष्यवाणी पूर्ण रूप में सत्य निकलती थी। उन्होंने लिखा है :

“देवा दानवा गन्धर्वा यक्ष राक्षस किन्नराः।
पीड्यंते सर्वपीड़ाभिः किं पुनर्भु विमानवाः।”

अर्थात् ग्रह, देव, दानव तक को पीड़ा करते हैं, फिर मनुष्य की तो बात ही क्या है। भगवान् विष्णु भी शनि की साढ़े साती आने पर हाथी का रूप रख कर जंगल में घूमते रहे; राहु ने राजा नल को [illegible] किया; बुध ने पांडवों को बनवास दिलाया; जन्म के गुरु ने राजा दुर्योधन के प्राण लिए; मंगल के कारण श्री रामचन्द्रजी को पत्नी का वियोग हुआ इत्यादि।

चाणक्य कहते हैं कि जप करने से (अपने कुलानुसार) कोई भी व्यक्ति अपने दुष्कर्मों के फल को नष्ट कर देता है। प्रस्तुत पुस्तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में हमने भारतीय ज्योतिष के मूल सिद्धांतों के साथ-साथ ही यूरेनस (हर्शल) और नेपच्यून के प्रभाव पर भी पूर्ण प्रकाश डाला है। ज्योतिष के सिद्धांतों के अतिरिक्त ग्रहों के तत्त्वों को समझकर जो फलादेश करेंगे; वह अक्षरशः सत्य होगा।

—आशुतोष ओझा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय सूची

अध्याय १

ज्योतिष क्या है ? ११

विभिन्न देशों में ज्योतिष का आरम्भ, राशि-मण्डल, राशियां, राशियों के अंश, ग्रह, ग्रहों की गति।

अध्याय २

जन्म-कुण्डली १७

जन्म-कुण्डली की गणना, दूसरे भावों में राशियां, राशि और भाव, ग्रह स्पष्ट, चन्द्रमा, निरयण ग्रह स्पष्ट, जन्म-लग्न, जन्म चक्र (दक्षिणी भारत में प्रचलित), जन्म-चक्र (पूर्वी भारत में प्रचलित)

अध्याय ३

राशियां २६

विषम और सम राशियां, पुरुष और स्त्री राशियां, राशियां और शरीर के भाग, राशियां और उनके विभाग, नवांश कुण्डली, दिवाबली और रात्रिबली राशियां, ग्रह की दिशाएं, पृष्ठोदय और शीर्षोदय राशियां।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय ४

भाव ४०

भावों के नाम, पहला भाव, दूसरा भाव, तीसरा भाव, चौथा भाव, पांचवां भाव, छठा भाव, सातवां भाव, आठवां भाव, नवां भाव, दसवां भाव, ग्यारहवां भाव, बारहवां भाव।

अध्याय ५

ग्रह ४६

मूल त्रिकोण, उच्च, नीच, ग्रहों की परस्पर मित्रता, नैसर्गिक मैत्री चक्रम, तात्कालिक मैत्री, तात्कालिक मैत्री चक्रम, पंचधा मैत्री, पंचधा मैत्री चक्रम, क्रूर और शुभ ग्रह दृष्टि, ग्रहों की दिशाएं, ग्रहों के रंग, रत्न और धातु, ग्रहों का लिंग, ग्रहों का शरीर के तत्वों से सम्बन्ध, स्वाद, दिग्वल, अस्त ग्रह।

अध्याय ६

राशियों में ग्रहों का फल ६५

राशियों में ग्रहों का फल, जन्म लग्न या चन्द्रमा, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नेपच्यून।

अध्याय ७

ग्रहों का भावों में फल ८१

पहला भाव, दूसरा भाव, तीसरा भाव, चौथा भाव, पांचवां भाव, छठा भाव, सातवां भाव, आठवां भाव, नवां भाव, दसवां भाव, ग्यारहवां भाव, वारहवां भाव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय ८

फलित विचार ९८

भाव का स्वामी, भाव, चन्द्र राशि से भाव विचार, कारक, शरीर, शरीर के अंग, स्वभाव, बीमारियां, लग्न से बीमारियों का विचार, धन, गरीबी, अचल संपत्ति, वाणी, भाई और बहन, माता, वाहन, मित्र, सुख, विद्या, संतान, सट्टे से लाभ, शत्रु, पत्नी, आयु, विरासत, धार्मिक स्वभाव, विदेश यात्राएं, पिता, व्यवसाय, शुभ योग।

अध्याय ९

दशा-अन्तर्दशा १३०

सारिणी 'क', सारिणी 'ख', जन्म के समय भोग्य दशा, सारिणी 'ग', जन्म के समय भोग्य दशा, उदाहरण कुण्डली में अन्तर्दशाएं, केतु की महादशा में ग्रहों की अन्तर्दशाएं।

अध्याय १०

ग्रह फल का समय १४५

साधारण सिद्धान्त, पहला सिद्धान्त, दूसरा सिद्धान्त, पहले भाव का स्वामी, दूसरे भाव का स्वामी, तीसरे भाव का स्वामी, चौथे भाव का स्वामी, पांचवें भाव का स्वामी, छठे भाव का स्वामी, सातवें भाव का स्वामी, आठवें भाव का स्वामी, नवें भाव का स्वामी, दसवें भाव का स्वामी, ग्यारहवें भाव का स्वामी, बारहवें भाव का स्वामी, तीसरा सिद्धान्त, योगकारक, मारक, लग्न के अनुसार ग्रह का प्रभाव, अन्तर्दशा, साधारण सिद्धान्त, व्यावहारिक सिद्धान्त, दूसरा सिद्धान्त, भाव और वर्ष, जापान के सम्राट हीरोहितो, सुदर्शन चक्र पद्धति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोचर १७१

सूर्य, गोचर का चन्द्र, मंगल का गोचर, बुध का गोचर, वृहस्पति का गोचर, शुक्र का गोचर, शनि का गोचर, राहु और केतु के गोचर, गोचर का फल।

पारिभाषिक शब्दों का अर्थ १८७

अयनांश, अक्षांश, देशान्तर, अन्तर्दशा, अस्त, अंश, आपोक्लिम, उच्च, नीच, उपचय, उभयोदय, कला, क्रूर ग्रह, केन्द्र, त्रिकोण, क्रान्तिवृत्त, गोचर, ग्रह, देशान्तर, दृष्टि, दशाएं, दिशाएं, नीच, नवांग, नक्षत्र, पणफर, पाप ग्रह, पीड़ित, शुभ, क्रूर, पुरुष राशियां, स्त्री राशियां, पुरुष ग्रह, पृष्ठोदय राशियां, शीर्षोदय राशियां, उभयोदय राशियां, वलवान, भाव, महादशा, पंचांग, युति, राशि, लग्न, लग्न स्पष्ट, वक्री, वर्गोत्तम, विकला, विषुव काल, शीर्षोदय राशियां, स्वग्रही, स्थानीय मध्यम काल, स्टैण्डर्ड टाइम, स्वामी, स्थिर राशियां, सम्बन्ध, त्रिक, योगकारक, मारकेश, राजयोग।

महत्त्वपूर्ण जन्म-कुण्डलियां

श्रील भक्ति-वेदान्त प्रभुपाद, १२३
श्रील हंसदूत स्वामी,
श्रीमती इन्दिरा गांधी, १२३
श्री संजय गांधी, १५०
जापान के सम्राट हीरोहितो, १६७
ईरान के बादशाह मोहम्मद रज़ा पहलवी और १२४
अन्य वहुत-सी जन्म-कुण्डलियां।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—१

ज्योतिष क्या है ?

विभिन्न देशों में ज्योतिष का आरम्भ

सब विद्याओं का उद्देश्य है ज्ञानप्राप्ति और ज्योतिषशास्त्र को इसमें प्रधान माना गया है। 'वेदों के नेत्र'—यही ज्योतिष की परिभाषा है। जिस प्रकार शरीर में नेत्रों का स्थान है, उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र का वेदों में महत्त्व है। प्राचीन काल में न केवल भारतवर्ष अपितु चीन, मिस्र, परशिया, ग्रीक, यहूदियों इत्यादि में भी इसका प्रचलन था।

ज्योतिषशास्त्र किस देश में सबसे पहले शुरू हुआ, इसके बारे में मतभेद है। चीन के रहने वाले जिस प्रकार से अपने-आपको प्रत्येक वस्तु का आरम्भकर्ता कहते हैं, उसी प्रकार उनका कहना है कि ईसा-पूर्व२६३७ वर्ष में ताजाओं नाम के प्रधानमंत्री ने नक्षत्रों का पता चलाया।

मिस्र के 'पिरामिड' वहुत प्राचीन काल से हैं और उनका निर्माण ज्योतिष के अनुसार किया गया है। (नैकटेनिबस नाम का जादूगर मिस्र देश के आदि राजाओं में से सबसे आखिर में हुआ है। वह सब प्रकार की आध्यात्मिक विद्याओं को जानता था और ज्योतिष में उसकी विशेष रुचि थी। उसीके आधार पर उसने उन लोगों का पता लगाया जो उसके शत्रु थे। उसने तन्त्रशास्त्र का प्रयोग करके अपने शत्रुओं का नाश किया था। अन्त में स्वयं वह मिस्र छोड़कर मेसिडोनिया चला गया था, जहां एक देवता के रूप में उसकी पूजा की जाती थी। अलैक्जेंडर के जन्म के समय नैकटेनिवस वहां ज्योतिषी के रूप में मौजूद था और उसके जन्म के समय ग्रहों की स्थिति देखकर उसने कहा था कि यह दुनिया पर शासन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करेगा।

प्राचीन काल में अरब के बादशाह विद्या और सभ्यता को प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत विद्वानों को विदेशों में भेजा। उन्होंने ग्रहों का अध्ययन करने के लिए बहुत-सी यंत्रशालाएं (औब्जरवेटरी) बनवाईं। खलीफा-अल-रशीद, जिसका ज्ञान सोलोमन के ज्ञान से किसी भी प्रकार से कम नहीं था और उसके लड़के खलीफा-अल-मामून ने ग्रीक की बहुत-सी ज्योतिष, गणित ज्योतिष की पुस्तकों को 'अरेबिक' में अनुवाद करवाया। भारतवर्ष से ज्योतिष का ज्ञान विभिन्न देशों में गया। उसमें भी यवनाचार्य ने उसे बढ़ाने में विशेष योग दिया। आजकल वर्षप्रवेश (ताजिक) का जो सिद्धान्त प्रचलित है, वह काफी सीमा तक यवनाचार्य के कारण ही है।

प्राचीन काल में ज्योतिष (और दूसरी विद्याओं) को भी उसी प्रकार छिपाकर रखा जाता था जिस प्रकार से आजकल के समय में 'एटम' के सिद्धान्तों को। इसका कारण यह था कि कोई भी विद्या गलत नहीं है, परन्तु गलत हाथों में पड़कर उसका प्रयोग हानिकारक होता है। प्राचीन काल में महर्षियों ने अपने अन्तःचक्षु से ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया। महर्षि राग-द्वेष से मुक्त थे और जो सबसे उचित शिष्य उन्हें मिले उन्हें ही उन्होंने ज्योतिष विद्या का ज्ञान दिया। आदिकाल से जो लिखित ग्रंथ सामने आए हैं उनके कारण पाराशर, वशिष्ठ, व्यास, गर्ग, अत्रि, जैमिनी, नारद इत्यादि का नाम जुड़ा हुआ है। महर्षि पाराशर जो व्यास मुनि के पिता थे, उन्हें ज्योतिष का पिता भी कहते हैं। पाराशर लिखित 'बृहत् पाराशर' आज भी सब ज्योतिष की पुस्तकों में श्रेष्ठ समझी जाती है।

हमारा विचार है कि ज्योतिषशास्त्र का प्रचलन अलग-अलग जगह में अपने-आप में हुआ। कुछ स्थानों में इसकी प्रगति होती रही और कुछ अन्य स्थानों में थोड़ी-सी प्रगति होकर ही रुक गई। भारतवर्ष में ज्योतिष का प्रचार निरन्तर बढ़ता ही रहा और यद्यपि बहुत-से अमूल्य ग्रंथ शक, हूण, मंगोल और उसके बाद म्लेच्छ यवन इत्यादि के निरन्तर हमले में नष्ट हो गए या भारत से दूसरे देशों में ले जाए गए, परन्तु तब भी ज्योतिष के ज्ञान में कोई कमी नहीं आई। भारतवर्ष में ही ऋषियों के कारण ज्योतिष का प्रचार हुआ। राजाओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के आश्रय में रहकर ज्योतिषियों ने ज्योतिष के गौरव को बढ़ाया। प्राचीन काल में प्रत्येक दरबार में राजज्योतिषी भी हुआ करते थे, जो न केवल ज्योतिष में अपितु समस्त विद्याओं में पारंगत होते थे। जयपुर नरेश जयसिंह ने विभिन्न स्थानों में ग्रहों के अन्वेषण के लिए यन्त्रशालाओं (ऑब्ज़रवेटरी) का निर्माण करवाया जिसमें दिल्ली और जयपुर ही मुख्य हैं। अलवर नरेशों के प्रश्रय में रहते हुए ही हमारे पूर्वजों ने तन्त्र, ज्योतिष इत्यादि पर अनेक ग्रंथ और शोधन-कार्य किए।

यहां हम यह बताना चाहेंगे कि ज्योतिष केवल विज्ञान नहीं है। इसमें गणित है जिसके द्वारा ग्रहों की स्थिति का ज्ञान होता है। इसमें ग्रहों का स्वरूप और उनका जीव-जन्तुओं पर प्रभाव, जीवन में कब घटनाएं घटित होंगी, किस समय जीवों में मानसिक स्फूर्ति होगी इत्यादि है। परन्तु इसके साथ ही आध्यात्मिक पहलू भी जुड़ा हुआ है। ग्रहों की स्थिति का पता लगाकर उनके स्वरूप और गुणों को देखकर तारतम्य से फलादेश करना उस समय तक सफल नहीं होगा, जब तक कि बताने वाला ज्योतिषी भी पवित्र नहीं है।

जिस समय बालक का जन्म होता है उसकी जन्म-कुण्डली बनाई जाती है और अशुभ ग्रहों के लिए ग्रह-शान्ति की जाती है। श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में वर्णन किया गया है कि श्रीकृष्ण के जन्म के बाद नंदजी उन्हें लेकर गर्ग मुनि के पास गए, यह जानने के लिए कि बालक के ग्रह क्या बताते हैं। ग्रहों की स्थिति से हमें पता चलता है कि इस बालक की जीवन के किस विभाग में प्रगति हो सकती है तथा उसके लिए उसे क्या करना चाहिए। यदि जीवन के आरम्भ से ही हम बालक की प्रगति चाहते हैं तो उसे उसी दिशा में प्रेरित करें जिसमें उसकी योग्यताएं शीघ्र और शुभ फल दिखाने वाली हैं, और यह ज्योतिषशास्त्र से ज्ञात हो सकता है।

राशि-मंडल

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। हालांकि देखने में यह प्रतीत होता है कि सूर्य चल रहा है। इसी प्रकार मंगल, बुध, बृहस्पति,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र, शनि इत्यादि सूर्य की परिक्रमा करते हैं। ये जिस रास्ते से जाते हैं, वह क्रान्तिवृत्त (राशि-मण्डल) कहलाता है। इसे ही बारह भागों में बांटने पर बारह राशियां हुईं।

राशियां

यह राशि-मण्डल बिलकुल गोल नहीं अपितु अण्डे के आकार का है, क्योंकि इसके केन्द्रों पर ३६० अंश का कोण होता है इसलिए इसके १२ विभाग करने पर प्रत्येक विभाग में ३० अंश हुए। ये बारह विभाग राशियां कहलाती हैं। इनके नाम क्रम से इस प्रकार हैं:

१. मेष	५. सिंह	९. धनु
२. वृषभ	६. कन्या	१०. मकर
३. मिथुन	७. तुला	११. कुंभ
४. कर्क	८. वृश्चिक	१२. मीन

सूर्य का जिस दिन राशि में प्रवेश होता है वह दिन संक्रान्ति का कहलाता है। भारतीय ज्योतिष में सूर्य जिस दिन मेष राशि में प्रवेश करता है उसे स्थिर (अर्थात् १३ अप्रैल को) माना गया है। पाश्चात्य ज्योतिष में सूर्य का मेष राशि में प्रवेश का दिन स्थिर नहीं है, क्योंकि उनके मतानुसार यह प्रारम्भिक बिन्दु चलता है और इस बिन्दु की गति करीब ५० सेकण्ड प्रतिवर्ष की है। भारतीय ज्योतिष में ग्रहों का निरयण ग्रह स्पष्ट रहता है। मेष राशि का आरम्भ जहां से होता है वहीं से अश्विनी नक्षत्र (यह स्थिर है) की गणना भी करी जाती है (नक्षत्रों के बारे में हम नवें अध्याय में बताएंगे)।

राशियों के अंश

नीचे हमने बताया है कि कौन-सी राशि किस अंश से शुरू होती हैं और किस अंश पर समाप्त होती है।

मेष	०° से ३०°	तुला	१८०° से २१०°
वृषभ	३०° से ६०°	वृश्चिक	२१०° से २३०°

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथुन	६०° से ९०°	धनु	२४०° से २७०°
कर्क	९०° से १२०°	मकर	२७०° से ३००°
सिंह	१२०° से १५०°	कुम्भ	३००° से ३३०°
कन्या	१५०° से १८०°	मीन	३३०° से ३६०°

पाठकों से निवेदन है कि राशियों के नामों को भली भांति याद रखें। यदि हम कहें कि सूर्य ३६ अंश है तो उससे यह समझिए कि सूर्य ने पहली राशि (मेष) के ३० अंश पूरे कर लिए और दूसरी राशि (वृषभ) में ६ अंश पर है। इसे ही हम १—६° इस प्रकार से लिखेंगे।

ग्रह

भारतीय ज्योतिष में नौ ग्रह हैं, जो इस प्रकार हैं :

१. सूर्य, २. चन्द्र, ३. मंगल, ४. बुध, ५. बृहस्पति, ६.शुक्र, ७. शनि, ८. राहु, ९. केतु।

प्राचीन समय में हर्शल (जिसका दूसरा नाम यूरेनस है), नेपच्यून तथा प्लूटो का प्रयोग नहीं किया जाता था। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उस समय तक इनका प्रकाश पृथ्वी तक नहीं आया था।

ऊपर जो ग्रह बताए गए हैं वही नव ग्रह कहलाते हैं। किसी भी धार्मिक पूजन इत्यादि में गणपति की पूजा के बाद, नव ग्रहों की पूजा करी जाती है, जिससे कार्य में आने वाले विघ्न और बाधाएं नष्ट हो जाएं।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि दृष्टिगत होते हैं, परन्तु राहु और केतु अदृश्यगत बिन्दु हैं जिनका पृथ्वीवासियों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

ग्रहों की गति

ग्रह निरन्तर चलते रहते हैं परन्तु उनकी गति हमेशा एक-सी नहीं रहती है। साधारण रूप से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में कर लेती है। इसीको हम दूसरे शब्दों में कि सूर्य (क्योंकि पृथ्वी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से देखने पर सूर्य चलता हुआ प्रतीत होता है) एक वर्ष में भचक्र का भ्रमण कर लेता है। नीचे प्रत्येक ग्रहों के सामने हमने उनकी भचक्र (राशि-मण्डल या क्रान्तिवृत्त) की परिक्रमा पूरी करने के वर्ष लिखे हैं :

सूर्य	१ वर्ष
चन्द्र	२७ दिन ६ घंटे (२८वें दिन)
मंगल	१ वर्ष ६ मास
वुध	१ वर्ष
वृहस्पति	१२ वर्ष
शुक्र	१ वर्ष
शनि	३० वर्ष
राहु	१८ वर्ष ६ मास (करीव १९ वर्ष)
केतु	१८ वर्ष ६ मास (करीव १९ वर्ष)

राहु और केतु हमेशा एक-दूसरे के आमने-सामने रहते हुए वक्र (उलटी) गति से चलते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—२

जन्म-कुण्डली

पहले अध्याय में हमने यह बताया है कि जन्म के समय ग्रहों की स्थिति जातक के कार्यों पर प्रभाव रखती है। जन्म के समय से ही बच्चे के मस्तिष्क और शरीर पर ग्रहों का तेज अपना प्रभाव उसी प्रकार से डालता है जैसे फोटो लेने पर कैमरे की रील पर दृश्य अंकित होता है। जन्म के समय जो ग्रहों की स्थिति होती है वह जब भी गोचर में जाते हुए ग्रहों के द्वारा अथवा दशा-अन्तर्दशा के कारण प्रभावित होते हैं तो जातक में मानसिक, आध्यात्मिक और शारीरिक प्रक्रिया शुरू हो जाती है। उसीके अनुरूप उसका चाल-चलन, व्यवहार इत्यादि निर्भर करता है। जन्म का समय कौन-सा लेना चाहिए, इसके बारे में मतभेद हैं—(क) जिस समय नाल काटी जाए, (ख) जिस समय बच्चे का सिर बाहर आए अथवा (ग) जिस समय बच्चा पहली बार रोए। इस मतभेद को दूर करने के लिए यह अच्छा होगा कि जिस समय बच्चे का पूर्ण जन्म हो जाए अर्थात् माता के शरीर से बाहर आ जाए, वह समय मानना चाहिए।

जन्म की तारीख, जन्म का स्थान और जन्म का समय इन तीनों के आधार पर जन्म-कुण्डली की गणना करनी चाहिए।

जन्म का स्थान जानना भी आवश्यक है, क्योंकि सूर्योदय अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग समय में होगा तथा जन्म के अक्षांश और देशान्तर पर विभिन्न राशियों का उदय काल निर्भर करता है। जन्म-कुण्डली की गणना करने में हमें जन्म-लग्न अर्थात् पृथ्वी का वह भाग जो जन्म के समय पूर्व में उदय हो तथा ग्रह स्पष्ट करने पड़ते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-कुण्डली की गणना

पहले हम जन्म-लग्न निकालना बतलाएंगे। लग्न स्पष्ट करने के लिए हमें निम्नलिखित की आवश्यकता होती है :

१. जन्म का अक्षांश और देशान्तर

२. जन्म की तारीख

३. जन्म का समय (भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

इसके अतिरिक्त हमें गणना करने के लिए (क) जिस वर्ष में जन्म हो उस वर्ष का पंचांग (लहरी का पंचांग सर्वश्रेष्ठ है), (ख) भारतीय लग्न सारिणी (गोपेश कुमार ओझा)—इन दोनों पुस्तकों की आवश्यकता है। हम अब उदाहरण देकर जन्म-कुण्डली की गणना करना बतलाते हैं।

उदाहरण के लिए मान लीजिए, एक बच्चे का, जिसका जन्म ६ दिसम्बर, १६७२ को दिल्ली में १० बजकर १५ मिनट पर रात्रि में हुआ, लग्न स्पष्ट करना है।

(१) सबसे पहले एटलस में दिल्ली का अक्षांश और देशान्तर देखिए, जो इस प्रकार है :

अक्षांश २८°—४०′ उत्तर

देशान्तर ७७°—१३′ पूर्व

अब दिल्ली का स्थानीय जन्म-काल बनाइए :

८२°—३०′ भारतीय स्टैण्डर्ड काल का देशान्तर

७७ — १३ दिल्ली का देशान्तर (घटाइए)

५ — १७

×४ इसको ४ मिनट से गुणा कीजिए

२१ मिनट ८ सैकण्ड

घण्टा मिनट सैकण्ड

१०— १५—० (रात्रि)जन्म का समय (स्टैण्डर्ड टाइम)

—०— २१—८ घटाइए

६—५३—५२ (रात्रि)जन्म का 'स्थानीय मध्यम काल'

(२) अब लहरी के १६७२ के पंचांग में देखिए कि ६ दिसम्बर, १६७२ को विषुव काल क्या था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

	घ०	मि०	सैं०
विषुव काल (८२°—३०′ देशान्तर का)	१७	०	३३
दिल्ली के लिए ३″ जोड़िए	+०	०	३
दिल्ली का विषुव काल	१७	०	३६

[जिस स्थान का विषुव काल बनाना है उसके देशान्तर को ८२°— ३०′ से घटाइए। जितने अंश आएं उसके दो-तिहाई सैकंड १२ बजे मध्याह्न के विषुव काल में जोड़िए। यदि जन्म का देशान्तर ८२°—३०′ से अधिक है, तो उसके दो तिहाई को मध्याह्न के विषुव काल में से घटाइए।]

(३) जन्म का स्थानीय मध्यम काल (अर्थात् लोकल मीन टाइम) ९ बजकर ५३ मिनट ५२ सैकण्ड है अर्थात् दोपहर (१२ बजे) के ९ घण्टा ५३ मिनट ५२ सैकण्ड के बाद जन्म हुआ।

	घ०	मि०	सैं०
अब दिल्ली के विषुव काल	१७	०	३६
(जोड़िए) मध्याह्न के बाद का समय	+९	५३	५२
	+०	१	३९
	२६	५६	०७
	—२४	०	०
जन्मकालीन विषुव काल	२	५६	०७

[विषुव काल संस्कार के लिए मध्याह्न के जितने घंटे बाद का जन्म है उसमें १० सैकण्ड प्रति घण्टा और जोड़ने हैं।]

यदि विषुव काल २४ घण्टे से अधिक है तो इसमें से २४ घण्टे घटाइए।

(४) अब जन्मकालीन विषुव काल २ घण्टा ५६ मिनट ७ सैकण्ड पर बचा लग्न आया यह निकालिए।

जन्म के समय अयनांश २३°—२८′—५९″ है।

'भारतीय लग्न-सारिणी' के अन्तर्गत सारिणी (ग) देखिए।

२८°—४०′ अक्षांश पर

२ घण्टा ५४ मिनट ७ सैकण्ड पर २६°—३१° है

और २ घण्टा ५८ मिनट ७ सैकण्ड पर 'कर्क' २७°—२२° है

इसलिए अनुपात से २ घण्टा ५६ मिनट ७ सैकण्ड पर कर्क के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६°—५६'—३०" आए।

क्योंकि यह गणना २३ अयनांश है इसलिए दिसम्बर १९७२ के अयनांश का अन्तर घटाइए निरयण लग्न स्पष्ट कर्क के

	२६°—५६'—३०"
	—०°—२८'—५९"
	२६°—२७'—३१"

जन्म-लग्न

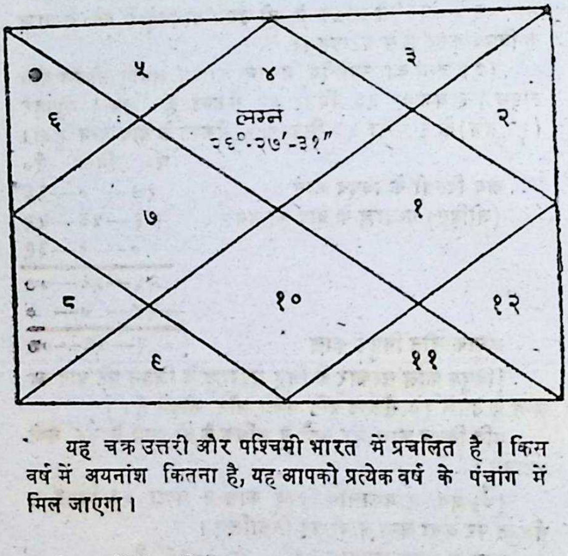

यह चक्र उत्तरी और पश्चिमी भारत में प्रचलित है। किस वर्ष में अयनांश कितना है, यह आपको प्रत्येक वर्ष के पंचांग में मिल जाएगा।

दूसरे भावों में राशियां

लग्न स्पष्ट करने के बाद (भारतीय ज्योतिष में) क्रमशः लग्न से दूसरी राशि दूसरे भाव में, लग्न से तीसरी राशि तीसरे भाव में, लग्न से चौथी राशि चौथे भाव में और इसी प्रकार सब भावों में राशियां लिखी जाती हैं। परन्तु भारतीय ज्योतिष में इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिन्दु को स्थिर मानकर गणना एक ही स्थान से की जाती है। बिन्दु अपने आदि स्थान से अब तक जितनी दूर हटा है, इसी को अयनांश कहते हैं।

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है परन्तु फिरकी की तरह इसकी धुरी के अन्तिम बिन्दु एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते हैं। यह बिन्दु एक वर्ष में करीब ५० सैकण्ड का कोण बनातेहैं और पूरा एक चक्र करीब-करीब २५,८०० वर्षों में बनाते हैं। पाश्चात्य ज्योतिष में धुरी के बिन्दु को अस्थिर मानते हैं।

प्रत्येक स्थान में मेष, वृषभ, मिथुन इत्यादि लिखने के बदले हम उनके अंक लिख देते हैं, जैसे मेष के बदले १, बृषभ के बदले २, मिथुन के बदले ३ और इसी प्रकार से अन्य राशियों की संख्याएं।

राशि और भाव

उदाहरण में दिए गए चक्र में कर्क राशि पहले भाव में है। पहले भाव को ही लग्न कहते हैं। दूसरे भाव में सिंह, तीसरे में कन्या, चौथे में तुला, पांचवें में वृश्चिक, छठे में धनु, सातवें में मकर,आठवें मे कुंभ, नवें में मीन, दसवें में मेष, ग्यारहवें में वृषभ, बारहवें में मिथुन राशि है। जन्म-लग्न को हमेशा पहले भाव में लिखा जाता है और इसके बाद जो राशियों का नैसर्गिक क्रम है उसे दूसरे भाव, तीसरे भाव इत्यादि में क्रम से ही लिखा जाएगा। पाठकों से निवेदन है कि 'भाव' शब्द को भली भांति समझ लें क्योंकि इसका प्रयोग हम बार-बार करेंगे। आगे के अध्यायों में हम यह बताएंगे कि (१) किस भाव से किन-किन बातों का विचार करना चाहिए और (२) भावों में बैठे हुए ग्रह क्या फल देते हैं।

ग्रह स्पष्ट

लग्न स्पष्ट के बाद हम अब ग्रहों की गणना (कि कौन से ग्रह किस राशि में कितने अंश पर हैं) किस प्रकार से करते हैं, यह बतलाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जन्म का दिन हमने ६ दिसम्बर, १९७२ लिया था। लहरी के पंचांग को देखिए। उसमें ६ दिसम्बर को सुबह के ५ घण्टा ३० मिनट पर ग्रहों की स्थिति दी गई है। उसमें देखिए कि प्रत्येक ग्रह ६ दिसम्बर से ७ दिसम्बर तक कितने अंश, कला और विकला चलता है। यह आप ७ दिसम्बर की ग्रह-स्थिति में से ६ दिसम्बर की ग्रह-स्थिति घटाकर निकाल सकते हैं। नीचे हम पूर्ण प्रक्रिया बताते हैं :

सूर्य

	राशि	अंश	कला	विकला
७ दिसम्बर को ग्रह-स्थिति	७	२१	३०	१२
६ दिसम्बर को ग्रह-स्थिति	७	२०	२९	१६
घटाने के बाद	०	१	०	५६

अर्थात् सूर्य २४ घण्टे में १°—०′—५६″ चला।

चन्द्रमा

७ दिसम्बर को	८— ३°—५९′— ०″
६ दिसम्बर को	—७—२२°— ६′—४४″
२४ घंटे में	०—११°—५२′—१६″

अर्थात् चन्द्रमा ११°—५२′—१६″ चलता है।

इसी प्रकार और ग्रहों को देखिए कि २४ घण्टे में कितना चलते हैं।

इसे इस प्रकार लिखिए :

६ दिसम्बर, १९७२

ग्रह	ग्रह-स्थिति (५-३० प्रात.)	२४ घण्टे में चले
सूर्य	७—२०°—२४′—१६″	१°—०′—५६″
चन्द्र	७—२२° - ६′—४४	११—५२′—१६″
मंगल	६—१९°—५२′	०°—४०′— ०″
बुध	७— २°—४६′	०— ८′— ०
बृहस्पति	८—१८ —२६′	०—१३′— ०
शुक्र	६—२०°—३४	१°—१४— ०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह	ग्रह-स्थिति (५.३० प्रातः)	२४ घण्टे में चले
शनि	१—२३°—५२′ वक्री	०°—५′—०
राहु	८—२३°—४१′	०°—२′—०
केतु	२—२३°—४१	०°—२′—०
हर्शल	५—२८°—२१′	०°—३′—०
नेपच्यून	७—११°—५०	०°—२′—०

राहु और केतु सर्वदा एक-दूसरे के आमने-सामने (पूरे १८०° या ६ राशियां दूर) रहते हैं। इसलिए केतु के सामने इसने (राहु के स्पष्ट में, ६ राशियां जोड़कर) २—२३°—४१ लिखा।

(२) अब क्योंकि जन्म का समय १० बजकर १५ मिनट रात्रि है तथा पंचांग में ५-३० प्रातः का, इसलिए हमें १६ घण्टा ४५ मिनट में प्रत्येक ग्रह कितना चलता है, यह देखना होगा। ये १६ घण्टे ४५ मिनट हमने कहां से लिए ? यह (क) जन्म के समय और (ख) जिस समय का ग्रह स्पष्ट पंचांग में दे रखा है उनका अन्तर है अर्थात् १० बजकर १५ मिनट रात्रि और ५ बजकर १५ मिनट प्रातः में परस्पर १६ घण्टा ४५ मिनट का अन्तर है।

हमारे पास २४ घंटे में प्रत्येक ग्रह कितना चलता है, यह है। इकाई से हमने सब ग्रहों की १६ घण्टा ४५ मिनट में गति निकाली। इसे इस प्रकार लिखिए :

	१६ घण्टा ४५ मिनट की गति
सूर्य	०°—४२′—३१″
चन्द्र	८°—१७′—०६″
मंगल	०°—२७′—५४″
बुध	०°— ५′—३४″
बृहस्पति	०°— ६′—०४″
शुक्र	०°—५१′—३८″
शनि	०°— ३′—२४″
राहु	०°— १′—२३″
केतु	०°— १′—२३″
हर्शल	२°— २′—०५″
नेपच्यून	०°— १′—२३″

(३) इस १६ घंटे ४५ मिनट में प्रत्येक ग्रह की जो गति आई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे सवेरे ५-२० की गति में जोड़िए। यहां यह ध्यान रखिए कि राहु और केतु सर्वथा उल्टा चलते हैं तथा जो ग्रह वक्री हैं (जैसे शनि) उनमें १६ घण्टे ४५ मिनट की गति को जोड़ने के वदले घटाइए। अब हमारे पास ६ दिसम्बर १९७२ को रात्रि १० बजकर १५ मिनट पर ग्रहों की स्थिति आ गई।

(४) सारिणी के रूप में ग्रह स्पष्ट इस प्रकार लिखिए :

(निरयण) ग्रह स्पष्ट

ग्रह	(निरयण) ग्रह स्पष्ट राशि—अंश—कला	
सूर्य	७ — २१ — १२	
चन्द्र	८ — ० — २४	
मंगल	६ — २० — २०	
बुध	७ — ०२ — ५२	
बृहस्पति	८ — १८ — ३६	
शुक्र	६ — २१ — ३१	
शनि	१ — २३ — ४९	वक्री
राहु	८ — २२ — ४०	
केतु	२ — २२ — ४०	
हर्शल	५ — २८° — २३	
नेपच्यून	७ — ११ — ५१	

(५) अब इन ग्रहों की जन्म-लग्न का जो चक्र है उसमें लिखिए :

यह इस प्रकार हुआ :

निरयण ग्रह स्पष्ट में सूर्य ने ७ राशियां २१ अंश और १२ कलाएं पूर्ण कीं इसलिए हमने उसे आठवीं राशि जो वृश्चिक है वहां लिखा; चन्द्रमा ने ८ राशि ० अंश और २४ कलाएं पूर्ण कर ली थीं (जन्म के समय तक) इसलिए हमने चन्द्रमा को नवीं (अर्थात् धनु में) राशि में लिखा। इसी प्रकार से मंगल (मं), बुध (बु), बृहस्पति (बृ), शुक्र (शु), शनि (श), राहु (रा), केतु (के), हर्शल (ह) और नेपच्यून (ने) को जन्म-चक्र में लिखा है।

आगे जो चक्र का प्रकार दिया गया है, वह उत्तरी और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

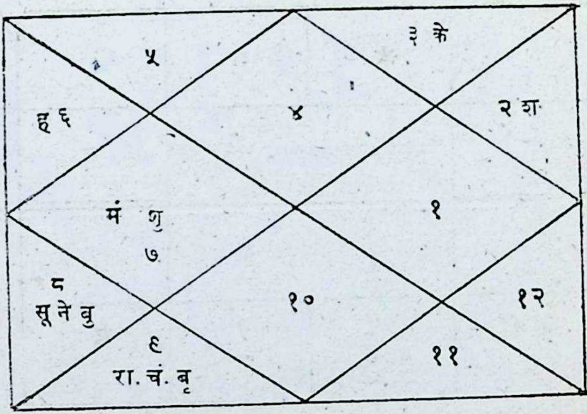

पश्चिमी भारत में प्रचलित है। सबसे ऊपर जो ४ का अंक है वह यह बताता है कि जन्म के समय चौथी राशि अर्थात् कर्क राशि उदित थी।

दक्षिणी भारत में जन्म-चक्र दूसरे प्रकार से लिखा जाता है। जहां हम 'तारा' का चिह्न दे रहे हैं वहां से मेष राशि और उसके बाद घड़ी की सुइयां जिस तरह चलती हैं, उसी क्रम से वृषभ. मिथुन इत्यादि देखते हैं। जिस राशि में जन्म-लग्न पड़ता है, वहां लग्न (ल)लिखा जाता है। जो जन्म-चक्र हमने ऊपर दिया है उसी का दूसरा प्रकार, जैसा दक्षिणी भारत में प्रचलित है, आगे दे रहे हैं।

पूर्वी भारत में जन्म-चक्र का सर्वथा भिन्न रूप है। यहां भी जहां तारा का चिह्न दिया गया है वहां से मेष इत्यादि की क्रम से गणना की जाती है। परन्तु यहां गणना करने का क्रम घड़ी की सुई जिस प्रकार चलती है, उसके विपरीत दिशा में, किया जाता है। जन्म-लग्न के स्थान पर लग्न (ल) लिखा गया है। (दे०पृ०२७)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-चक्र (दक्षिणी भारत में प्रचलित)

	*	श	के
			ल
चं वृ रा	सू बु ने	म शु	ह

विभिन्न प्रकार के जन्म-चक्र बताने के बाद अब हम पुनः विशेष बातों को देखते हैं। जन्म के समय कर्क लग्न उदय था; मंगल और शुक्र तुला राशि में चौथे भाव में; सूर्य, बुध और नेपच्यून वृश्चिक राशि में पांचवें भाव में; चन्द्रमा, बृहस्पति और राहु धनु राशि में छठे भाव में; शनि, वृषभ राशि में ग्यारहवें भाव में; केतु मिथुन राशि में बारहवें भाव में और हर्शल कन्या राशि में तीसरे भाव में थे।

इस अध्याय को समाप्त करने से पहले हम पाठकों का ध्यान निम्नलिखित बातों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं :

(क) जन्म का समय ठीक होना चाहिए। यदि जन्म का समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में है तो उसे स्थानीय मध्यम काल में बदलिए। जन्म-लग्न की गणना स्थानीय मध्यम काल के आधार पर होती है।

(ख) ग्रह स्पष्ट भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम के आधार पर निकाले जाते हैं। पुराने ज्योतिषी जन्म-कुण्डली में 'सूर्योदया दिष्टटम्'···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-चक्र (पूर्वी भारत में प्रचलित)

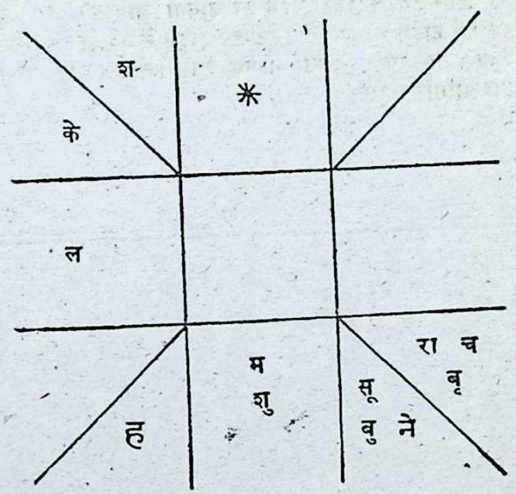

घड़ी और पल लिखते हैं। इसका मतलब है कि सूर्योदय के (इतने) घड़ी (इतने) पल के बाद जन्म हुआ। घड़ी और पल को घण्टा-मिनट में बदलकर और जिस स्थान का जन्म है वहां के सूर्योदय में जोड़ने से जन्म का समय घंटा-मिनट में आ जाएगा (६० घड़ी में २४ घंटे या १ घड़ी में २४ मिनट होते हैं)।

(ग) जन्म का विषुव काल निकालना हमने उदाहरण देकर समझा दिया है। बार-बार अभ्यास करने से पाठक इसमें प्रवीण हो जाएंगे। हिन्दी में जन्म-लग्न निकालने के लिए भारतीय लग्न-सारिणी सर्वश्रेष्ठ है। हिन्दी भाषा में यही एक श्रेष्ठ पुस्तक है, क्योंकि हिन्दी के विभिन्न पंचांगों के आधार पर जन्म-लग्न स्पष्ट ठीक प्रकार से नहीं निकलता है।

(घ) जो लग्न स्पष्ट, ग्रह स्पष्ट इत्यादि हमने यहां निकालने बताए हैं उसी प्रकार से किसी भी देश में जन्म हुआ हो, वहां के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए निकाले जा सकते हैं। उसके लिए भी उस स्थान के स्थानीय मध्यम काल तथा स्टैण्डर्ड टाइम को जानना आवश्यक है। वहां के स्टैण्डर्ड टाइम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में बदलकर ग्रह स्पष्ट कीजिए। लग्न स्पष्ट स्थानीय मध्यम काल (लोकल मीन टाइम) पर ही आधारित होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—३

राशि

ज्योतिप के ज्ञान के लिए राशियों के तत्त्वों का समझना आवश्यक है। बारह राशियां होती हैं। इन बारह राशियों का स्वामित्व निम्नलिखित है:

राशि	स्वामी	राशि	स्वामी
मेष	मंगल	तुला	शुक्र
वृषभ	शुक्र	वृश्चिक	मंगल
मिथुन	बुध	धनु	वृहस्पति
कर्क	चन्द्र	मकर	शनि
सिंह	सूर्य	कुंभ	शनि
कन्या	बुध	मीन	बृहस्पति

राहु और केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं हैं। यह हम पहले ही बता चुके हैं कि हर्शल (इसका दूसरा नाम ही यूरेनस है), नेपच्यून या प्लूटो को भारतीय ज्योतिष में कोई स्थान नहीं दिया गया। इसका कारण यह है कि प्रत्येक ग्रह से लाइट (रोशनी) पृथ्वी तक आने में लाखों वर्ष भी लग जाते हैं और हर्शल, नेपच्यून इत्यादि का पता पिछली शताब्दी से ही लगा है। यह उस समय हुआ जब इन ग्रहों की रोशनी पृथ्वी पर आने लगी। इसी प्रकार के कुछ और ग्रह भी आगे आने वाले समय में पृथ्वी तक अपनी रोशनी दे सकेंगे। १६८२ में समस्त ग्रह पृथ्वी के एक भाग की तरफ होंगे। उस समय तथा १६८७-१६६१ के मध्य में जब वृहस्पति एक राशि में और उसके सामने शनि, यूरेनस, नेपच्यून इत्यादि होंगे, कुछ और ग्रहों का प्रकाश पृथ्वी तक आ सकेगा। हम छठे अध्याय में ही हर्शल इत्यादि का विश्लेषण भी करेंगे।

जब किसी कार्य का निर्णय करना हो—जैसे जीवन के किस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक विशेष भाव का और एक विशेष ग्रह का (जिनका उस विभाग से सम्बन्ध है) अध्ययन करते हैं। हम देखेंगे कि वह भाव और ग्रह बलवान हैं या कमज़ोर, अच्छा फल दिखाएंगे या अशुभ फल देंगे। किस भाव से किन-किन बातों का विचार किया जाए, किन अन्य भावों का उससे सम्बन्ध है, कौन-कौन से ग्रह किन-किन वस्तुओं के 'कारक' हैं—ये सब हम आगे के अध्याय में बताएंगे। यहां हम पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे राशियों के नाम और उनके स्वामी को ध्यान में रखें, क्योंकि फलादेश करने में भाव के साथ-साथ भाव के स्वामी को भी देखा जाता है। राशि का विचार (अर्थात् जिस भाव में जो राशि आई है) और राशि के स्वामी का विचार अलग-अलग नहीं किया जा सकता। राशि का स्वामी यदि बलवान हो तो राशि (अर्थात् जिस भाव में वह है) भी बलवान होगी। दूसरे अध्याय में जो कुण्डली उदाहरणस्वरूप दी गई है, उसमें कर्क राशि लग्न (प्रथम भाव) में है और कर्क का स्वामी चन्द्रमा है, सिंह राशि दूसरे भाव में है और उसका स्वामी सूर्य है, तीसरे भाव में कन्या राशि है और उसका स्वामी बुध है, तुला राशि चौथे भाव में आई और उसका स्वामी बुध है, इसी प्रकार से आगे के भाव समझना।

इसलिए यह याद रखना आवश्यक है कि किस राशि का कौन-सा ग्रह स्वामी है। मान लीजिए, मेष राशि (जैसा कि उदाहरण कुण्डली में है) दसवें भाव में आई, इसका स्वामी मंगल है। मंगल दसवें भाव का स्वामी कहलाएगा। ज्योतिष में हम संक्षेप में कह सकते हैं कि मंगल दसवें भाव का स्वामी है। इसका मतलब है कि दसवें भाव में मेष राशि पड़ी और उसका स्वामी मंगल है, इसलिए मंगल दसवें भाव का स्वामी हुआ। पाठक इस बात को अच्छी प्रकार समझें, जिससे उन्हें आगे कठिनाई प्रतीत न हो।

उदाहरण की कुण्डली में मंगल तुला में है तो हम संक्षेप में कह देते हैं कि मंगल चौथे भाव में है और इसी को दूसरे शब्दों में कि दशमेश चौथे भाव में बैठा है। कर्क लग्न में (क) मंगल तुला राशि में है, (ख) मंगल चौथे भाव में है, (ग) दशमेश चौथे भाव में है, (घ) पंचममेश (पंचम भाव का स्वामी) चौथे में है—इन सबका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक ही मतलब हुआ कि मंगल चौथे भाव में है। इस बात को भली भांति समझा जाए।

आगे जो हमने बताया वह ज्योतिष में बहुधा प्रयोग किया जाता है। अब हम राशियों का स्वरूप, गुण इत्यादि बताते हैं।

चर, स्थिर और द्विस्वभाव बारह राशियों को तीन भागों—चर, स्थिर और द्विस्वभाव में बांटा गया है।

(क) मेष, कर्क, तुला और मकर—चर राशियां हैं।

(ख) वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुंभ—स्थिर राशियां हैं।

(ग) मिथुन, कन्या, धनु और मीन—द्विस्वभाव राशियां हैं अर्थात् इनमें चर और स्थिर दोनों ही प्रकार के गुण हैं।

चर राशियां संचारशील होती हैं। इनमें जन्म लेने वाले पैदल चलने में रुचि, परिवर्तन को पसन्द करते हैं।

स्थिर राशियां अपेक्षाकृत कम संचारशील होती हैं। इनमें जन्म लेनेवाले एक ही जगह में रहना, कम चलना, परिवर्तन न चाहने वाले होते हैं।

द्विस्वभाव राशियों में पहले १५° तक स्थिर राशियों का गुण और आखिर के १५° तक चर राशियों का गुण होता है। इनमें जन्म लेने वाले व्यक्तियों को बहुधा एक से अधिक कार्य एक ही समय में करने की इच्छा रहती है।

विषम और सम राशियां

(क) मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ—ये विषम राशियां हैं। पुरुष 1-3-5-7-9-11

(ख) वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन—ये सम राशियां हैं। स्त्री 2-4-6-8-10-12

पुरुष और स्त्री राशियां

विषम राशियां पुरुष संज्ञक हैं और सम राशियां स्त्री संज्ञक हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राशियां और शरीर के भाग

मेष से मीन तक ये बारह राशियां निम्नलिखित रूप में शरीर के भागों की द्योतक हैं—

मेष—सिर (और चेहरा)
वृषभ—गर्दन, गला
मिथुन—बांहें और कन्धे
कर्क—हृदय (छाती)
सिंह—पेट (ऊपरी भाग)
कन्या—नाभि
तुला—बस्ति
वृश्चिक—जननेन्द्रिय
धनु—जांघ
मकर—घुटने
कुंभ—पिंडलियां
मीन—पैर

आकाश में अपनी गति से चलने का सूर्य का जो कान्तिवृत (राशि मण्डल) है उसमें ताराओं की निकटता से जिस राशि की जैसी आकृति आई उसी प्रकार उनके मेष, वृष, मिथुन वगैरह नाम रखे गए। विराट पुरुष (भगवान) के जिस अंग में जो राशि पड़ती है वह उस भाग की द्योतक है।

विभाग करने का कारण यह है कि यदि कोई राशि पीड़ित है, किसी क्रूर ग्रह के वहां बैठने के कारण अथवा दृष्टि के कारण या उस राशि का स्वामी कमजोर हो (क्रूर ग्रह से दृष्ट हो किंवा उनके साथ हो), तो जातक के शरीर का वह अंग (जो उस राशि से ज्ञात होता है) किसी चोट, बीमारी या पीड़ा की वजह से कष्ट देता है। कौन से ग्रह क्रूर हैं या शुभ हैं या किस प्रकार दूसरे ग्रहों और राशियों को देखते हैं यह हम विस्तार से बाद के अध्याय में बताएंगे।

राशियां और उनके विभाग

हम पहले बता चुके हैं कि प्रत्येक राशि में ३० अंश होते हैं। ज्योतिष के विचारार्थ इन ३०° अंशों को ९ भागों में बांटने से प्रत्येक भाग में ३ अंश और २० कला हुईं, जो इस प्रकार हैं—

(१) ०° से ३°—२०′, (२) ३°—२०′ से ६—०४′
(३) ६°—४०′ से १०°, (४) १०° से १३° — २०′
(५) १३°—२०′ से १६°—४०′, (६) १६°—४०′ से २०°,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७) २०° से २३°—२०′, (८) २३°—२०′ से २६°—४०′, (९) २६°—४०′ से ३०°।

इसी प्रकार से बारह राशियों के नौ-नौ विभाग करने पर १०८ विभाग होंगे(१२ × ९ = १०८)। इन १०८ विभागों को भी राशियों के ही नामों से निम्नलिखित रूप में बताया गया है :

मेष : मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु।

वृषभ : मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या।

मिथुन : तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ और मिथुन।

कर्क : कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

सिंह : मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु।

कन्या : मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या।

तुला : तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ और मिथुन।

वृश्चिक : कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

धनु : मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु।

मकर : मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या।

कुंभ : तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ और मिथुन।

मीन : कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

राशियों का विभाग निम्नलिखित गुटों में एक ही प्रकार से है :

(क) मेष, सिंह, धनु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ख) वृषभ, कन्या, मकर।
(ग) मिथुन, तुला, कुंभ।
(घ) कर्क, वृश्चिक, मीन।

इस प्रकार के विभाग से क्या लाभ हैं ? यदि एक ग्रह अपने ही विभाग में है तो वह बलवान होता है। उदाहरण के लिए, चन्द्रमा यदि मीन राशि में १° पर हो तो ०° से ३°—२०′ तक पहला विभाग 'कर्क' है। अब क्योंकि कर्क का स्वामी चन्द्रमा स्वयं ही हुआ इसलिए मीन के १° में चन्द्रमा बलवान समझा जाएगा।

दूसरा सिद्धान्त यह है कि यदि कोई ग्रह उसी विभाग में भी हो (जिस राशि में वह है), तो वह वर्गोत्तम हुआ। 'वर्गोत्तम' ग्रह उतना ही बलवान समझा जाता है जितना कि अपनी स्वयं की राशि में बैठा हुआ ग्रह। यह हम उदाहरण देकर समझाते हैं।

मान लीजिए, सूर्य मिथुन राशि के २८ अंश पर है। अब २६°—४०′ से ३०° तक किसी भी राशि में नवां विभाग हुआ। सारिणी में देखने पर मिथुन में नवां विभाग 'मिथुन' ही है। इसलिए २८° मिथुन में सूर्य न केवल मिथुन राशि अपितु मिथुन विभाग में भी हुआ। इसे ही हम वर्गोत्तम कहते हैं। इस २८° मिथुन में सूर्य ऐसा ही शुभ फल देगा, जैसा कि वह यदि सिंह में बैठा होता, तब देता। देखिए 'फल दीपिका'—अध्याय ९, श्लोक २० और 'होरा शास्त्र'—अध्याय १, श्लोक १४।

वराह मिहिर ने यह देखने के लिए कि ग्रह कब वर्गोत्तम होता है, यह कहा है :

"चर राशियों में पहला विभाग, स्थिर राशियों में बीच का विभाग (अर्थात् पांचवां) और द्विस्वभाव राशियों में अन्तिम (अर्थात् नवां) विभाग वर्गोत्तम होता है।"

राशियों के ये नौ विभाग करने पर जो विभाग होते हैं, उन्हें 'नवांश' कहते हैं।

नवांश कुण्डली

नवांश कुण्डली का ज्योतिष में बहुत महत्त्व है। जन्म-कुण्डली में यदि कोई ग्रह बलवान हो परन्तु नवांश कुण्डली में नीच राशि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में हों अथवा पीड़ित हो तो ग्रह अच्छा प्रभाव नहीं दिखाएगा। अब हम पहले नवांश कुण्डली किस प्रकार बनाते हैं, यह बताते हैं। अध्याय २ में उदाहरणस्वरूप जो कुण्डली बनाई गई है, उसमें स्पष्टक ग्रह इस प्रकार हैं—

ग्रह	राशि	स्पष्टक ग्रह अंश-कला-विकला	नवांश संख्या	नवांश
सूर्य	वृश्चिक	२१—१२—०	७	मकर
चन्द्रमा	धनु	०—२४—०	१	मेष
मंगल	तुला	२०—२०—०	७	मेष
बुध	वृश्चिक	२—५२—०	१	कर्क
वृहस्पति	धनु	१८—३६—०	६	कन्या
शुक्र	तुला	२१—३१—०	७	मेष
शनि	वृषभ	२३—४६—०	८	सिंह
राहु	धनु	२५—६—०	८	वृश्चिक
केतु	मिथुन	२५—६—०	८	वृषभ
लग्न	कर्क	२६—२८—०	८	कुंभ

नवांश कुण्डली

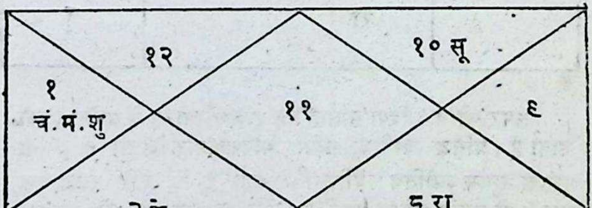

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य वृश्चिक राशि के २२ अंश में हुआ इसलिए नवांश में मकर-नवांश में आया जो कि ७वां नवांश है। इसी प्रकार चन्द्रमा पहले नवांश में जो धनु राशि में मेष होता है। इसी प्रकार नवांश का विचार किया गया है। लग्न के नवांश को जो कुम्भ है पहले भाव में रखने से नवांश कुण्डली इस प्रकार हुई। (देखें पृ० ३५ भी)

नवांश कुण्डली

	* शु. चं. मं.	के	
ल.			बु
सू			श
	रा		बृ

ऊपर जो चक्र दिया गया है वह दक्षिणी भारत में प्रयोग किया जाता है। प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित गोपेशकुमार ओझा ने अपनी पुस्तक 'सुगम ज्योतिष प्रवेशिका' में कहा है कि यदि राशि-चक्र वृक्ष है तो नवांश उसका 'फल' है। जैसे आम का वृक्ष तो बलवान हो परन्तु उसका फल खट्टा या स्वादहीन हो, जब कि किसी छोटे से वृक्ष का फल मधुर और तृप्त करने वाला हो सकता है।

दिवाबली और रात्रिबली राशियां

सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ और मीन ये सब दिवाबली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् दिन के समय वलवान होती हैं। मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, धनु और मकर रात्रिवली राशियां हैं। दिन में जन्म हो तो दिवा-वली राशियों में स्थित ग्रह अपेक्षाकृत वलवान होते हैं। रात्रि में जन्म हो तो रात्रिवली राशियों में स्थित ग्रह अधिक वलवान होते हैं (नवांश कुण्डली में तारे का चिह्न जिस स्थान पर है वह मेष राशि समझना)।

ग्रह की दिशाएं

मेष, सिंह और धनु पूर्व दिशा; वृषभ,कन्या और मकर दक्षिण दिशा; मिथुन, तुला और कुम्भ पश्चिम दिशा और कर्क, वृश्चिक और मीन उत्तर दिशा में अपना विशेष प्रभाव दिखाती हैं।

नीचे दिया गया चक्र देखिए।

यदि कोई राशि वलवान और शुभ ग्रह से सम्वन्धित हो तो

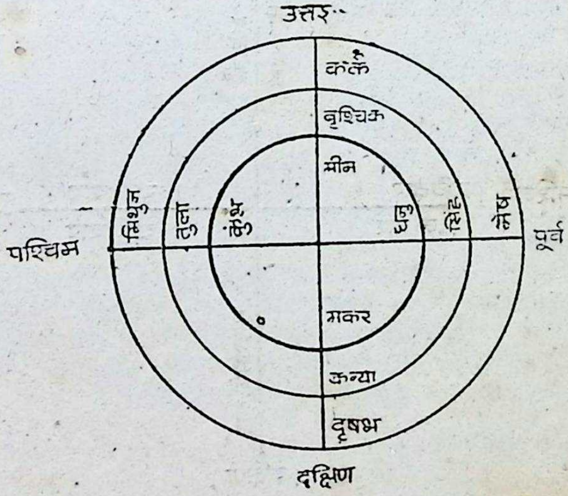

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस दिशा में लाभ होता है। यदि राशि कमजोर और पीड़ित हो तो उसकी दिशा में हानि हो।

यात्रा के लिए वह लग्न चुनना चाहिए जो यात्रा की दिशा का द्योतक है। जैसे पूर्व में जाना हो तो मेष, सिंह, धनु लग्न में यात्रा आरम्भ करनी चाहिए। यदि चन्द्रमा भी उन्हीं राशियों में हो जिस दिशा में यात्रा करनी है तो अत्यधिक शुभ है। इसे 'सम्मुख चन्द्र' कहते हैं। ऐसे समय में यात्रा करने से विघ्न और बाधाएं नहीं आती हैं और कार्य शीघ्र पूर्ण होता है।

संमुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतः प्राणनाशय वामे चंद्रे धनक्षयः॥

इसके अतिरिक्त यात्रा में दिशाशूल का विचार भी करना चाहिए। यह अति आवश्यक है।

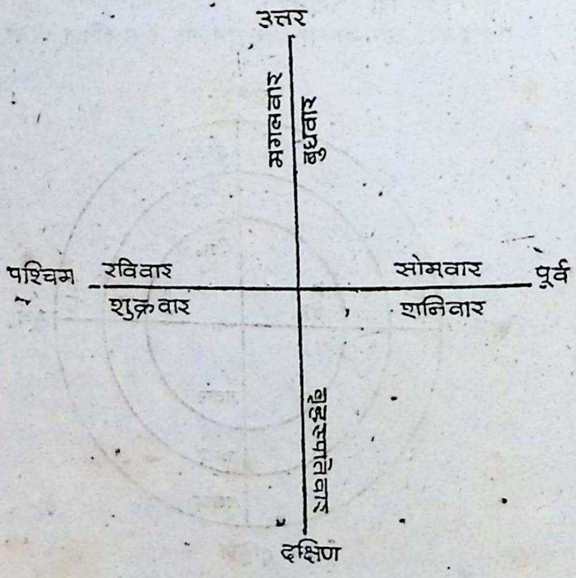

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् मंगल-बुध को उत्तर दिशा में यात्रा न करे, दक्षिण में बृहस्पतिवार को न जाए, पूर्व दिशा में सोम-शनि को न जाए, रवि-शुक्र में पश्चिम दिशा में न जाए।

राजाज्ञा में कोई निषेध नहीं है। उस समय किसी भी समय यात्रा की जा सकती है।

पृष्ठोदय और शीर्षोदय राशियां

मेष, वृषभ, कर्क, धनु और मकर ये पृष्ठोदय (अर्थात् पिछली ओर से उदय होने वाली) राशियां हैं। मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ शीर्षोदय (अर्थात् आगे से उदय होने वाली) राशियां हैं। मीन दोनों ओर से उदय होती है।

पृष्ठोदय राशियां क्रूर होती हैं तथा क्रूर कर्मों के लिए उपयुक्त हैं। शीर्षोदय राशियां शुभ हैं और शुभ कार्यों के लिए अधिक उपयुक्त होती हैं। दोनों तरफ से उदित होने वाली राशि (मीन) सब कार्यों के लिए उपयुक्त है और मिश्रित फल दिखाती है। जब इन राशियों में कोई भी ग्रह नहीं होता तब ऊपर बताया गया प्रभाव होता है। परन्तु यदि पृष्ठोदय राशि में कोई क्रूर ग्रह भी बैठा हो तो उसकी क्रूरता और बढ़ जाती है। यदि वहां शुभ ग्रह हो तो उसका शुभ प्रभाव कम हो जाता है। इसके विपरीत शीर्षोदय राशियों में शुभ ग्रह के बैठने से उसका शुभ प्रभाव और भी अधिक होगा और क्रूर ग्रह का वहां पर (शीर्षोदय राशि में) दुष्प्रभाव कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त यदि ग्रह—

(क) शीर्षोदय राशि में हो तो दशा के आरम्भ से ही अपना प्रभाव दिखा देता है। ३, ५, ६, ७, ८, ११ /

(ख) पृष्ठोदय राशि में हो तो दशा के अन्त में (अर्थात् देर से) अपना प्रभाव दिखाता है। १, २, ४, ९, १० /

(ग) दोनों ओर से उदित होने वाली राशि में दशा के मध्य में अपना प्रभाव (अच्छा या खराब) दिखाता है। (देखिए होरा शास्त्र में रुद्र की टीका)। १२ /

(ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा की गणना हमने नवें अध्याय में बताई है।)

मेष, वृष, मिथुन कर्कट, धनु, मकर निशाचारी राशि
सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ दिवाचारी राशि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—४

भाव

पिछले अध्यायों में हमने भाव शब्द का प्रयोग किया है। हमने बताया कि बारह राशियों के बारह ही भाव होते हैं। अब सूर्य एक राशि में एक मास तक उन सब व्यक्तियों के लिए होता है, जिनका एक महीने में जन्म हो, जैसे १३ अप्रैल से १३ मई के बीच में सूर्य मेष राशि में रहेगा और मेष राशि में इसका जो विशेष प्रभावहोता है, वह होगा। परन्तु जिन व्यक्तियों का जन्म दोपहर में हुआ है उनका सूर्य दसवें भाव में, जिनका जन्म शाम को हुआ है उनका सूर्य सातवें भाव में, जो जन्म मध्य रात्रि में हुए हैं वहां सूर्य चौथे भाव में, तथा जिनका जन्म सूर्योदय के समय है उनका सूर्य पहले भाव में होगा।

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती रहती है। सूर्य समेत समस्त ग्रह पूरब की ओर जन्म-स्थान से विभिन प्रकार के कोण बनाते हैं और इस कोण से कौन-सा ग्रह किस भाव में है यह पता चलता है।

ज्योतिषशास्त्र में भाव क्यों बनाया गया है? क्योंकि प्रत्येक भाव शरीर के किसी अंग का, किसी सम्बन्ध का (पिता, माता, भाई इत्यादि) और जीवन के किसी भाव का द्योतक है। किसी भी विशेष बात का निर्णय करने के लिए हमें उस भाव के स्वामी या जो ग्रह उस भाव में बैठे हों या उसे देखते हों, इन सबका विचार करना पड़ता है। ग्रह किस प्रकार दूसरे भावों पर दृष्टि डालता है, हम बाद में बताएंगे। परन्तु अभी हम यह बताएंगे कि भाव के स्वामी से हमारा क्या तात्पर्य है। यह हम पहले बता चुके हैं कि जब अलग-अलग राशियों का पूर्व में उदय होता है उस समय एक के बाद दूसरी राशि से एक के बाद दूसरे भावों का ज्ञान होता है। जिस समय मेष राशि उदित हो, तो मेष से चौथे भाव में कर्क राशि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चौथे भाव में होगी। अब कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है इसलिए हम चन्द्रमा को चौथे भाव का स्वामी कहते हैं। मान लीजिए, बृषभ लग्न से उस समय—वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह—चौथे भाव या चौथे भाव में सिंह राशि हुई और सूर्य क्योंकि सिंह राशि का स्वामी है इसलिए वह चौथे भाव का भी स्वामी हुआ।

सूर्य और चन्द्रमा एक-एक भाव के ही स्वामी होंगे (क्योंकि इन दोनों की एक-एक राशि ही है), परन्तु मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि इनमें से प्रत्येक दो-दो भावों के स्वामी हैं, क्योंकि इन पांचों ग्रहों की दो-दो राशियां हैं। राहु और केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं होते, इसलिए वे किसी भी भाव के स्वामी नहीं होंगे।

भावों के नाम

(क) पहला, चौथा, सातवां और दसवां भाव केन्द्र कहलाता है। इनमें बैठे हुए ग्रह बलवान होते हैं। १, ४, ७, १०,

(ख) दूसरा, पांचवां, आठवां और ग्यारहवां भाव पणफर कहलाता है। आठवें स्थान के अतिरिक्त यहां बैठे हुए ग्रह भी काफी बलवान होते हैं, परन्तु केन्द्र में बैठे हुए ग्रह के समान नहीं।

(ग) तीसरा, छठा, नवां और बारहवां भाव आपोक्लिम कहलाता है। नवम भाव के अलावा इन भावों में हुए कमज़ोर समझे जाते हैं, परन्तु छठे भाव में क्रूर ग्रह अच्छे समझे जाते हैं। कौन से ग्रह क्रूर हैं और कौन से ग्रह शुभ, यह अगले अध्याय में बताया जाएगा।

(घ) पांचवें और नवें भावों को त्रिकोण कहते हैं। त्रिकोण के स्वामी और त्रिकोण में बैठे हुए ग्रह शुभ और बलवान होते हैं।

(ङ) तीसरा, छठा, दसवां और ग्यारहवां भाव उपचय कहलाता है। 'उपचय' का मतलब है बढ़ाना।

(च) छठे, आठवें और बारहवें भावों को त्रिक कहते हैं। जो ग्रह इनके स्वामी हों या जो ग्रह इनके स्वामी के साथ बैठें या जो ग्रह इनमें बैठें, वे अशुभ होते हैं।

'त्रिक' का मतलब है तीन खराब।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुनिया की प्रत्येक बात—स्वास्थ्य, धन, बुद्धि, विद्या, प्रसन्नता, दु:ख, धर्म, जायदाद, सम्बन्धी, दुकानदारी और व्यापार, वैवाहिक सुख, विवाह, सामाजिक स्थिति, आमदनी, विदेश यात्राएं, बीमारी, विरासत, शत्रु, भोग-विलास इत्यादि ये सब किसी न किसी भाव से ज्ञात होता है। परन्तु प्रत्येक भाव से क्या-क्या बातें पता लगती हैं, यह विस्तार से बताना सम्भव नहीं है। इसलिए हम संक्षेप में ही किस भाव से क्या ज्ञात होता है, यह बताते हैं। कुछ बातें एक से अधिक भावों से देखी जाती हैं, इसलिए इसके लिए वह सब भाव देखने पड़ेंगे।

पहला भाव

शरीर, शरीर की बनावट, शारीरिक ताकत, शक्ति, सूरत, रंग, व्यक्तित्व, स्वभाव, झुकाव, स्वास्थ्य, प्रसन्नता और दु:ख, आयु, बाल और सिर, यश, सामाजिक स्तर, जन्मस्थान, नाना, दादी इत्यादि।

दूसरा भाव

चेहरा, आंखें (विशेष रूप से दाहिनी आंख), नाक, मुंह, दांत और जीभ, बोलने, बात करने की निपुणता, कठोर या नर्म वाणी (सच या झूठ बोलना) और खाना, भोजन में रुचि, धन और धान्य, सोना, चांदी और जवाहरात, कंजूसी, वस्तुओं का खरीदना और बेचना, कुटुम्ब, मृत्यु इत्यादि।

तीसरा भाव

गला, आवाज, कान, सुनने की शक्ति, कंधा, बाजू, छाती का ऊपर का हिस्सा, भाई या बहन (विशेष रूप से अपने से छोटे), साथी, सम्बन्धी, पड़ोसी, नौकर, अपने से नीचे कार्य करने वाले और मददगार, हिम्मत, लड़ना, क्रोध, धर्म, शारीरिक और मानसिक शक्ति, होशियारी, क्षमता, खेल-कूद, छोटी यात्राएं, इधर-उधर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घूमना, छोटे-छोटे लेख, आयु, धर्म इत्यादि।

चौथा भाव

हृदय और उसके समानान्तर छाती का दाहिना हिस्सा, माता, पिता और माता की ओर के संबंधी, मित्र, रहने का मकान, जमीन, बाग, खेती की भूमि, गीली जमीन और वहां का उत्पादन, पशु, पानी के नीचे का स्थान, तालाब और कुआं, आराम, सोना, प्रसन्नता, सम्मान, मीठी सुगन्ध, सवारी, दक्षिण भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार विद्या, धार्मिक स्वभाव, जीवन का अन्तिम समय, जीवन के अच्छे सिद्धान्त।

पांचवां भाव

पेट, बच्चे, बच्चा जनने की शक्ति, यकृत, बच्चे (लड़के और लड़कियां), बुद्धि, विद्या, याददाश्त, मन, ज्ञान, सलाह, पुस्तक लिखने की क्षमता, भगवान में भक्ति, साधना और प्रार्थना, पिछले जन्म में किए गए अच्छे कार्य, आनन्द, वेश्याओं से सम्बन्ध, सट्टा, जुआ, घुड़दौड़ इत्यादि।

छठा भाव

नाभि के पास शरीर का हिस्सा, नीचे की अंतड़ियां, मामा और मौसी, बीमारी, चोट इत्यादि, मानसिक और शारीरिक रोग, चिन्ता, दुश्मनी, दुश्मन, लड़ना, मेहनत, खतरे, जेल, भाइयों से कलह, चोरी, नौकर, नौकरी, कर्जा, गन्दी और बुरी आदतें, क्रूर कर्म, विघ्न और बाधाएं इत्यादि।

सातवां भाव

विवाह, पति-पत्नी, दूसरों से सम्बन्ध, कामेन्द्रियों का सुख, वैवाहिक प्रसन्नता, पति-पत्नी का स्वरूप और उनकी आयु, साझे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दारी और साझेदारी में किया गया कार्य,यात्रा, यात्रा में रुकावट, मुकदमें, शत्रु पर विजय, पेशाब का रास्ता, दुकानदारी इत्यादि ।

आठवां भाव

जननेन्द्रियों का बाहरी भाग, छूत की बीमारी (गर्मी, सुज़ाक इत्यादि), मधुमेह, भगन्दर, बवासीर, आयु, मानसिक उदासीनता, पाप, दुःख, खतरे, बीमारियां, क्षति, पति-पत्नी की परेशानियां, भाई के शत्रु, ज़मीन के नीचे गड़ा हुआ धन, मृत्यु, मृत्यु का स्थान और कारण, युद्ध, समुद्र पार की वस्तुएं, धन की हानि, राजदंड, डर, हार, पैतृक सम्पत्ति के अतिरिक्त दूसरा मकान, विरासत में मिला हुआ धन, पति की आर्थिक स्थिति इत्यादि ।

नवां भाव

जांघ और कूल्हा, पिता (दक्षिण के ज्योतिषियों के अनुसार) पौत्र, भाई की पत्नी, पति के भाई और बहन, मठ, धर्म, अच्छे कार्य, दान, आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रवृत्ति, ज्ञानप्राप्ति के तरीके, अच्छे व्यक्तियों से सम्बन्ध, समुद्री यात्रा, समृद्धि, भाग्य स्थान कहते हैं। 'भाग्य' में धन, प्रसन्नता, सुख सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं।

दसवां भाव

घुटना, पीठ, पिता, सास, गोद लिया पुत्र, उपार्जन करने की क्षमता, कर्म, अच्छे या बुरे कार्य, सफलता, खेती, विदेश में रहना, राजा, राज्य, सरकार, यश, जीवन-स्तर, अपने से बड़े लोग, संन्यास, नौकरी इत्यादि ।

ग्यारहवां भाव

पिण्डली, बड़े भाई और बहन, मित्र, दामाद, माता की आयु,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाभ, आय, हानि, ससुर से लाभ, सांसारिक सुख की वस्तुएं, सवारी, शत्रु और उनके कार्य, कपड़े, पैतृक सम्पत्ति, कार्य-कुशलता, इच्छाएं, ज्ञान और देवभक्ति इत्यादि।

बारहवां भाव

पांव(पंजे), काका, बुआ, मामी, जननेन्द्रियों के सुख, पत्नी का क्षय, दूसरी पत्नी, मानसिक उदासीनता, शरीर का व्यय, दुःख, जेल जाना, पांव का काटना, हानि, खर्चे, वस्तुओं का खरीदना, उदारता, मातृभूमि से दूर रहना, जीवन में नाम, यश वगैरह की हानि, बायां नेत्र, दांत इत्यादि।

ज्योतिष में जीवन में काम आने वाली समस्त वस्तुएं किसी न किसी भाव में या किसी न किसी ग्रहों से देखी जाती हैं। ग्रहों के बारे में हमारे कुछ पाठक शुरू में यह देखकर कि बहुत-सी वस्तुएं एक से अधिक भाव पर आधारित होती हैं, निष्कर्ष निकालने में कुछ कठिनाई महसूस करें, परन्तु यह जानना चाहिए कि जीवन की प्रत्येक बात किसी न किसी प्रकार दूसरी बातों पर निर्भर करती है। जैसे एक अच्छे हृदय का होना लम्बी आयु के लिए आवश्यक है, परन्तु उसके लिए पेट और अंतड़ियां ठीक से काम करें, अच्छा रक्तप्रवाह हो, मानसिक तनाव भी साधारण रहे, इत्यादि। इसीलिए यदि कुछ बातें एक से अधिक भाव से निकलें तो उसके लिए तारतम्य से निष्कर्ष निकालना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—५

ग्रह

बारह भाव से किन-किन बातों का विचार करना चाहिए, यह हमने चौथे अध्याय में बताया है। इसके अतिरिक्त राशियों के बारे में हमने तीसरे अध्याय में बताया है। अब यहां पर हम ग्रहों के उच्च-नीच स्थान, मित्र-शत्रु इत्यादि बतलाते हैं।

पीछे हमने बताया है कि किस राशि का स्वामी कौन-सा ग्रह है और इसलिए हम यहां पर इसको दुबारा नहीं बता रहे हैं। कोई भी ग्रह जब अपनी राशि में होता है तो बलवान समझा जाता है। इस सिद्धान्त के आधार पर सिंह का सूर्य, कर्क का चन्द्रमा, मेष या वृश्चिक का मंगल, मिथुन या कन्या का बुध, धनु या मीन का बृहस्पति, वृषभ या तुला का शुक्र और मकर या कुंभ का शनि बलवान होता है। राहु कन्या राशि में और केतु मीन में बलवान होते हैं।

मूल त्रिकोण

'मूल त्रिकोण' में बैठा हुआ ग्रह अपनी राशि में बैठे होने से अधिक बलवान होता है। निम्नलिखित राशि और अंश, ग्रहों के, मूल त्रिकोण हैं :

सूर्य	सिंह	१°	से	२०°
चन्द्र	वृषभ	४°	से	२०°
मंगल	मेष	१°	से	१२°
बुध	कन्या	१६°	से	२०°
बृहस्पति	धनु	१°	से	१३°
शुक्र	तुला	१°	से	२०°

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनि	कुंभ	१° से २०°
राहु	"	१° से १५°
केतु	"	१° से १५°

उच्च

इसके अतिरिक्त एक और श्रेणी है। नीचे हमने जो राशियां बताई हैं उनमें ग्रह अपनी 'उच्च' राशि में होता है। अपनी 'उच्च' राशि से सातवीं राशि में ग्रह 'नीच' राशि का कहलाता है। अपनी उच्च राशि का बल सबसे अधिक होता है (अपनी राशि या मूल त्रिकोण से भी अधिक), परन्तु अपनी नीच राशि में ग्रह अत्यधिक कमज़ोर होता है।

यदि एक ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो उसे 'उच्च का ग्रह' और यदि अपनी नीच राशि में हो तो उसे 'नीच का ग्रह' कहते हैं। निम्नलिखित सारिणी में ग्रहों की 'उच्च' और 'नीच' राशियां बताई जाती हैं :

ग्रह	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य	मेष (१° से १०°)	तुला
चन्द्र	वृषभ (१° से ३°)	वृश्चिक
मंगल	मकर (१° से २८)	कर्क
बुध	कन्या (१° से १५°)	मीन
बृहस्पति	कर्क (१° से ५°)	मकर
शुक्र	मीन (१° से २८)	कन्या
शनि	तुला (१° से २०°)	मेष

चन्द्रमा पहले तीन अंश तक वृषभ में उच्च का होता है और आखिर के २७ अंशों में अपने मूल त्रिकोण में। इसी प्रकार बुध अपने पहले ३. अंश तक अपने उच्च में और ४. अंश से २० अंश तक अपने मूल त्रिकोण में होता है। अन्तिम नौ अंशों तक बुध अपनी राशि में होता है। अर्थात् कन्या राशि बुध का उच्च स्थान (१° से १५°), मूल त्रिकोण (१६° से २०°) और अपनी राशि (२१° से ३०°) होती है।

राहु और केतु के उच्च और नीच स्थानों के बारे में मतभेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं। कुछ लोगों के अनुसार मिथुन राशि में राहु उच्च का होता है और धनु राशि में नीच का, परन्तु कुछ अन्य व्यक्तियों के अनुसार वृषभ राशि का राहु उच्च का और वृश्चिक राशि का राहु नीच का होता है। केतु का उच्च-नीच इसके विपरीत समझना अर्थात् राहु का उच्च स्थान, केतु का नीच स्थान समझना

ग्रहों की परस्पर मित्रता

ज्योतिष में ग्रहों की दो प्रकार की मित्रता समझी जाती है। पहली 'नैसर्गिक' और दूसरी 'तात्कालिक'। 'नैसर्गिक' मित्रता सभी जन्म-कुण्डलियों के लिए एक-सी रहेगी, परन्तु तात्कालिक मैत्री जन्म-कुण्डली की ग्रह-स्थिति पर आधारित है और यह प्रत्येक कुण्डली के लिए अलग-अलग प्रकार की होगी। ग्रहों की मित्रता का सिद्धान्त प्राचीन काल से चला आ रहा है और ग्रहों का बल देखने में इसका प्रयोग किया जाता है। नीचे की सारिणी में हम ग्रहों के मित्र, सम और शत्रु बताते हैं।

नैसर्गिक मैत्री चक्र :—

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चन्द्र मंगल बृहस्पति	बुध	शुक्र शनि
चन्द्र	सूर्य बुध	मंगल बृहस्पति शुक्र शनि	—
मंगल	सूर्य चन्द्र बृहस्पति	शुक्र शनि	बुध
बुध	सूर्य शुक्र	मंगल बृहस्पति शनि	चन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
बृहस्पति	सूर्य चन्द्र मंगल	शनि	बुध शुक्र
शुक्र	बुध शनि	मंगल बृहस्पति	सूर्य चन्द्र
शनि	बुध शुक्र	बृहस्पति	सूर्य चन्द्र मंगल

यहां देखिए कि बुध तो सूर्य का 'सम' है (अर्थात् न तो मित्र न ही शत्रु), परन्तु सूर्य बुध का मित्र है। इससे यह समझना कि परस्पर सम्बन्ध एक से होंगे, ठीक नहीं है। ग्रहों की यह नैसर्गिक मित्रता तर्कपूर्ण और युक्तिसंगत है, परन्तु हम यहां पर उसका विवेचन नहीं कर रहे हैं।

तात्कालिक मैत्री

जैसा हम पहले कह चुके हैं कि तात्कालिक मित्रता प्रत्येक

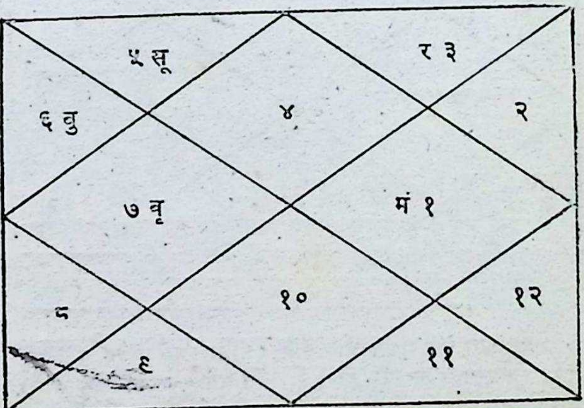

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-कुण्डली की ग्रह-स्थिति पर निर्भर करती है और इसलिए यह विभिन्न कुण्डलियों की अलग-अलग होगी। ग्रहों की तात्कालिक मैत्री नीचे दिए गए सिद्धान्तों पर निर्भर करती है :

(क) एक ग्रह से दूसरा ग्रह, दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवें, बारहवें स्थान पर हो तो वह मित्र होता है। २,३,४,१०,११,१२.

(ख) एक ग्रह से दूसरा ग्रह, पहले, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें या नवें स्थान में हो तो शत्रु होता है। १,५,६,७,८,९.

(ग) उदाहरण के लिए पृष्ठ ४९ का चित्र देखें।

सूर्य से बुध और बृहस्पति क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान में हुए, इसलिए ये दोनों सूर्य के मित्र हैं। परन्तु मंगल सूर्य से नवें स्थान में है, इसलिए शत्रु हुआ। ग्रहों में या तो तात्कालिक मैत्री होती है या तात्कालिक शत्रुता। वे 'सम' नहीं होते हैं। इसमें एक राशि से दूसरी राशि तक गणना की जाती है। जैसे उदाहरण कुण्डली में, जो पुनः नीचे दी जाती है।

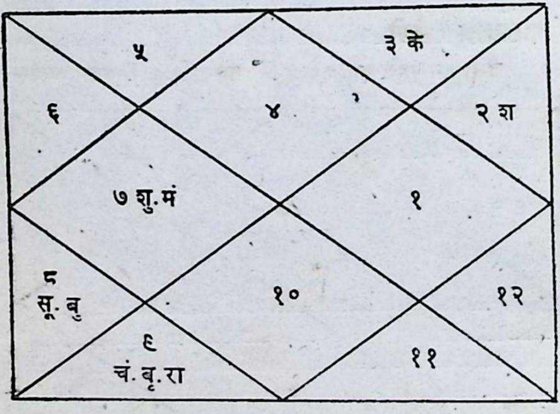

सूर्य और बुध पांचवें भाव में हैं, इसलिए सूर्य और बुध शत्रु हुए। यहां शत्रुता परस्पर होती है। जैसे सूर्य बुध का शत्रु है तो बुध भी सूर्य का शत्रु होगा। इसी कुण्डली में देखिए कि चन्द्रमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और बृहस्पति छठे भाव में हैं। सूर्य (पांचवें भाव में है) से गणना करने पर चन्द्रमा और बृहस्पति दूसरे भाव में हुए और इसलिए दोनों ही सूर्य के मित्र होंगे (शनि सूर्य से सातवें भाव में हुआ इसलिए शत्रु होगा)। इसी प्रकार सूर्य से (जहां सूर्य बैठा है) मंगल और शुक्र १२वें भाव में हुए। इससे ये दोनों भी सूर्य के मित्र हुए। इस प्रकार चंन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति और शुक्र तो सूर्य के तात्कालिक मित्र हैं और बुध, शनि सूर्य के शत्रु। सारिणी का रूप देने पर ग्रहों की तात्कालिक मैत्री इस प्रकार हुई :

तात्कालिक मैत्री चक्रम

ग्रह	मित्र	शत्रु
सूर्य	चन्द्र, मंगल	बुध
	बृहस्पति, शुक्र	शनि
चन्द्र	सूर्य, मंगल	बृहस्पति
	बुध, शुक्र	शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र	शुक्र
	बुध, बृहस्पति	शनि
बुध	चन्द्र, मंगल	सूर्य
	बृहस्पति, शुक्र	शनि
बृहस्पति	सूर्य, मंगल	चन्द्र
	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	सूर्य, चन्द्र	मंगल
	बुध, बृहस्पति	शनि
शनि	—	सूर्य, चन्द्र
		मंगल, बुध
		बृहस्पति, शुक्र

पंचधा मैत्री

ग्रहों की तात्कालिक और नैसर्गिक मित्रता इत्यादि का समन्वय करने से पांच प्रकार के सम्बन्ध आएंगे, जो अग्रलिखित हैं :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. दोनों जगह मित्र हों तो—अति मित्र।
२. दोनों जगह शत्रु हों तो—अति शत्रु।
३. एक जगह मित्र और दूसरी जगह शत्रु हो तो—सम।
४. नैसर्गिक सम हो परन्तु तात्कालिक मित्र हो तो—मित्र।
५. नैसर्गिक सम हो परन्तु तात्कालिक शत्रु हो तो—शत्रु।

यह पांच प्रकार की हुई। बुध सूर्य का सम है (नैसर्गिक मैत्री चक्र में), परन्तु तात्कालिक शत्रु है, इसलिए बुध सूर्य का शत्रु हुआ। चन्द्रमा दोनों ही जगह में सूर्य का मित्र है इसलिए वह अति मित्र हुआ। इसी प्रकार सब ग्रहों का विचार करना चाहिए। उदाहरण कुण्डली में जो सम्बन्ध हुए, वे पृष्ठ ५३ की सारिणी में बताए गए हैं।

अब प्रश्न उठता है कि हमने यह मित्र, अति मित्र, शत्रु इत्यादि का विचार क्यों किया? इसका उत्तर यह है कि ग्रहों के फलादेश में मित्रा-मित्र का विचार भी किया जाता है।

अति मित्र राशि में बैठा हुआ ग्रह अपना खराब प्रभाव बहुत ही अल्प मात्रा में करता है और अधिकतर अच्छा फल देता है। मित्र की राशि में ग्रह हो तो भी उसका दुष्प्रभाव कम हो जाता है (परन्तु कुछ कम मात्रा में)। 'सम' (जो न तो मित्र हो न ही शत्रु) की राशि में बैठा ग्रह न तो अधिक अच्छा और न ही अधिक खराब प्रभाव करता है। शत्रु राशि में बैठा हुआ ग्रह अपना शुभ स्वरूप खो देता है और क्रूर ग्रह अधिक खराब फल देने वाला होगा। अपने अति शत्रु की राशि का ग्रह अत्यधिक क्रूर और खराब फल देता है। यदि शुभ ग्रह हो तो उसका अच्छा प्रभाव बहुत अधिक मात्रा में नष्ट हो जाता है।

• ऊपर जो मित्रा-मित्र का विचार के लिए बताया गया है, वही नवांश कुण्डली में भी समझना। अति मित्र की राशि में है, परन्तु नवांश मे अति शत्रु की राशि में हो तो वह ग्रह अपना अच्छा फल कुछ मात्रा तक खो देगा। परन्तु नवांश में अति मित्र की राशि में हो और जन्म-कुण्डली में अति शत्रु की राशि में तो अपना खराब प्रभाव कुछ सीमा तक कम रहेगा।

हम यहां जोर देकर यह कहना चाहेंगे कि किसी ग्रह की स्थिति अच्छी है या खराब, वह इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंचधा मैत्री चक्रम्

ग्रह	अतिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अतिशत्रु
सूर्य	चन्द्र मंगल बृहस्पति	—	शुक्र	बुध	शनि
चन्द्र	सूर्य बुध	मंगल शुक्र	—	बृहस्पति शनि	—
मंगल	सूर्य चन्द्र बृहस्पति	—	बुध	शुक्र शनि	—
बुध	शुक्र	मंगल बृहस्पति	सूर्य चन्द्र	शनि	—
बृहस्पति	सूर्य मंगल	—	चन्द्र बुध शुक्र	शनि	—
शुक्र	बुध	बृहस्पति	सूर्य चन्द्र शनि	मंगल	—
शनि	—	—	बुध शुक्र	बृहस्पति	सूर्य चन्द्र मंगल

मित्र की राशि में है अथवा शत्रु की राशि में। इसके अतिरिक्त भी कुछ और नियम तथा अपवाद भी हैं, जिनका विश्लेषण हम आगे के अध्यायों में करेंगे।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। उनका अच्छा या खराब प्रभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस राशि में बैठे हैं या किन ग्रहों के साथ हैं। उस राशि के स्वामी के समान या जिस ग्रह के साथ हों उसके स्वभाव के अनुरूप ही फल देंगे। इसलिए मित्रा-मित्र में इनका विचार नहीं किया जाता है।

क्रूर और शुभ ग्रह

(१) सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु क्रूर ग्रह हैं। क्रूर ग्रह जिस भाव में बैठेगा, उस भाव के फल को नष्ट कर देता है। जिस भाव को देखता है, उसके शुभ फल को भी नष्ट कर देता है। इसमें भी शनि की तीसरी और सातवीं दृष्टि तथा मंगल की सातवीं और आठवीं दृष्टि बहुत दुष्प्रभाव देती है। यह दुष्प्रभाव क्रूर ग्रह की महादशा और अन्तर्दशा में विशेष रूप से खराब असर दिखाएगा। इसके अतिरिक्त भी साधारण रूप से उसका प्रभाव हमेशा ही रहेगा (देखिए अध्याय ६)। इसमें एक अपवाद भी है। यदि क्रूर ग्रह अपनी ही राशि में हों या अपनी राशि को ही देखें तो अच्छा प्रभाव दिखाते हैं। कौन-कौन-सा ग्रह किन-किन भावों को देखता है, यह हम आगे बताएंगे।

(२) चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र शुभ ग्रह हैं, परन्तु कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और अमावस्या का चन्द्रमा शुभ नहीं होता है, बल्कि क्रूर होता है। कुछ व्यक्तियों का मत है कि यदि बुध क्रूर ग्रह के साथ हो तो क्रूर और शुभ ग्रह के साथ हो तो शुभ होता है। शुभ ग्रह जिस भाव में हो या जिस भाव को देखे, अच्छे फल को देता है। विशेष तौर से जिस समय उसकी महादशा या अन्तर्दशा आती है।

दृष्टि

अब हम यह बताएंगे कि कौन-सा ग्रह किन भावों को देखता है।

(१) सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र, सातवें भाव पर पूर्ण दृष्टि डालते हैं; चौथे और आठवें भावों पर ७५ प्रतिशत; पांचवें और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवें भावों पर ५० प्रतिशत तथा तीसरे और दसवें भावों पर २५ प्रतिशत (जिस भाव में ग्रह बैठे हों उससे गणना करनी चाहिए)।

(२) मंगल चौथे, सातवें और आठवें भावों पर पूर्ण दृष्टि डालता है; पांचवें और नवें भावों पर ५० प्रतिशत तथा तीसरे और दसवें भावों पर २५ प्रतिशत।

(३) बृहस्पति पांचवें, सातवें और नवें भावों पर दृष्टि डालता है। चौथे और आठवें भाव पर ७५ प्रतिशत तथा तीसरे और दसवें भाव पर २५ प्रतिशत।

(४) शनि तीसरे, सातवें और दसवें भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है; चौथे और आठवें भावों पर ७५ प्रतिशत तथा पांचवें और नवें भावों पर ५० प्रतिशत।

नीचे सारिणी में देखने से पाठकों को यह तुरन्त पता चल जाएगा कि कौन-से ग्रह किस अनुपात में किन-किन भावों पर दृष्टि डालते हैं।

भाव

ग्रह	३	४	५	७	८	९	१०
सूर्य	१/४	३/४	१/२	१	३/४	१/२	१/४
चन्द्र	१/४	३/४	१/२	१	३/४	१/२	१/४
मंगल	१/४	१	१/२	१	१	१/२	१/४
बुध	१/४	३/४	१/२	१	३/४	१/२	१/४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह	३	४	५	७	८	९	१० भाव
वृहस्पति	१/४	३/४	१	१	३/४	१	१/४
शुक्र	१/४	३/४	१/२	१	३/४	१/२	१/४
शनि	१	३/४	१/२	१	३/४	१/२	१

प्राचीन मत से राहु और केतु की दृष्टि नहीं होती है।

जिस भाव में ग्रह बैठा हो उस भाव से गणना करनी चाहिए। जैसे दूसरे भाव में शुक्र हो तो अपने से सातवें अर्थात् (दूसरा भाव—१, तीसरा भाव—२ इत्यादि) आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

उदाहरण के लिए बताई गई जन्म-कुण्डली में सूर्य की दृष्टि देखिए। सूर्य पांचवें भाव में बैठा है :

सूर्य की दृष्टि

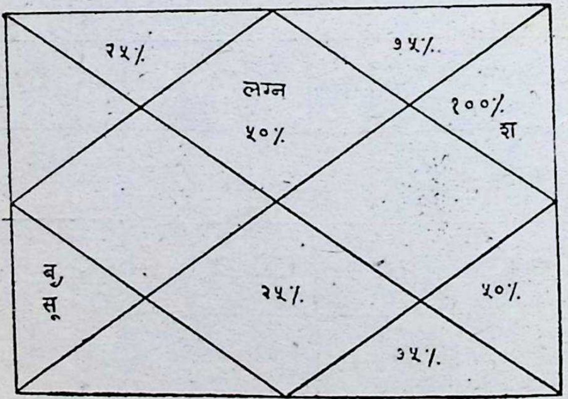

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य से भावों की गणना करने से बारह भाव इस प्रकार हुए :

(१) लग्न से ५	(२) लग्न से ६	(३) ७
(४) ८	(५) ९	(६) १०
(७) ११	(८) १२	(९) १ या लग्न
(१०) २	(११) ३	(१२) ४

अर्थात् लग्न से ग्यारहवां भाव सूर्य से सातवां हुआ और उस-पर सूर्य की पूरे १०० प्रतिशत दृष्टि हुई। इसी प्रकार सूर्य चौथे और आठवें भावों पर (जो कि लग्न से क्रमश: आठवां और बारहवां भाव है) ७५ प्रतिशत दृष्टि हुई। सूर्य से पांचवां और नवां भाव (लग्न से क्रमश: नवां और स्वयं लग्न ही हुआ), इनपर ५० प्रतिशत दृष्टि हुई। सूर्य से तीसरा और दसवां भाव(लग्न से क्रमश: सातवां और दसवां भाव हुए), इनपर २५ प्रतिशत दृष्टि हुई। ऊपर जो चक्र है उससे किस भाव पर कितनी दृष्टि पड़ती है, यह भली भांति समझ में आ जाएगा।

दूसरी बात जो पाठकों को समझनी चाहिए, वह यह है कि ग्रह न केवल भावों को अपितु उनमें बैठे हुए ग्रह को भी उसी अनुपात से देखता है। जैसे उदाहरणस्वरूप ली गई कुण्डली में सूर्य वृश्चिक राशि में है। उससे सातवें भाव पर वृषभ राशि है और इसपर सूर्य की पूर्ण (१०० प्रतिशत) दृष्टि हुई। इसलिए सूर्य न केवल वृषभ को अपितु शनि को भी, जो वहां है, पूर्ण रूप से देखेगा। इसी प्रकार शनि भी न केवल वृश्चिक राशि को अपितु सूर्य और बुध को भी देखेगा।

ग्रहों की परस्पर दृष्टि को दो वजह से रखना चाहिए :

(१) पहला कारण यह है कि यदि एक शुभ ग्रह एक क्रूर ग्रह को देखे तो क्रूर ग्रह का दुष्प्रभाव कम हो जाता है। इसके विपरीत क्रूर ग्रह की दृष्टि से शुभ ग्रह की शुभता कम हो जाएगी।

(२) दूसरा कारण यह है कि जब दो ग्रह एक-दूसरे को पूर्ण रूप से देखते हैं तो उनमें एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध हो जाता है। इस 'सम्बन्ध' का ज्योतिष में अत्यधिक महत्त्व है। 'सम्बन्ध' का क्या फल होता है, यह हमने आगे अध्याय में बताया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहों की दिशाएं

प्रत्येक ग्रह की अपनी दिशाएं होती हैं, जो नीचे बताई जा रही हैं :

पूर्व —सूर्य	पश्चिम —शनि
दक्षिण पूर्व—शुक्र	उत्तर पश्चिम—चन्द्र
दक्षिण—मंगल	उत्तर—बुध
दक्षिण पश्चिम—राहु	उत्तर पूर्व—वृहस्पति

यदि जन्म-कुण्डली में कोई ग्रह बलवान और अच्छे भाव में है तो उस ग्रह की जो दिशा है, उस ओर से लाभ होता है। इसके विपरीत कमजोर और पीड़ित ग्रह की दिशा में हानि और संकट समझना।

ग्रहों के रंग रत्न और धातु

हम अब ग्रहों के रंग, रत्न और धातु बताते हैं :

ग्रह	रंग	रत्न	धातु
सूर्य	ताम्रवर्ण	माणिक	तांबा
चन्द्र	सफेद	मोती	चांदी
मंगल	लाल	मूंगा	तांबा, सोना
बुध	हरा	पन्ना	सोना, चांदी और कांसा
वृहस्पति	पीला	पुखराज	सोना
शुक्र	अनेक रंग, सफेद	हीरा	चांदी
शनि	काला	नीलम	लोहा
राहु	गहरा काला	गोमेद	रांगा,सोना
केतु	चितकबरा	लहसुनिया	सोना,कांसा

ऊपर जो रत्न बताए गए हैं, ये ही नवरत्न कहलाते हैं। ये सब रत्न मूल्यवान होते हैं। यदि जन्म-कुण्डली में ग्रह बलवान हो तो उस ग्रह की धातु, रत्न और रंग के कार्यों को करने से लाभ होता है, विशेष तौर से जब कि उस ग्रह की दशा-अन्तर्दशा भी हो। कमजोर ग्रह जिन रत्नों-धातुओं का कारक है, उनका कार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हानिकारक होगा। पीड़ित, अस्त, क्रूर ग्रह का रत्न या धातु धारण करने से ग्रह की पीड़ा दूर होती है। यह हम दसवें अध्याय में विस्तार से बताएंगे।

जिस ग्रह का जो रंग है, उससे चेहरे के रंग पर प्रभाव पड़ता है। विशेष तौर से लग्नेश और पहले भाव में जो ग्रह हों, उसके अनुरूप चेहरे का स्वरूप और रंग होता है (हमारा कहने का तात्पर्य यह है कि जातक का रंग, रूप इत्यादि अपने परिवार के अनुरूप ही होगा। परन्तु यदि चन्द्रमा, बृहस्पति, बुध लग्न में बैठें तो जातक अपने परिवार के लोगों के मुकाबले में अधिक गौर वर्ण और भव्य आकृति का होगा, यदि शुक्र हो तो देखने में अति सुन्दर हो, शनि अथवा राहु से रंग उतना साफ न हो)। इसी प्रकार सप्तम भाव में जो ग्रह हो उसके अनुसार ही पत्नी (पति) का सप्तम रूप और रंग समझना (सातवें भाव से पत्नी (या पति) का विचार किया जाता है)। इसी प्रकार से जो ग्रह जिस भाव को देखते हों, उनका असर भी विशेष रूप से होता है। यदि सातवें भाव में कोई भी ग्रह न हो तो पत्नी का रंग और सुन्दरता सातवें भाव के स्वामी और जो ग्रह सातवें भाव को देखें, उनपर निर्भर होगी।

ग्रहों का लिंग

भारतीय ज्योतिष में सब ग्रह पुरुष होते हैं। यहां पाश्चात्य ज्योतिष से कुछ मतभेद हैं, क्योंकि पाश्चात्य ज्योतिषी चन्द्रमा और शुक्र को स्त्री जाति का मानते हैं। ग्रहों का पुरुषत्व पुराणों में भी वर्णित है। जैसे चन्द्रमा का बृहस्पति की पत्नी तारा से सम्बन्ध होने के कारण 'बुध' का जन्म हुआ। इसी प्रकार 'शुक्र' की दो पत्नियों 'जयन्ती' (इन्द्र की कन्या) और 'गो' (पित्री की कन्या) का वर्णन है। शुक्र के इन स्त्रियों से चार पुत्र हुए। सबके सब नौ ग्रह (राहु और केतु सहित) पुरुष ही कहे गए हैं, परन्तु फिर भी प्रभाव की दृष्टि से सूर्य, मंगल और बृहस्पति को पुरुष, चन्द्रमा और शुक्र को स्त्री तथा बुध और शनि को 'नपुंसक' कहा गया है। यह लिंग-भेद सन्तान का विचार करने में प्रयोग होता है। पांचवें भाव का स्वामी या पांचवें में स्त्रीकारक ग्रह हो तो ऐसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातक के कन्या अधिक होंगी। यदि पुरुष ग्रह हो तो पुत्र अधिक होंगे। नपुंसक ग्रह 'कन्याएं' देते हैं।

ग्रहों का शरीर के दोषों से संबंध

ग्रहों का निम्नलिखित रूप से शरीर के दोषों पर प्रभाव होता है (यदि जन्म-कुण्डली में कोई ग्रह बलवान हो तो शरीर के जिन दोषों पर उसका अधिकार है, वे बलवान होंगे अन्यथा इसके विपरीत समझना। जो ग्रह कमज़ोर और पीड़ित होते हैं उनके दोषों के कारण बीमारी समझनी चाहिए):

(१) सूर्य—हड्डी
(२) चन्द्रमा—रक्त
(३) मंगल—मज्जा
(४) बुध—चर्म
(५) बृहस्पति—चर्बी
(६) शुक्र—वीर्य (डिंब कोष)
(७) शनि—नसें

आयुर्वेद में बीमारी का विचार तीन दोषों—वात, पित्त और कफ पर आधारित होता है। किसी एक, दो या तीनों के बिगड़ जाने पर विभिन्न प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं।

ग्रहों पर इन तीनों दोषों का निम्नलिखित रूप से प्रभाव है:

स्वाद

नीचे हम प्रत्येक ग्रह का स्वाद (और रुचि) बताते हैं। जन्म-कुण्डली में दूसरा भाव मुंह और जीभ का भी है। जातक की किसी विशेष स्वाद में रुचि, दूसरे भाव के स्वामी, दूसरे भाव में बैठे हुए ग्रह अथवा जो ग्रह दूसरे भाव को देखें, उनपर निर्भर करती है। इस रुचि में ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा के कारण भी कुछ परिवर्तन होता रहता है:

(१) सूर्य—कड़वा, (२) चन्द्रमा—नमकीन, (३) मंगल—तीखा, (४) बुध—विभिन्न प्रकार के स्वाद वाला, (५) बृहस्पति—मीठा, (६) शुक्र—खट्टा, (७) शनि—कषाय।

जब जन्म का समय ठीक तरह से ज्ञात न हो, जिसके कारण दो लग्नों में से कौन-सा लग्न जन्मकाल में उदय था—उस समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातक की किसी विशेष स्वाद में रुचि, उसका लग्न निर्धारित करने में काम आएगी (अर्थात् दूसरे भाव में बैठे ग्रह से जातक की पसन्द का पता चलेगा)।

दिग्बल

बुध और बृहस्पति पहले भाव में बलवान होते हैं, चन्द्रमा और शुक्र चौथे भाव में, शनि सातवें भाव में और सूर्य और मंगल दसवें भाव में बलवान होते हैं। इन भावों में ये ग्रह बलवान समझे जाते हैं। जो भाव ऊपर बताए गए हैं, उनसे सातवें भाव में ग्रह सबसे कमज़ोर होते हैं। जैसे बुध और बृहस्पति सातवें भाव में, पहले भाव में शनि, सूर्य और मंगल चौथे भाव में। यदि पूर्ण बल एक इकाई हो तो ग्रहों को केन्द्रों में इस प्रकार का बल मिलेगा :

	१	४	७	१०
सूर्य	१/४	०	१/४	१
चन्द्र	१/४	१	१/४	०
मंगल	१/४	०	१/४	१
बुध	१	१/४	०	१/४
बृहस्पति	१	१/४	०	१/४
शुक्र	१/४	१	१/४	०
शनि	०	१/४	१	१/४

इसी अनुपात से और भावों में भी समझना

हम पहले एक अध्याय में बता चुके हैं कि किस भाव से किन-किन कार्यों का विचार किया जाता है। परन्तु इसके साथ ही उन कार्यों के 'कारक' भी होते हैं। उन्हें भी समान रूप से देखना चाहिए। किसी भी कार्य का विचार करने के लिए भाव का, उसके स्थान का, जो ग्रह उस भाव से संबंधित हो (जो ग्रह वहां बैठे, उसे देखे या उसके स्वामी के साथ हो) तथा उस कार्य के 'कारक' का विचार करना चाहिए। आगे हम यह बताते हैं कि कौन-सा ग्रह किन वस्तुओं का कारक है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) सूर्य आत्मा का ; चन्द्रमा हृदय और मन का; मंगल शक्ति और ताकत का; बुध बुद्धि और स्नायु-मंडल का; बृहस्पति प्रसन्नता, विद्या और ज्ञान का; शुक्र सांसारिक सुखों का; जीवन में सुख का, सवारी का; शनि दुःख और मेहनत का कारक है।

(२) सूर्य से पिता, चन्द्रमा से माता मंगल से भाई और बहन, बुध से मामा, बृहस्पति से सन्तान (पुत्र-कन्या) तथा स्त्रियों की कुण्डलियों में पति का (इसमें मतभेद है), शुक्र से पत्नी और शनि से नौकर का विचार किया जाता है।

(३) पहले भाव का विचार किया जाए तो सूर्य का विचार भी उसके साथ करना चाहिए; दूसरे, पांचवें और ग्यारहवें भाव के साथ बृहस्पति का विचार भी रहे। तीसरे भाव के साथ मंगल की स्थिति भी देखे; चौथे भाव के साथ चन्द्रमा और बुध तथा शुक्र का विचार किया जाए; छठे भाव के साथ मंगल, शनि का; सातवें भाव के विचार में शुक्र की स्थिति अवश्य देखी जाए; आठवें और बारहवें भाव का विचार करते समय शनि का विचार भी किया जाए; नवें भाव के फलादेश में सूर्य और बृहस्पति का विचार करना आवश्यक है; दसवें भाव के साथ ही सूर्य, बुध, बृहस्पति और शनि का

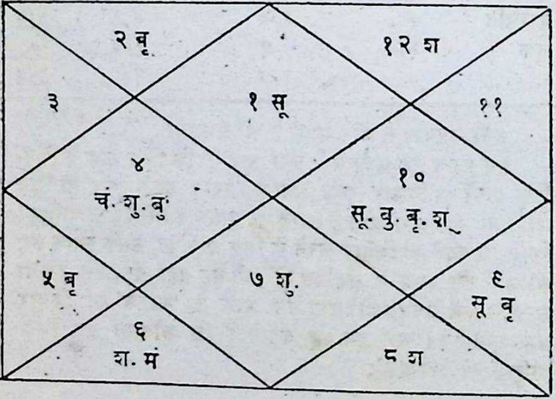

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचार किया जाए। पीछे चक्र में बताया है कि किस भाव के साथ किन ग्रहों के बलाबल का विचार करके ही फल कहना चाहिए।

उदाहरण के लिए शरीर की बनावट, ताकत, स्वास्थ्य इत्यादि का पहले भाव से किया जाता है। अब मान लीजिए, पहला भाव बलवान है, जिसका मतलब यह होगा कि पहले भाव का स्वामी भी बलवान है। अच्छे भाव में बैठा है और शुभ ग्रह से दृष्ट है तथा पहले भाव में भी शुभ ग्रह है अथवा पहले भाव को देखते हैं तो ऐसी स्थिति में जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परन्तु यदि जन्म-कुण्डली में सूर्य पीड़ित, दुःस्थान में बैठे या कमजोर रहेगा तो पहले भाव के बलवान होने के उपरान्त भी जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह पाएगा। कोई भी बीमारी उसे जल्दी हो जाएगी और काफी समय तक रहेगी। या दूसरा उदाहरण लीजिए, माता का विचार चन्द्रमा और चौथे भाव से किया जाता है। यदि दोनों में एक बलवान और दूसरा कमजोर हो तो भी माता को कष्ट रहेगा या जातक को अपनी माता से सुख नहीं मिलेगा।

अस्त ग्रह Combust.

सूर्य की निकटता के कारण जब किसी भी ग्रह की किरणें नष्ट हो जाती हैं (दिखाई नहीं देतीं) तो उस ग्रह को 'अस्त ग्रह' कहा जाता है। अस्त ग्रह कमजोर और पीड़ित होता है। उसका अच्छा (शुभ) फल नष्ट हो जाता है। हमारे मत से ग्रह का अच्छा और खराब दोनों ही प्रभाव नष्ट हो जाते हैं और जैसी सूर्य की स्थिति हो उसीके अनुरूप ग्रह का अपना फल होता है क्योंकि बुध और शुक्र हमेशा सूर्य के आसपास ही रहते हैं। (बुध सूर्य से अधिक से अधिक २८° और शुक्र सूर्य से अधिक से अधिक ४८° दूर हो सकता है), इसलिए उसका अस्त होना इतना खराब नहीं होता है। वृहस्पति अस्त हो तो शुभ फल नहीं देता। मंगल और शनि यदि शुभ हों तो शुभ फल नहीं देते। यदि खराब फलकारक हो तो खराब फल ही कुछ हद तक देंगे। पंचांग में गणना करते समय देखिए कि कोई ग्रह जन्म के समय अस्त था या नहीं।

अस्त ग्रह दिन के समय दिखाई नहीं देता, रात्रि में ही दृष्टि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोचर होता है।

नीचे दी गई जन्म-कुण्डली में शनि अस्त है।

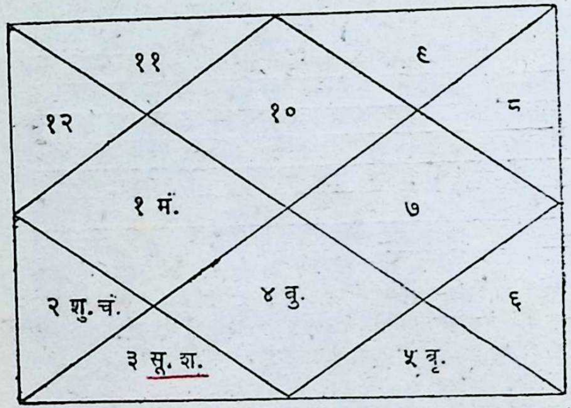

इस जन्म-कुण्डली में सूर्य के १७° अंश और शनि के भी १६ अंश हैं। सूर्य के निकट होने से शनि अस्त है। यहां शनि लग्नेश भी है। यह जातक कमजोर शरीर का है। इसे जीवन में सुख कम मिलेगा। चन्द्रमा और शुक्र तथा पांचवां भाव मंगल और शनि के मध्य में है। यह अभी तक अविवाहित है।

यसमा सूर्यको साथ संयुक्त अस्त ग्रहको मात्र फल दिएको छ / तर ग्रह आफसे आफ अस्त हुन्छ यसको यहाँ केही विवेचना छैन /

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—६

राशियों में ग्रहों का फल

पिछले अध्याय में हमने बताया है कि मित्र, शत्रु इत्यादि की राशियों में बैठने से ग्रहों के फल में अन्तर पड़ जाता है। इस अध्याय में हम विभिन्न राशियों में ग्रहों का क्या-क्या फल होता है, यह बता रहे हैं।

यदि कोई ग्रह किन्हीं और कारणों से (जैसे अच्छे भाव में हो, अच्छे भावों का स्वामी हो इत्यादि) शुभ अवसर दिखाने वाला है तो वह उच्च राशि में अथवा अपनी स्वयं की राशि में भी हो तो शुभ फल दिखाएगा। इसमें भी दो प्रकार का फल होगा : (१) यदि ग्रह शुभ है और उच्च राशि या अपनी ही राशि में हो तो वह (क) जिन भावों का स्वामी है उनका और (ख) जिस भाव में बैठा हो या देखता है, उन सबका अच्छा फल दिखाता है, (२) यदि क्रूर ग्रह उच्च या अपनी राशि में हो तो (क) जिन भावों का स्वामी है, उन भावों का शुभ असर दिखाएगा, परन्तु (ख) जिस भाव में बैठा हो या जिस भाव को देखता है, उनके फल को कुछ सीमा तक खराब करता है।

यदि कोई ग्रह अपनी राशि में बैठा हो तो वह न केवल जिस राशि में बैठा है उस भाव का अपितु दूसरे भाव का भी (जहां उस ग्रह की दूसरी राशि है) अच्छा फल दिखाएगा।

उदाहरण के लिए आगे दिए गए चक्र में शुक्र पांचवें और दसवें भावों का स्वामी है। वह पांचवें भाव में अपनी राशि वृषभ में बैठा है। इसलिए वह न केवल पांचवें भाव का अपितु दसवें भाव का भी शुभ फल करेगा (यहां और भी बातों का विचार करना चाहिए, जैसे दसवें भाव में क्या कोई और ग्रह भी है या नहीं इत्यादि)।

ऊपर बताए गए सिद्धान्तों में अपवाद भी हैं। दूसरे भाव से एकत्रित किया गया धन देखते हैं, परन्तु दूसरे भाव का स्वामी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

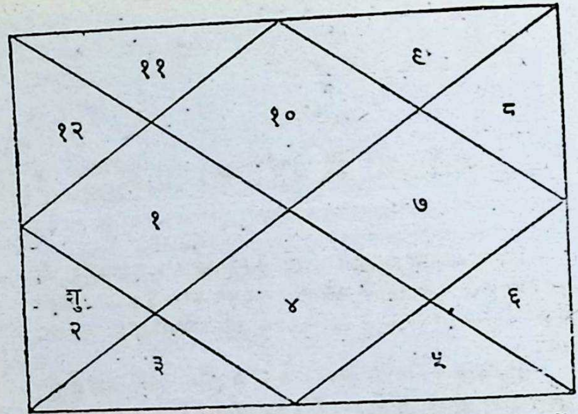

(आयु के उत्तरार्द्ध में) मारक भी होता है। इसी प्रकार सातवें भाव से विवाह का विचार किया जाता है, परन्तु वह मारकेश भी होता है। यही बात बारहवें भाव के स्वामी के लिए भी समझनी चाहिए। यदि दूसरे भाव का स्वामी दूसरे भाव में हो तो धन में तो बढ़ोतरी करेगा, परन्तु मारकेश भी हो सकता है अथवा सातवें भाव का स्वामी सातवें भाव में हो तो विवाह, साझेदारी इत्यादि के लिए अच्छा फल करेगा, परन्तु सातवें भाव में बैठने से बलवान मारकेश भी होगा। इसी प्रकार बारहवें भाव का स्वामी यदि बारहवें भाव में हो (और यदि क्रूर हो) तो अत्यधिक व्यय कराएगा। आगे कुण्डली में देखिए :

(१) शनि दूसरे भाव में अपनी राशि मकर में है। वह धन में वृद्धि करेगा, परन्तु मारकेश भी हो सकता है।

(२) बुध सातवें भाव का स्वामी होकर सातवें भाव में बैठा है। अच्छा विवाह कराएगा, परन्तु मारकेश भी हो सकता है।

(३) मंगल क्रूर ग्रह होकर बारहवें भाव में अपनी राशि में बैठा है, इसलिए व्यय अधिक कराएगा।

इन विशेष अपवादों के अतिरिक्त किसी भी ग्रह का अपनी राशि में बैठना शुभ फल ही करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

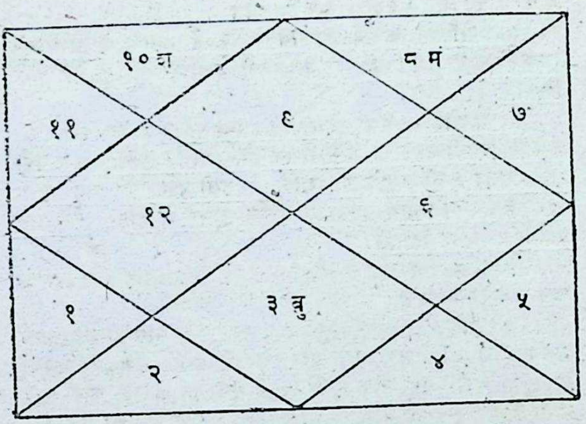

यदि और कारणों से ग्रह अच्छा फल करने वाला है तो वह अपने अति मित्र की राशि में भी हो तो कुछ अधिक अच्छा फल करेगा। इसी प्रकार अपने मित्र या सम राशि में भी अच्छा ही फल करेगा, परन्तु यदि शत्रु या अति शत्रु की राशि में हुआ तो उनका अच्छा फल काफी सीमा तक नष्ट हो जाएगा।

इसके विपरीत जो ग्रह किन्हीं और कारणों से खराब फल देने वाले हैं, वे यदि किसी अति मित्र या मित्र की राशि में हो तो उनका खराब फल अधिक मात्रा में नहीं होगा और यदि अति शत्रु या शत्रु की राशि में हों तो अधिक अशुभ फलदायक होंगे।

अपनी नीच राशि में स्थित ग्रह बहुत कमजोर समझा जाता है। वह जिस भाव या भावों का स्वामी हो, उनका बहुत ही अल्प मात्रा में अच्छा प्रभाव दिखाएगा। यदि क्रूर ग्रह नीच राशि में हो तो जिस भाव में बैठेगा या जिस भाव को देखता है, उसके फल को बहुत अधिक मात्रा में नष्ट कर देगा, परन्तु यदि शुभ हो (और अपनी नीच राशि में भी हो) तो जहां बैठा है या जिस भाव को देखता है, उसके फल को खराब नहीं करता है। परन्तु इसमें एक अपवाद है कि नीच राशि में (मकर में) स्थित बृहस्पति सातवें भाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में पत्नी की आयु को क्षीण कर देता है।

'फलदीपिका' के नवें अध्याय के २०वें श्लोक में मन्त्रेश्वर (एक विख्यात ज्योतिषी जो सोलहवीं शताब्दी में हुए हैं) ने लिखा है:

"यदि कोई ग्रह वक्री हो तो वह इतना अच्छा प्रभाव दिखाएगा, जैसे कि अपनी उच्च राशि में स्थित हो, हालांकि वह चाहे अपनी नीच राशि में हो अथवा शत्रु राशि में। इसी प्रकार जो ग्रह 'वर्गोत्तम' है उसका प्रभाव उतनी ही अच्छी मात्रा में होगा, जैसे वह अपनी राशि में बैठा हो।"

किन्हीं अन्य कारणों से भी नीच राशि स्थित ग्रह का अशुभ फल कम हो जाता है:

(१) यदि नीच राशि स्थित ग्रह उस ग्रह के साथ हो जो अपनी उच्च राशि में है। जैसे मंगल और वृहस्पति कर्क राशि में अथवा मकर राशि में। यहां नीच राशि स्थित ग्रह का खराब फल नहीं होता है, परन्तु इसके साथ ही उच्च राशि स्थित ग्रह का शुभ फल भी कुछ कम हो जाता है।

(२) यदि नीच राशि में बैठे हुए ग्रह को उस राशि का स्वामी पूर्ण रूप से देखता हो तो उसका खराब फल कम हो जाता है।

(३) यदि नीच राशि में कोई ग्रह बैठा हो और उस राशि का स्वामी, चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र में हो तो नीच राशि स्थित ग्रह का अशुभ फल नहीं होता है। इसीको नीच भंग राजयोग कहते हैं।

अब हम यह बतलाते हैं कि ग्रहों का विभिन्न राशियों में क्या प्रभाव होता है। यह हमने 'वराह मिहिर' के 'होराशास्त्र' के अध्याय सोलह से उद्धृत किया है (वराह मिहिर का जन्म लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था)।

जन्म लग्न या चन्द्रमा

भारतीय ज्योतिष में जन्म लग्न और चन्द्र राशि को बराबर का महत्त्व दिया जाता है। लग्न अथवा चन्द्रमा का विभिन्न राशियों में फल आगे दिया गया है:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेष : बड़ी और गोल आंखें (ललाई लिए हुए), जातक मसालेदार भोजन और सब्जियां खाने का शौकीन होता है तथा बेहद जल्दी-जल्दी खाता है, पैदल घूमने का शौकीन और विभिन्न स्थानों की यात्रा करे, अति सन्तोषी, औसत व्यक्ति से ज्यादा कामी, स्त्रियों को पसन्द करने वाला, धन एकत्रित नहीं कर सकता, उसकी पसन्द और नापसन्द बदलती रहती है, घमंडी और चुस्त, लड़ने में चालाक, गन्दे नाखून वाला, पानी से डरने वाला, कभी-कभी अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ा होता है।

वृषभ : बड़े चेहरे और जांघों वाला, मस्तानी चाल वाला; चेहरे पर या पीठ पर तिल अथवा और किसी प्रकार का चिह्न हो, दान देने में उदार, पुत्रों की अपेक्षा लड़कियां अधिक हों, कफ प्रकृति, पहले सम्बन्धियों से सम्बन्ध तोड़कर नये सम्बन्ध बनाए, खूब भोजन करने वाला, क्षमाशील, हमेशा के लिए मित्र बनाने वाला, जीवन का बीच का और आखिर हिस्सा पहले हिस्से से अधिक अच्छा बीते।

मिथुन : काले नेत्र, बड़ी नाक, घुंघराले बाल और सुन्दर व्यक्तित्व, चंचल प्रकृति वाला और कामी, विद्वान, दलाली के काम में अथवा संदेशवाहक के रूप में अच्छा कार्य करे, अति बुद्धिमान, मीठा बोलने वाला, जुआ खेलने में चतुर, गाने-बजाने में शौकीन, नाचने में प्रवीण, बहुत भोजन करने वाला, हिजड़ों से दोस्ती हो।

कर्क : अधिक लम्बा नहीं, मोटी गर्दन हो, टेढ़ा और जल्दी चले, जीवन के किसी भाग में अति धनवान हो तथा किसी भाग में बिलकुल धन न हो—जिस प्रकार चन्द्रमा घटता और बढ़ता है, उसी प्रकार जातक का धन कम हो या बढ़े, मित्रों को पसन्द करने वाला और उनकी भलाई करे, ज्योतिष, बाग, बगीचे और झरने तालाब इत्यादि का शौकीन, पत्नी तथा स्त्रियों के प्रभाव में रहने वाला, अच्छे मित्रों से युक्त, मकान हो, अच्छी सलाह को सुनने वाला।

सिंह : बड़े चेहरे और भारी ठोड़ी वाला, पीले नेत्र वाला, भूख और प्यास के कारण बीमारी हो, पेट और दांत में तथा मानसिक रोग हो, दान देने में उदार, ज़िद्दी, घमंडी और बहादुर, अति क्रोधी और छोटी-छोटी बात पर क्रोध करने वाला, कम पुत्रों वाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्नी तथा स्त्रियों से अच्छे सम्बन्ध न रहे, माता से लाड़-प्यार मिले।

कन्या : सुन्दर नेत्र तथा शर्मीली निगाहों वाला, लम्बे बाजू और ढीले कंधे वाला, विद्वान, बुद्धिमान, धार्मिक और कला इत्यादि में निपुण, मीठा बोलने वाला, प्रसन्न, कामी, दूसरे व्यक्तियों से धन और जायदाद से लाभ हो, अपनी मातृभूमि से दूर रहने वाला, सन्तान कम हो और उनमें भी कन्याएं अधिक।

तुला : लम्बा, दुबला और पतला, लम्बी नाक वाला, जल्दी-जल्दी बीमार पड़े, पांव में कमजोरी, बुद्धिमान, सफाईपसन्द, खरीदने-बेचने में होशियार, धनवान, अपने सम्बन्धियों के लिए अच्छा कार्य करे परन्तु संबंधी उससे नाराज़ रहें और छोड़ दें, ब्राह्मण, देवताओं और संन्यासियों की भक्ति करने वाला, पत्नी तथा स्त्रियों के प्रभाव में रहे, दो नाम हों— एक आध्यात्मिक और दूसरा लौकिक।

वृश्चिक : बड़े-बड़े नेत्र वाला, चौड़ी छाती, गोल जांघें, घुटने और पिण्डलियों वाला, पीलापन लिए हुए गोरा रंग हो, बचपन में बीमार रहे, पिता या धर्मगुरु से जल्दी अलग होने वाला, क्रूर विचार हो और क्रूर कर्म ही करे, राजाओं से सम्मान मिले, चोरी-छिपे पापकर्म करे।

धनु : गर्दन और चेहरा बड़ा हो, मोटे-मोटे दांत, नीचे का होंठ बहुत मोटा हो, बड़े कान और बड़ी नाक, मांसल बांहें, झुके हुए कन्धे, खराब नाखून, बोलने में प्रवीण, बुद्धिमान, कला और कारीगरी में निपुण, बलवान और चालाक, हमेशा कार्य में व्यस्त रहे, सम्बन्धियों से शत्रुता रहे, पिता से विरासत में धन मिले, उदार प्रकृति का, ताकत से वश में न किया जा सके, परन्तु नम्रता के सामने झुक जाए।

मकर : खूबसूरत आंखें, शरीर का निचला हिस्सा ऊपर के हिस्से के मुक़ाबले में कम उभरा हुआ, पतली कमर, आलसी परन्तु भाग्यवान, ठंड सहन नहीं कर सके, इधर-उधर घूमने का शौकीन, ताकतवर और शक्तिशाली, दूसरों की सलाह मानने वाला, धार्मिक न हो परन्तु धार्मिकता का दिखावा करे, पत्नी और बच्चे में लिप्त रहे, बेशर्म, कठोर-हृदय और कंजूस, अपने किसी नज़दीकी रिश्तेदार से यौन-सम्बन्ध हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुंभ : विशाल शरीर और उसके ऊपर सख्त रोएं, ऊंट के समान गर्दन, चेहरा, हाथ, पांव, पीठ और कमर अत्यधिक मोटे हों, दूसरी स्त्रियों के साथ पापकर्म करे, ज्यादा बुद्धि न हो, कठोर परिश्रम करना पड़े, फूलों और सुगन्ध का शौकीन, मित्रों से दृढ़ सम्बन्ध रखे।

मीन : सुगठित शरीर, बड़ा सिर, बड़ी नाक, सुन्दर नेत्र, पत्नी से अच्छे सम्बन्ध हों, अच्छे वस्त्रोंका शौकीन, पत्नी तथा स्त्रियों के प्रभाव में रहे, विदेश से व्यापार करने से लाभ हो, तरल पदार्थों द्वारा लाभ हो, शत्रुओ पर विजयी हो, जमीन से निकलने वाली वस्तुओं से लाभ हो, जातक बुद्धिमान और विद्वान होता है।

स्त्रियों की जन्म-कुण्डली देखते समय, ऊपर जो बताया गया है, उसमें पाठकों को चाहिए कि अपनी बुद्धि से थोड़ा-बहुत परिवर्तन करें।

सूर्य

यदि सूर्य मेष राशि में हो तो जातक यशस्वी, होशियार, घूमने का शौकीन होता है, परन्तु उसके पास धन नहीं होता है। वह अस्त्रों का कार्य करने में अथवा पुलिस और सेना में अधिक सफल होता है।

यदि वृषभ राशि में हो तो जातक कपड़े और सुगन्धित वस्तुओं का व्यापार करता है। गाने-बजाने का शौकीन होता है, परन्तु स्त्रियों से प्रेम नहीं करता है।

यदि सूर्य मिथुन राशि का हो तो जातक ज्योतिष विद्या का शौकीन, धनवान और विद्वान होता हैं।

यदि सूर्य कर्क राशि का हो तो चंचल प्रकृति का होता है। जल्दी-जल्दी कार्य करे, परन्तु धन नहीं जमा कर पाता। दूसरे व्यक्तियों के लिए कार्य करता है तथा मानसिक और शारीरिक दुःख रहे।

यदि सिंह राशि में सूर्य हो तो जातक जंगलों, पहाड़ों और जहां पशु रखे जाते हैं, उन स्थानों को पसन्द करता है। उसमें बहुत ताकत होती है, तथा वह बुद्धिमान और बहादुर होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्नी तथा स्त्रियों से अच्छे सम्बन्ध न रहे, माता से लाड़-प्यार मिले।

कन्या : सुन्दर नेत्र तथा शर्मीली निगाहों वाला, लम्बे बाजू और ढीले कंधे वाला, विद्वान, बुद्धिमान, धार्मिक और कला इत्यादि में निपुण, मीठा बोलने वाला, प्रसन्न, कामी, दूसरे व्यक्तियों से धन और जायदाद से लाभ हो, अपनी मातृभूमि से दूर रहने वाला, सन्तान कम हो और उनमें भी कन्याएं अधिक।

तुला : लम्बा, दुबला और पतला, लम्बी नाक वाला, जल्दी-जल्दी बीमार पड़े, पांव में कमजोरी, बुद्धिमान, सफाईपसन्द, खरीदने-बेचने में होशियार, धनवान, अपने सम्बन्धियों के लिए अच्छा कार्य करे परन्तु संबंधी उससे नाराज़ रहें और छोड़ दें, ब्राह्मण, देवताओं और संन्यासियों की भक्ति करने वाला, पत्नी तथा स्त्रियों के प्रभाव में रहे, दो नाम हों— एक आध्यात्मिक और दूसरा लौकिक।

वृश्चिक : बड़े-बड़े नेत्र वाला, चौड़ी छाती, गोल जांघें, घुटने और पिण्डलियों वाला, पीलापन लिए हुए गोरा रंग हो, बचपन में बीमार रहे, पिता या धर्मगुरु से जल्दी अलग होने वाला, क्रूर विचार हों और क्रूर कर्म ही करे, राजाओं से सम्मान मिले, चोरी-छिपे पापकर्म करे।

धनु : गर्दन और चेहरा बड़ा हो, मोटे-मोटे दांत, नीचे का होंठ बहुत मोटा हो, बड़े कान और बड़ी नाक, मांसल बांहें, झुके हुए कन्धे, खराब नाखून, बोलने में प्रवीण, बुद्धिमान, कला और कारीगरी में निपुण, बलवान और चालाक, हमेशा कार्य में व्यस्त रहे, सम्बन्धियों से शत्रुता रहे, पिता से विरासत में धन मिले, उदार प्रकृति का, ताकत से वश में न किया जा सके, परन्तु नम्रता के सामने झुक जाए।

मकर : खूबसूरत आंखें, शरीर का निचला हिस्सा ऊपर के हिस्से के मुक़ाबले में कम उभरा हुआ, पतली कमर, आलसी परन्तु भाग्यवान, ठंड सहन नहीं कर सके, इधर-उधर घूमने का शौकीन, ताकतवर और शक्तिशाली, दूसरों की सलाह मानने वाला, धार्मिक न हो परन्तु धार्मिकता का दिखावा करे, पत्नी और बच्चे में लिप्त रहे, बेशर्म, कठोर-हृदय और कंजूस, अपने किसी नज़दीकी रिश्तेदार से यौन-सम्बन्ध हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुंभ : विशाल शरीर और उसके ऊपर सख्त रोएं, ऊंट के समान गर्दन, चेहरा, हाथ, पांव, पीठ और कमर अत्यधिक मोटे हों, दूसरी स्त्रियों के साथ पापकर्म करे, ज्यादा बुद्धि न हो, कठोर परिश्रम करना पड़े, फूलों और सुगन्ध का शौकीन, मित्रों से दृढ़ सम्बन्ध रखे।

मीन : सुगठित शरीर, वड़ा सिर, बड़ी नाक, सुन्दर नेत्र, पत्नी से अच्छे सम्बन्ध हों, अच्छे वस्त्रोंका शौकीन, पत्नी तथा स्त्रियों के प्रभाव में रहे, विदेश से व्यापार करने से लाभ हो, तरल पदार्थों द्वारा लाभ हो, शत्रुओं पर विजयी हो, ज़मीन से निकलने वाली वस्तुओं से लाभ हो, जातक बुद्धिमान और विद्वान होता है।

स्त्रियों की जन्म-कुण्डली देखते समय, ऊपर जो बताया गया है, उसमें पाठकों को चाहिए कि अपनी बुद्धि से थोड़ा-बहुत परिवर्तन करें।

सूर्य

यदि सूर्य मेष राशि में हो तो जातक यशस्वी, होशियार, घूमने का शौकीन होता है, परन्तु उसके पास धन नहीं होता है। वह अस्त्रों का कार्य करने में अथवा पुलिस और सेना में अधिक सफल होता हैं।

यदि वृषभ राशि में हो तो जातक कपड़े और सुगन्धित वस्तुओं का व्यापार करता है। गाने-बजाने का शौकीन होता है, परन्तु स्त्रियों से प्रेम नहीं करता है।

यदि सूर्य मिथुन राशि का हो तो जातक ज्योतिष विद्या का शौकीन, धनवान और विद्वान होता हैं।

यदि सूर्य कर्क राशि का हो तो चंचल प्रकृति का होता है। जल्दी-जल्दी कार्य करे, परन्तु धन नहीं जमा कर पाता। दूसरे व्यक्तियों के लिए कार्य करता है तथा मानसिक और शारीरिक दुःख रहे।

यदि सिंह राशि में सूर्य हो तो जातक जंगलों, पहाड़ों और जहां पशु रखे जाते हैं, उन स्थानों को पसन्द करता है। उसमें बहुत ताकत होती है तथा वह बुद्धिमान और बहादुर होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि सूर्य कन्या राशि में हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला और स्त्री के समान हो। वह विद्वान, गणित में प्रवीण और कला में निपुण, साहित्य, कविता, पढ़ाई और चित्रकारी में प्रवीण होता है।

यदि सूर्य तुला राशि में हो तो जातक तरल पदार्थों का कार्य करता है। वह यात्रा करने का शौकीन होता है। धन कमाने के लिए नीच कर्म करे।

यदि सूर्य वृश्चिक राशि में हो तो जातक क्रूर, हिम्मती और बहादुर होता है। वह विद्वान होता है और जिन वस्तुओं में ज़हर का उपयोग होता है, उन वस्तुओं के (दवाइयां वगैरह) कार्यों से धन कमाए।

यदि सूर्य धनु राशि में हो तो जातक क्रोधी और चुस्त हो। उसे समाज में मान मिले।

यदि सूर्य मकर राशि में हो तो वह अच्छा दूकानदार या कम कीमत की वस्तुओं का व्यापार करे। कंजूस और अच्छे या बुरे तरीके से दूसरों का धन हड़पने की इच्छा करे। वह बुद्धिमान नहीं होता और उसकी मेहनत दूसरों को धन देने वाली होती है।

यदि सूर्य कुंभ राशि में हो तो जातक नीच बातें सोचने वाला, धनहीन, उसे पुत्रों से प्रसन्नता नहीं मिलती और भाग्य भी नष्ट हो जाता है।

यदि सूर्य मीन राशि में हो तो जातक को पानी से सम्बन्धित वस्तुओं से जैसे जहाज़ों के कार्यों से, समुद्री पदार्थों से, विदेश से व्यापार करने से उन्नति मिले। उसे स्त्रियों से सम्मान मिले।

मंगल

यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि में हो तो जातक को राजा या सरकार से सम्मान मिले। यात्रा करने का शौकीन। अच्छा व्यापारी और धनवान होता है। वह सेना के किसी विभाग का अथवा किसी दूसरी संस्था का अध्यक्ष होता है। उसके शरीर में चोट या घाव के चिह्न हों। वह शौकीन तबीयत का और शारीरिक सुखों के पीछे भागता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि मंगल वृषभ या तुला राशि का हो तो जातक परस्त्री-गामी और कम उम्र की स्त्रियों के वश में रहता है। मित्रों से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक मन से डरपोक परन्तु जोश से बोलने वाला होता है। वह अत्यधिक चालाक और अपनी इच्छाओं को छुपाकर रखता है। अच्छे वस्त्र पहनने का शौकीन होता है।

यदि मंगल मिथुन या कन्या में हो तो जातक निडर और हिम्मती होता है। उसके पुत्र हों, धन हो, परन्तु मित्र नहीं होते। जो व्यक्ति उसके लिए अच्छा कार्य करते हैं, वह व्यक्ति जीवन-भर उनका ऋणी रहता है। वह संगीत व लड़ाई कला में निपुण होता है। वह दूसरों से मदद की आशा रखता है, परन्तु कंजूस होता है।

यदि मंगल कर्क राशि में हो तो जातक धनवान होता है। वह जहाज, नौका इत्यादि के कार्यों से धन का उपार्जन करे, वह विद्वान होता है, परन्तु उसके पैरों में कमजोरी अथवा कोई बीमारी हो। जातक बुरे चरित्र का होता है।

यदि मंगल सिंह राशि में हो तो जातक निडर और जंगलों में घूमने वाला होता है। वह अधिक मेहनत करने वाला होता है, परन्तु पत्नी और पुत्रों से उसे प्रसन्नता नहीं मिलती, धनहीन होता है।

यदि मंगल धनु या मीन राशि में हो तो जातक ऊंचा स्थान प्राप्त करता है। उसमें काफी हिम्मत होती है और वह यशस्वी होता है। उसके पुत्र कम और शत्रु अधिक होते हैं।

यदि मंगल मकर राशि में हो तो जातक बहुत-से पुत्रों और धन से युक्त होता है। वह राजा के बराबर स्थान प्राप्त करे।

यदि मंगल कुंभ में हो तो जातक धनवान, यात्रा करने का शौकीन, क्रूर और झूठ बोलने वाला होता है। वह मानसिक दुःखों से पीड़ित रहता है।

बुध

मेष या वृश्चिक : नास्तिक, अधर्म या बुरे आचरण से धन कमाए, परन्तु फिर भी धनवान न हो। वह खाने, शराब पीने और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जुए में रुचि ले। वह नीच स्त्री से संबंध रखे (चाहे वह उसकी स्वयं की पत्नी हो अथवा पर-स्त्री)। वह दिखावटी होता है।

वृषभ या तुला : अपने से बड़े व्यक्तियों—गुरु, माता-पिता की सेवा करे। उदार हो, धन एकत्रित करने में लगा रहे। पत्नी तथा स्त्रियों से सुख मिले। बहुत-से पुत्र हों। अच्छा वक्ता और लोगों के समक्ष बोलने में प्रवीण।

मिथुन : आत्म-प्रशंसा करे। विद्वान और कला में प्रवीण। अच्छा और मीठा बोलने वाला तथा सुखमय जीवन व्यतीत करे।

कर्क : जातक पानी से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के व्यापार से धन कमावे। जहाज, नौका इत्यादि पानी में काम आने वाली वस्तुओं से लाभ हो। विदेशों से व्यापार लाभ देने वाला होता है। अपने लोगों के प्रति अच्छा व्यवहार न करे।

सिंह : यात्रा करने का शौकीन। जीवन में प्रसन्नता नहीं मिले। धन और पुत्रों से सुख न मिले। विद्वान न हो। अपने लोगों से निरादर पाए। स्त्रियों से संबंध बनाने की इच्छा रखे। परन्तु उनसे निरादर मिले और उनके द्वारा पसन्द न किया जाए।

कन्या : कन्या से बुध विशेष रूप से बलवान होता है। जातक बहुत-से गुणों से युक्त क्षमाशील होता है। निडर होता है। उदार प्रकृति का और प्रसन्नचित्त रहकर अच्छा जीवन बिताता है; बातचीत करने में, बोलने में वकीलों के समान प्रवीण।

धनु : राजाओं द्वारा पसन्द किया जाए (अपने अफसरों द्वारा विशेष रूप से पसन्द किया जाये)। विद्वान हो और उसकी सलाह को ठीक और विद्वत्तापूर्ण समझा जाता है।

मीन : मित्र बनाने में कुशल (दूसरों को जीत लेता है) अपने मालिक की सेवा (अपने साथियों के मुकाबले में) अधिक करता है। कारीगरी के काम में कुशल (ऐसी कारीगरी में जिसमें विशेष प्रतिभा की आवश्यकता न हो)।

मकर या कुंभ : दूसरों का कार्य करने के लिए यात्रा करे। नीचा पद मिले। अपने कर्तव्य का पालन करे। शारीरिक परिश्रम करना पड़े। धन से हीन हो। कर्जे में डूबा रहे। वह कारीगरी में निपुण होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहस्पति

यदि वृहस्पति मेष या वृश्चिक राशि में हो तो जातक सेनापति या उसके समान उच्च पद पाता है। वह धन, स्त्री, पुत्रों के सम्बन्ध में भाग्यशाली होता है। वह दयावान, दानी, बहादुर और बहुत-से अच्छे गुणों से युक्त होता है। उसे अच्छे सेवक मिलें।

यदि वृहस्पति वृषभ या तुला राशि में हो तो जातक स्वस्थ और अच्छे शरीर वाला होता है। वह मित्रों और धन से युक्त हो। वह दूसरे व्यक्तियों द्वारा पसन्द किया जाए और सुखपूर्वक रहता है। वह उदार प्रकृति का होता है।

यदि वृहस्पति मिथुन या कन्या राशि में हो तो ऐसे जातक के पास अत्यधिक साज-सज्जा का सामान होता है। वह मित्रों और पुत्रों से सुख पाता है। वह सलाहकार के रूप में कार्य करे।

यदि वृहस्पति कर्क राशि में हो तो धन, पुत्रों, स्त्रियों (प्राचीन भारत में जब 'होराशास्त्र' की रचना हुई उस समय भी धनवान और ऊंची जाति के लोग बहुत-से विवाह करते थे), हीरे-जवाहरात इत्यादि से सम्पन्न होता है। वह बुद्धिमान, ज्ञानी और सुख से रहे।

यदि वृहस्पति सिंह राशि में हो तो जातक सेना में उच्च पद पाता है। इसके अतिरिक्त जो फल कर्क के वृहस्पति के लिए बताए गए हैं, वे भी होते हैं।

यदि वृहस्पति धनु या मीन राशि में बैठे तो जातक अपनी जाति का सरदार अथवा राजा का मंत्री, सेनापति हो अथवा उस के बराबर उच्च पद प्राप्त करे।

यदि बृहस्पति मकर राशि में हो तो जातक के पास अधिक धन नहीं होता है। वह नीच कर्म करे।

यदि वृहस्पति कुंभ राशि में हो तो उसका फल कर्क राशि में जो फल बताया गया है, वैसा ही होता है।

शुक्र

यदि शुक्र मेष या वृश्चिक राशि में हो तो जातक व्यभिचारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है। पर-स्त्रियों के आकर्षण के कारण उसका धन नष्ट हो जाए (उनपर व्यय करने के कारण अथवा उनके कार्यों में, जिसकी वजह से स्वयं को हानि हो)। परिवार का नाम खराब करता है।

यदि शुक्र वृषभ या तुला राशि में हो तो जातक निडर होता है। वह अपनी क्षमता और साहस के कारण धन का उपार्जन करता है। राजाओं से सम्मान पाता है। वह नाम और यश प्राप्त करता है तथा अपने लोगों का मुखिया होता है।

यदि शुक्र मिथुन में हो तो सरकारी नौकरी करे। ऐसा जातक कला और कारीगरी में निपुण होता है। धनवान हो। परन्तु शुक्र यदि कन्या राशि में हो तो जातक नीच कर्म करे, जीवन में उसे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़े और उसके पास धन नहीं होता है।

यदि शुक्र कर्क राशि में हो तो जातक की दो पत्नियां हों (या एक पत्नी हो और दूसरी प्रेमिका)। बहुत कुछ भीरु स्वभाव का हो। दूसरे की सहायता लेने में तत्पर रहे। उसका परिश्रम निष्फल रहता है। मानसिक उदासीनता हो।

यदि शुक्र सिंह राशि में स्थित हो तो जातक उच्च परिवार में विवाह करता है, उसे पत्नी तथा स्त्रियों द्वारा लाभ होता है, परन्तु पुत्र कम होते हैं।

यदि शुक्र धनु राशि में हो तो जातक धनवान हो और अपनी जाति के लोगों में आदर पाता है। समाज और लोगों के द्वारा सम्मानित हो। यदि शुक्र मीन राशि में हो तो जातक देखने में सुन्दर, विद्वान और धनवान होता है। उसे राज्य से सम्मान मिले।

जब शुक्र मकर या कुंभ राशि में स्थित हो तो जातक आकर्षक स्वरूप वाला और स्त्रियों के वश में रहने वाला होता है। वह निर्गुण (नीच श्रेणी) स्त्री के वश में रहे।

शनि

यदि शनि मेष राशि में हो तो जातक बुद्धिमान नहीं होता है। वह निरर्थक घूमता रहता है। अच्छे मित्रों से हीन होता है। धोखा देने वाला और दिखावटी स्वभाव का होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि शनि वृश्चिक राशि में हो तो जातक को शारीरिक चोट लगे। मेहनत के कार्य करने पड़ें। अत्यधिक चुस्त तो हो, परन्तु क्रूरता से युक्त।

यदि शनि मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक धन और प्रसन्नता से हीन तथा उसे पुत्रों से भी सुख नहीं मिलता है।

वह बड़े-बड़े व्यक्तियों अथवा राज्य की नौकरी करे। व्यक्तियों या जायदाद का रखवाला हो, लिखने में बार-बार गलती हो। उसे बिलकुल भी शर्म नही होती है।

यदि शनि वृषभ राशि में हो तो जातक का वर्जित स्त्रियों से (बहुत पास की सम्बन्धी या खराब चरित्र वाली) यौन सबंध होता है। उसके पास धन तो नहीं होता परन्तु बहुत-सी स्त्रियों से विवाह या प्रेम-सम्बन्ध हो।

यदि शनि तुला राशि में हो तो जातक को सब ओर से सम्मान मिलता है (अपनी ज़ाति के लोगों से, समाज से, दूसरे व्यक्तियों द्वारा) और उसे ऊंचा पद प्राप्त हो। वह धनवान और प्रसिद्ध होता है।

यदि शनि कर्क राशि में हो तो जातक की माता की आयु कम होती है। उसके दांत अलग-अलग होते हैं।

यदि शनि सिंह राशि में हो तो जातक की प्रकृति नीच होती है और उसे जीवन में सुख नहीं मिलता है। उसे पुत्रों से भी सुख नहीं मिलता और नित्य श्रम करना पड़ता है।

यदि शनि धनु या मीन राशि में स्थित हो तो उसको जीवन के तीसरे भाग में ही सुख और समृद्धि मिलती है। वह ऊंचे व्यक्तियों का विश्वास प्राप्त करता है। उसके अच्छी पत्नी और पुत्र होते हैं। वह लोगों का अध्यक्ष अथवा ऊंचा स्थान प्राप्त करे। वह धनवान होता है।

यदि शनि मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक दूसरों की स्त्रियों और धन का उपभोग करता है। हमेशा समृद्धशाली होता है। वह बहुत धन का उपार्जन करे और आराम के लिए व्यय भी करे। उसके नेत्र कमजोर हों और वह गन्दा रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु और केतु

राहु मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या या मकर राशि में बैठकर शुभ फल देता है। इसलिए केतु हमेशा ही राहु के सामने रहने के कारण तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन और कर्क राशि में अच्छा फल देता है। (राहु-केतु का फल उस ग्रह पर निर्भर करता है, जिसके साथ राहु-केतु बैठे हों अथवा जिस ग्रह की राशि में हों— जिस प्रकार पानी जिस पात्र में डाला जाता है, उसी पात्र का स्वरूप और ठण्डक ले लेता है, उसी प्रकार ये दोनों छाया ग्रह भी अपना प्रभाव ग्रहों के अनुरूप बदलते रहते हैं)।

हर्शल (यूरेनस) मेष राशि में घमण्डी, स्वतन्त्र, कठिनाइयों का सामना करने वाला, परिवर्तनशील, जिद्दी और शारीरिक शक्ति से युक्त होता है।

वृषभ राशि में ईर्ष्यालू, स्वार्थी, कार्यों में निपुण और चिड़चिड़े स्वभाव वाला होता है।

मिथुन राशि में नये-नये कार्यों को आरम्भ करे, विज्ञान में रुचि हो, भीरु, विलक्षण प्रतिभा वाला।

कर्क राशि में अति संवेदनशील, मानसिक कमजोरी हो, इच्छाशक्ति कम हो, क्रोधी और अन्तःप्रेरणा से युक्त होता है।

सिंह राशि में दूसरों को आकर्षित करे, बहुत मीन-मेख निकालने वाला, अव्यावहारिक, अपनी प्रभुता जमाने वाला, क्षणिक क्रोधी, बिना वजह दूसरों का विरोध करे, अकस्मात् धन-लाभ हो।

कन्या राशि में जातक विचारवान, धन का सदुपयोग करने वाला, नौकरी में सफलता मिले, अन्तःप्रेरणा से सम्पन्न नये कार्य करे, अच्छा भोजन करने में रुचि रखे।

तुला राशि में अच्छे स्वरूप वाला, पारिवारिक सुख से हीन, अधिक प्रेम-संबंध हों, घूमने का शौकीन, सुख की वस्तुओं में धन का व्यय हो।

वृश्चिक राशि में अत्यधिक व्यय करे और कर्ज में डूबा रहे। चालाक, धोखा देने वाला, बदले की भावना से पूर्ण, क्रूर स्वभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और बहुत-से चमत्कारिक गुणों वाला होता है।

धनु राशि में स्नायुमण्डल कमजोर हो, बहुत सोचने वाला, घमंडी, क्रूर, अपनी बात काटा जाना पसन्द न करे।

मकर राशि में विचारवान और अपनी जिम्मेदारी समझने वाला, लड़ने वाला, किसीके नीचे कार्य करने में असमर्थ, झगड़ालू।

कुंभ राशि में अच्छे स्वभाव वाला, दूसरों की भलाई में लगा रहे, मानसिक और शारीरिक कार्यों में रुचि रखे।

मीन राशि में अन्तः प्रेरणा से युक्त, कला में निपुण, बदलते स्वभाव वाला अर्थात् किसी भी कार्य को स्थिर रूप से न कर सके। अकस्मात् जेल जाना पड़े।

नेपच्यून

मेष : शक्तिशाली, चुस्त, सुधार कार्यों में लगा रहे, किसीके महत्त्व को स्वीकार न करे।

वृषभ : मिलनसार, दूसरों के द्वारा पसन्द किया जाए, सुन्दर बोलने वाला, गाने-बजाने का शौकीन, कामी।

मिथुन : अति श्रेष्ठ, बुद्धिवाला, चालाक, किसी भी कार्य को शीघ्र सीखने वाला हो।

कर्क : अत्यधिक अंतःप्रेरणा या युक्त विभिन्न प्रकार के डरों से परेशान, पानी से डरने वाला, अपने-आप से ही दुखी रहे, मानसिक रोगों से युक्त।

सिंह : दयावान परन्तु डरपोक, अकस्मात् कार्य करे, अच्छी वस्तुओं को पसन्द करे, स्वार्थी।

कन्या : भविष्य जानने वाला, दूसरों की बुराई करे, गलती निकाले, लोगों द्वारा पसन्द नहीं किया जाए, जिस बीमारी के बारे में पढ़े अपने-आपको उसीसे पीड़ित समझता है, बुद्धि में विकार रहे।

तुला : देखने में सुन्दर, सुशील और कला में निपुण पत्नी हो, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि रखे।

वृश्चिक : चालाक, शक्तिशाली, बुरे स्वभाव वाला, धनवान, सुन्दर नेत्र हों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धनु : मन्दिर, अस्पताल इत्यादि का निर्माण करवाए। उच्च विचारों को रखे। किसी प्रकार के डर से युक्त हो। सच्चाई और स्वतन्त्रता का प्रेमी।

मकर : अति सोचने-विचारने वाला, चित्रकारी में निपुण, ठंडे स्वभाव वाला, धनवान, धैर्यवान परन्तु किसी भी प्रकार से विश्वास प्राप्त करने के योग्य नहीं; अपने स्वार्थ के लिए अपनी बातों से भी फिर जाए।

कुंभ : स्वतंत्र, लोगों द्वारा पसन्द किया जाए, मित्रों से हानि हो, स्वयं दूसरों के हितों के लिए कार्य करे, उसकी सज्जनता का दूसरे व्यक्तियों द्वारा अनुचित लाभ उठाया जाता है।

मीन : शान्त, दार्शनिक, अस्पताल और जेल इत्यादि के कार्यों में निपुण, उदासीन प्रकृति का होता है।

हमने सूर्य, चन्द्र इत्यादि सब ग्रहों का विभिन्न राशियों में क्या फल होता है, यह ऊपर बताया है। प्लूटो का फल अभी तक पूर्ण रूप से निश्चित नहीं किया जा सका है, इसी कारण हमने उसे यहां नहीं बताया है। पाठकों से निवेदन है कि विभिन्न प्रकार के फलों को ध्यान में रखकर ही तारतम्य से फलादेश करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—७

ग्रहों का भावों में फल

जन्मवाद

अब हम प्रत्येक ग्रह का विभिन्न भावों में फल बताते हैं, परन्तु उसके पहले पाठकों से निवेदन है कि वे राशि और भाव में क्या भेद है, इसे भली भांति समझ लें। जैसा पहले बताया जा चुका है, एक महीने तक सूर्य एक राशि में (०° से ३०° तक) रहता है। वह एक दिन में करीब १° चलता है। परन्तु सूर्य एक भाव से दूसरे में करीब २ घंटे में चला जाता है, क्योंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर २४ घंटे में एक परिक्रमा पूरी कर लेती है।

हमने पिछले अध्याय में लग्न का तथा ग्रहों की राशियों में स्थिति के आधार पर व्यक्तियों का स्वभाव और स्वरूप बताया है। अब हम यहां पर किस ग्रह का किस भाव में क्या फल होता है, यह बताते हैं। यह फल उस समय कुछ दूसरे प्रकार का होगा जब कि कोई अन्य ग्रह साथ में बैठा हो या उसे देखता हो। हम इस बात को अच्छी तरह बताते हैं।

मान लीजिए, जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा कन्या राशि में बैठा हुआ है। यदि इस चन्द्रमा के साथ वृहस्पति हो या वृहस्पति उसे देखता हो तो चन्द्रमा का प्रभाव बहुत अच्छा हो जाएगा, क्योंकि वृहस्पति अत्यधिक शुभ है। दूसरी तरफ यदि वृहस्पति के बदले शनि देखता हो या उसके साथ बैठा हो तो चन्द्रमा का प्रभाव दूषित हो जाएगा। इसका कारण यह है कि शनि क्रूर ग्रह है और जिस प्रकार सफेद रंग में काला रंग डालने से उसकी सफेदी नहीं रहती, उसी प्रकार एक ग्रह के साथ दूसरे ग्रह का सम्बन्ध रहने पर उसका असर कुछ सीमा तक बदल जाता है।

जन्म-लग्न या जन्म-राशि (चन्द्रमा जिस राशि में हो) का फलादेश करते समय लग्नेश या चन्द्र राशि के स्वामी का भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचार करना चाहिए। मान लीजिए, धनु लग्न में किसी का जन्म हुआ। वृहस्पति धन का स्वामी है। इसलिए वृहस्पति यदि अच्छी और बलवान राशि में हो जैसे मीन राशि में (जो कि इसकी स्वयं की है) या शुभ ग्रहों के साथ हो या दृष्ट हो तो ऐसी अवस्था में धनु लग्न या धनु राशि के लिए जो फल कहे गए हैं, उनका अच्छा असर अधिक मात्रा में होगा। परन्तु दूसरी तरफ यदि वृहस्पति नीच राशि का हो (मकर में) अथवा क्रूर ग्रहों के साथ हो या दृष्ट हो तो जो अच्छा प्रभाव बताया गया है, वह उस सीमा तक नहीं होगा।

ज्योतिष में फलादेश का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के तथ्यों और प्रभावों का विश्लेषण करके ही निष्कर्ष निकालना पड़ता है। व्यावहारिक अनुभव से इसमें सफलता मिलेगी। अब उदाहरण के लिए देखिए कि यदि जन्म के समय एक ग्रह किसी वजह से अच्छा प्रभाव दिखलाने वाला है और दूसरी वजह से खराब प्रभाव दिखलाने वाला है तो दोनों ही प्रकार का प्रभाव एक-दूसरे को रोक देगा। यदि अच्छा प्रभाव अधिक है तो यह अल्प मात्रा में होगा और यदि खराब प्रभाव अधिक है तो यह भी कुछ कम होगा। यह सिद्धान्त उसी समय लागू समझा जाएगा, जबकि एक ही ग्रह के दोनों प्रकार के फल हों। परन्तु यहां भी यह परिणाम जीवन के दो भागों के हैं तो दोनों ही भागों में असर दिखाएगा, जैसे वृषभ लग्न वाले जातक के लिए मंगल और शनि कन्या में पांचवें भाव में बैठे हों। यहां इन दोनों का एकसाथ बैठना धन, मान-सम्मान के लिए अच्छा है (मंगल सातवें भाव का स्वामी है और शनि नवें और दसवें भाव का स्वामी है और इन दोनों का सम्बन्ध यहां राजयोग कहलाएगा), परन्तु पांचवें भाव में बैठने से यह पेट में खराबी करे, सन्तान को नष्ट करे। यह इनके क्रूर ग्रह होने की वजह से होगा।

जो ज्योतिष के सिद्धांत से पूर्ण रूप से परिचित नहीं हैं। उन्हें यह बात सुनने में विचित्र लगे कि एक ही ग्रह किस प्रकार से दो तरह का प्रभाव दिखाएगा। एक अच्छा और एक बुरा या तो अच्छा ही प्रभाव दिखाए या खराब ही दिखाए। परन्तु ज्योतिष में ऐसा नहीं होता है। कोई ग्रह स्वभाव से क्रूर हो परन्तु अच्छे भावों का स्वामी हो या नैसर्गिक शुभ या किसी खराब भाव में या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किसी नीच, शत्रु राशि में बैठा हो तो उसका मिश्रित फल ही होगा, जैसे करेले को कितना ही साफ किया जाए उसमें कड़वाहट का कुछ अंश रह ही जाता है अथवा चन्दन अपनी सुगन्ध कभी नहीं खोता। हां, उसकी तीव्रता ज़रूर कम हो जाती है। किसीभी ग्रह का फलादेश करते समय हमको इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए: (१) किस भाव या भावों का स्वामी है, (२) किस राशि में बैठा है, (३) किस भाव में बैठा है, (४) किन ग्रहों के साथ बैठा है या देखा जाता है, (५) किन ग्रहों से सम्बन्धित है, (६) नैसर्गिक शुभ है या क्रूर।

अब यह देखने के लिए कि जब दो ग्रह अलग-अलग प्रकार के प्रभाव दिखलाते हैं—जैसे बृहस्पति धन को और शनि गरीबी, तो ये दोनों प्रकार के प्रभाव क्या एक-दूसरे को कम कर देंगे या मिटा देंगे? जी नहीं, ऐसा नहीं होता। जब बृहस्पति का प्रभाव रहेगा तो धन आएगा और जब शनि का प्रभाव होगा तो धन कम हो जाएगा और गरीबी रहेगी।

जातक के ऊपर किस ग्रह का प्रभाव जीवन के किस भाग में होगा, यह हम दसवें अध्याय में बताएंगे। ग्रहों के फलादेश के लिए ऊपर की भूमिका के बाद हम प्रत्येक भाव में ग्रहों का फल बतलाते हैं।

पहला भाव

सूर्य : जातक हिम्मत वाला, क्रूर, अपने विचारों पर दृढ़ (देखिए पृष्ठ १८५ और १८६ रुद्र की टीका 'विवरण') रहने वाला, परन्तु नेत्रों में कष्ट हो। यदि मेष राशि का सूर्य हो तो अत्यधिक धनवान और यश वाला होता है। यदि सिंह का सूर्य हो तो बुढ़ापे में रतौंधी हो। यदि कर्क में हो तो नेत्र में धब्बा हो। यदि तुला में हो तो धन नष्ट हो जाता है और बुढ़ापे में नेत्रों की ज्योति भी नष्ट हो जाती है। जातक पारिजात में लिखा है कि यदि सूर्य पहले भाव में हो तो पुत्र कम होते हैं। जातक कठोर हृदय होता है, परन्तु आराम की ज़िन्दगी जीता है। वह कम खाता है और उसे नेत्रों की पीड़ा रहती है। अपनी प्रशंसा स्वयं करता है, परन्तु तौर-तरीके में अच्छा होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। यदि सूर्य मीन राशि का हो तो जातक में काफी शक्ति होती है और उसकी स्त्रियों से मित्रता रहती है। नेत्रों में पीड़ा होती है। 'फलदीपिका' में लिखा है कि पहले भाव में सूर्य काफी हिम्मत देता है।

चन्द्रमा : यदि कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या अमावस्या का चन्द्रमा पहले भाव में हो, तो जातक बहरा, बुद्धू हो या उसके पांव में खराबी हो। यदि ऐसा चन्द्रमा किसी क्रूर ग्रह के साथ बैठा हो तो जातक अधिक जीवित नहीं रहता और दूसरों के नीचे काम करता है। परन्तु यदि पूर्णिमा का चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घायु और बुद्धिमान होता है। मेष, वृष या कर्क का चन्द्रमा धन, नाम और यश तथा सुन्दरता देता है।

मंगल : जातक हिम्मत वाला, क्रूर, चुस्त और यात्रा करने का शौकीन होता है। उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। सिर में चोट लगने का भय रहे, परन्तु बुढ़ापे में भी जवान दिखता है। यदि मंगल मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु या मकर में ही हो तो बहुत अच्छा फल देता है।

बुध : जातक विद्वान, धनवान, धार्मिक और अच्छे कार्य करने वाला होता है। बुद्धिमान और चुस्त होता है। मिथुन या कन्या का बुध विशेष रूप से अच्छा फल दिखाता है।

बृहस्पति : जातक विद्वान और बुद्धिमान होता है। वह दीर्घायु और समृद्धिवान होता है। उसका स्वरूप मन को प्रसन्न करनेवाला होता है। यदि कर्क, धनु या मीन राशि का बृहस्पति हो तो बहुत अच्छा फल करता है।

शुक्र : जातक स्वरूपवान होता है। वह स्त्रियों में अनुरक्त और गाने-बजाने का शौकीन होता है। उसका जीवन सुखमय होता है। जातक स्त्री, पुत्र से युक्त और धनवान होता है। वृषभ, तुला या मीन राशि का शुक्र अच्छा प्रभाव दिखाता है।

शनि : गरीब, रूक्ष, कठोरहृदय और चालाक, कामी, नीच कर्म करने वाला, बचपन में बीमार रहे, साफ-साफ न बोल पाए, नाक बहती रहे, जवानी में भी बूढ़ा दिखे; परन्तु यदि तुला, धनु या मीन का शनि हो तो उसमें ऊपर बताई गई बातें नहीं होंगी; परन्तु अच्छे गुणों से युक्त होता है और जीवन में बहुत उठता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐसा जातक बुद्धिमान, दृढ़, नये कार्य करने वाला और राजा के समान होता है। मकर या कुंभ का शनि भी अच्छा प्रभाव दिखाता है और जातक जीवन में तरक्की करता है।

राहु : जातक क्रूर, नास्तिक, बीमार, दया-माया से रहित होता है और ऊपरी भाग में बीमारी होती है। परन्तु राहु यदि मेष, वृषभ या कर्क का हो तो दीर्घायु करता है।

केतु : जातक बुरे कार्य करने वाला, कृतघ्न, पीठ पीछे बुराई करने वाला होता है। उसे जीवन में प्रसन्नता नहीं मिलती।

नोट : यदि शुभ ग्रह पहले भाव में बैठे हों या उसे देखते हों तो राहु और केतु का अशुभ प्रभाव नहीं होता अपितु अच्छा प्रभाव होता है। जातक पारिजात में लिखा है कि पहले भाव में सिंह राशि का राहु धन और अच्छी वस्तुएं देता है। मकर या मीन का केतु पहले भाव में पुत्र और अत्यधिक धन देता है।

दूसरा भाव

सूर्य : अत्यधिक खर्च करने वाला, हीरे-जवाहरात और स्वर्ण से युक्त, बोलने में प्रभावशाली, अत्यधिक धन हो, परन्तु उसमें से कुछ हिस्सा सरकार ले ले (कर द्वारा), मुंह या नेत्र में बीमारी हो, यदि सूर्य सिंह राशि के अलावा किसी दूसरी राशियों में हो।

चन्द्रमा : अति कामी, मीठी वाणी वाला, सुन्दर शरीर, दूसरों से जल्दी सीखने वाला, विद्या पढ़ने का शौकीन, समृद्धि वाला होता है। उसका परिवार भी बड़ा होता है।

मंगल : अधिक धन हो परन्तु खर्चा भी अधिक हो। नेत्र, दांत और मुख में बीमारी हो, यात्रा करने का शौकीन, दूकान करे, खेती-बाड़ी या धातुओं का कार्य करे। ऐसा व्यक्ति क्रोधी और कठोर वचन बोलने वाला, अच्छा भोजन नहीं करता।

बुध : अपनी व्यापार-कुशलता और बुद्धिमानी से धन का उपार्जन करता है। अच्छे स्वभाव और तौर-तरीके वाला पुरुष होता है और धनवान होता है।

वृहस्पति : मीठी वाणी बोलने वाला, बोलने में प्रभावशाली और विद्वान, मिलनसार, अच्छा और भरपूर भोजन करने वाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्यधिक धनवान और अत्यधिक ही खर्च करने वाला होता है ।

शुक्र : विद्वान, कामकला में निपुण, जीवन का आनन्द लेने वाला, बहुत धनवान और अपनी बातचीत से दूसरों को मोहने वाला ।

शनि : झूठ बोलने वाला, दूसरे को धोखा देने में तत्पर, चुस्त और यात्रा करने का शौकीन; परन्तु यदि शनि अपनी राशि या उच्च या शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक धन जमा नहीं कर पाएगा। उसके मुंह और नेत्रों में बीमारी हो और राज्य को आर्थिक हरजाना देना पड़े ।

राहु : झगड़ालू, झूठ बोलने वाला, ऐसे जातक का धन चोरी या अविवेकपूर्ण कार्यों में (धन लगाने से) नष्ट हो जाता है।

केतु : मन्दे वचन बोलने वाला, बेकार में दूसरों की बातों को काटता है और अपने कठोर वचनों से शत्रु पैदा करता है, उसका धन चोरों द्वारा चुरा लिया जाता है या नौकरों के द्वारा नष्ट हो।

तीसरा भाव

सूर्य :बुद्धिमान और बहादुर, उसके नौकर और नीचे कार्य करने वाले शैतान होते हैं। जातक धनवान और दार्शनिक विचारों का होता है।

चन्द्रमा : विचारवान और अच्छे कार्य करने वाला परन्तु स्वभाव में कुछ क्रूरता हो, अपने सम्बन्धियों में प्रिय हो परन्तु अधिक धनवान न हो।

मंगल : बुद्धिमान और बहादुर, बलवान और यश प्राप्त करने वाला, अस्त्र धारण करे, सीधा स्वभाव और अच्छे विचार वाला।

बुध : बाहर से नम्र (स्वभाव से या धन की कमी के कारण) परन्तु अन्दर से घुटा हुआ, ऐसा जातक दिखावट करके दूसरों को धोखा देने में तत्पर रहता है। परन्तु यदि मियुन या कन्या का बुध हो तो चरित्र में ये बुराइयां नहीं होती हैं ।

बृहस्पति : कंजूस परन्तु फिर भी उसका धन नाश हो जाए, पत्नी या स्त्रियों के प्रभाव में रहे, अच्छे आचरण वाला नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है।

शुक्र : उसकी वाणी में क्रोध रहे, अपनी पत्नी के प्रभाव में रहे, पापी रहे, धन खर्च करने में कंजूस। तीसरे भाव में शुक्र सूर्य के आगे रहे तो खराब प्रभाव नहीं देता है (सूर्य जिस भाव में हो, उसके आगे के भाव में शुक्र हो)। इस स्थिति में शुक्र बहुत अच्छा प्रभाव दिखाता है। तुला राशि का शुक्र संगीत-प्रेमी बनाता है।

शनि : कम खाना खाता है, धनवान होता है, अच्छे तौर-तरीके वाला और अच्छे परिवार का होता है, बुद्धिमान और बहादुर होता है।

राहु : धनवान और उच्चाभिलाषी।

केतु : धनवान और अच्छे गुणों से युक्त।

चौथा भाव

सूर्य : क्रूर, धनहीन, बुद्धिमान, मानसिक रूप से दुखी, कम प्रसन्नता मिले, परन्तु यदि सूर्य सिंह या वृश्चिक राशि का हो तो अच्छा फल दिखलाता है।

चन्द्रमा : बुद्धिमान, मिलनसार, सुख और आराम की ज़िन्दगी बिताने वाला परन्तु बुढ़ापे में स्थान-परिवर्तन हो, विरासत में धन मिले परन्तु मुकदमेबाजी के बाद। हृदय-रोग से पीड़ित, परस्त्री-गामी।

मंगल : प्रसन्नता से हीन और निराशावादी, अपनी पत्नी या स्त्रियों के प्रभाव में रहे, उसके सम्बन्धी उसे धोखा दें, बहादुर, सवारी से गिरकर चोट लगे, मकान, जायदाद इत्यादि परेशानी के कारण हों। परन्तु यदि मेष, वृश्चिक या मकर का मंगल हो तो खराब प्रभाव नहीं दिखाता है। १, ८, १०,

बुध : विद्वत्ता-प्राप्ति में तत्पर रहे, अधिक धनवान हो परन्तु उसे सम्बन्धियों से प्रसन्नता न मिले।

बृहस्पति : बोलने में प्रवीण, शारीरिक रूप से बलवान, अच्छे स्वरूप वाला, धन और यश वाला होता है, अच्छी और खुशहाल ज़िन्दगी बिताने वाला, परन्तु उसके विचार और रुझान बुरी बातों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में होते हैं।

शुक्र : बुद्धिमान, विद्वान, बोलने में प्रवीण, सुन्दर चेहरे वाला, अच्छा और सुखमय जीवन व्यतीत करे, स्त्रियों के वश में रहे।

शनि : प्रसन्नता से हीन, अत्यधिक दुखी, बुरे विचार वाला, झूठ बोलकर धोखा देने वाला, माता के लिए कष्टकर, बचपन में बीमार रहे।

राहु : पूर्ण प्रसन्न न रहे, अल्पायु, इस भाव में यदि राहु पांचवें या नवें भाव के स्वामी के साथ न हो तो दुःख देने वाला होता है।

केतु : माता से सुख न मिले, मकान, सवारी, जायदाद और पशु नष्ट हो जाएं। यदि केतु के साथ चौथे, पांचवें या नवें भाव का स्वामी हो तो अच्छा प्रभाव दिखाता है।

पांचवां भाव

सूर्य : सन्तान की आयु को कम करे, धनहीन, विदेश में रहने की इच्छा वाला, ढिलमिल स्वभाव का, राज्य से सम्मान मिले।

चन्द्रमा : धनवान, दयावान और धार्मिक कार्यों में खर्च करने वाला, वेदपाठी, धैर्य वाला, पुत्र वाला।

मंगल : यदि मंगल अपने भाव में न हो तो किसी सन्तान को बीमारी या क्षीण आयु। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो मंगल का दुष्प्रभाव कम हो जाता है, वरना पेट में गड़बड़ रहती है। क्रूर, धनवान, यात्रा करने का शौकीन, हिम्मत वाला और चुस्त, ज्यादा धार्मिक न हो।

बुध : नाम, यश और विद्या से युक्त, अच्छी पत्नी और सन्तान से युक्त, धनवान और बलवान, शत्रुओं का नाश करने वाला, पूजा-पाठ और धार्मिक कृत्यों द्वारा अपने कार्यों को पूर्ण करे (मंत्र-तंत्र), उच्च स्थान प्राप्त करे, जैसे मंत्री पद (यदि सूर्य के साथ बुध पांचवें भाव में हो तो अवश्य ही ऊंचा स्थान प्राप्त करता है)।

बृहस्पति : बुद्धिमान, अच्छे कार्य करने वाला, बहुत-से गुणों से युक्त, समृद्धिशाली, परन्तु पुत्र कम हों।

शुक्र : देखने में सुन्दर, अच्छे पुत्र, मित्र और धन वाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सवारी और नौकरों से युक्त, आराम की ज़िन्दगी बिताने वाला।

शनि : घमंडी, दीर्घायु, अत्यधिक चुस्त परन्तु प्रसन्नता से हीन, शत्रु पर विजयी हो, धार्मिक और अच्छा कार्य करे, धन और सन्तान के लिए अच्छा न हो, परन्तु यदि मकर और कुंभ का शनि हो तो अच्छा होगा।

राहु : डरपोक, धनहीन, दूसरे का ध्यान रखने वाला।

केतु : पेट के रोग से निरन्तर परेशान, पानी से डरने वाला, पापी और देखने में बदसूरत, सन्तान गर्भ में ही नष्ट हो जाए।

छठा भाव

सूर्य : जातक घमंडी, धनवान, नाम और यश वाला होता है, राजा से सम्मान मिले, बलवान हो और दुश्मनों पर विजय प्राप्त करे।

चन्द्रमा : कफ-प्रकृति और मोटा, अधिक न खा सकने वाला, काम-कला में कमज़ोर, आलसी, क्रोधवाला, शत्रुओं से युक्त। यदि अमावस्या के बाद का जन्म हो तो अल्पायु, यदि पूर्णिमा का जन्म हो तो दीर्घायु होता है और जीवन में सुख पाता है।

मंगल : जातक बलवान और कार्यकुशल, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करे, पाचनशक्ति अच्छी हो, बहुत-से व्यक्ति उसके नीचे कार्य करें, परन्तु स्वयं भी किसीके नीचे कार्य करने में अधिक सफल रहे, नाम और यश प्राप्त करे।

बुध : शत्रु न हों, बहुत बोलने वाला, पढ़ने-लिखने का शौकीन, स्वभाव में विनम्रता न हो, झगड़ालू, किसी भी सम्बन्धी की याद नहीं करता है।

बृहस्पति : कामी, अधिक बलवान न हो परन्तु फिर भी अपने शत्रुओं पर विजयी हो। परन्तु यदि सिंह या वृश्चिक लग्न हो तो सन्तान के लिए कष्टकर (विशेष रूप से पुत्र के लिए)।

शुक्र : दुश्मनों को दबा देता है, दुखी, नाम में धब्बा लगे, वैवाहिक सुख न मिले, विशेष रूप से उस समय जबकि मेष या वृश्चिक लग्न हो, पर-स्त्रियों से सम्बन्ध रहे।

शनि : हमेशा ही दुश्मनों से पीड़ित रहे, परन्तु अन्त में उनपर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विजय प्राप्त करे, पाचनशक्ति अच्छी रहे, अधिक भोजन करने वाला, धनवान और कामी, गन्दे स्वभाव वाला।

राहु : परिवार का नाम रोशन करे, दीर्घायु, अच्छा जीवन बिताने वाला, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला।

केतु : अच्छा नाम प्राप्त करे, सम्बन्धियों का मददगार, विद्वान, बहुत से अच्छे गुणों से युक्त।

सातवां भाव

सूर्य : बेइज्ज़त किया जाए, स्त्रियों से पीड़ा मिले, बुरी प्रकृति और क्रोध से युक्त, स्त्रियों से दुश्मनी रखने वाला। यदि सूर्य अपनी राशि में न हो तो स्त्रियों की जन्म-कुण्डली में पति से मत-भेद रहता है।

चन्द्रमा : अति कामी और ईर्ष्यालू, पत्नी तथा स्त्रियों के वश में रहे, दयावान, यात्रा करने का शौकीन, जीवन में सुख मिले।

मंगल : पत्नी तथा स्त्रियों से मतभेद या उनके द्वारा कष्ट मिले। यदि कुछ और कारण भी हो (जैसे शुक्र-पीड़ित हो) तो विवाह में सम्बन्ध-विच्छेद हो जाए; लड़ने का शौकीन, विरोधियों के विरुद्ध अस्त्र धारण करे, दवाइयों के कार्यों में लाभ।

बुध : धार्मिक ज्ञान से भरपूर और शुद्ध आचरण वाला, कला में निपुण, हंसमुख और चालाक, पांव में किसी प्रकार की कमज़ोरी या बीमारी रहे, नपुंसक।

बृहस्पति : धर्म, विद्या इत्यादि में पिता से बढ़कर हो, परन्तु पितृभक्त न हो, न ही गुरु की सेवा करे, धैर्यवान, अच्छी पत्नी मिले।

शुक्र : आकर्षक और सुन्दर, अति कामी और काम-कला में निपुर्ण, झगड़ालू, वेश्याओं द्वारा पसन्द किया जाए, पांव में कम-ज़ोरी हो।

शनि : बहुत-सी स्त्रियों से सम्बन्ध हो, परन्तु स्त्रियों के कारण या उनके द्वारा बेइज्ज़त हो, शारीरिक श्रम करना पड़े, बहुत-से लोगों के साथ मिलकर मेहनत का कार्य करे।

राहु : घमंडी, बीमार रहे, अनुचित सम्बन्ध करे, यात्रा में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कष्ट।

केतु : बेवकूफ, आलसी और हमेशा सोने वाला, यात्रा का शौकीन, गन्दी भाषा वाला, पत्नी बीमार रहे। यह क्रूर प्रभाव है और वैवाहिक जीवन को नष्ट कर देता है।

आठवां भाव

सूर्य : पुत्र कम हों, आंखों की रोशनी खराब हो जाए, लड़ने और बातचीत करने में निपुण, अच्छे स्वरूप वाला, हमेशा कमी महसूस करता रहे।

चन्द्रमा : बुद्धिमान परन्तु बीमार रहे,लड़ने का शौकीन,दान करने वाला, खुशमिज़ाज, मानसिक कार्यों में व्यस्त, सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन और सूर्यास्त से सूर्योदय तक रात्रि समझना और कृष्ण पक्ष में जन्म हो और रात के समय शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो दीर्घायु रहे वरना अल्पायु।

मंगल : कम पुत्र वाला, नेत्रों में कष्ट, खर्चीला, कर्ज में डूबा रहे, जननेन्द्रियों में बीमारी, पुराने वस्त्र पहने, बहुत-से व्यक्तियों पर शासन करे। 'जातक पारिजात' में लिखा है कि ऐसा व्यक्ति धनवान हो परन्तु हमारे अनुभव में चाहे अपना कितना भी धन हो, लेकिन वह कर्ज लेता है। कटु वचन बोलने वाला।

बुध : अपने अच्छे गुणों के कारण यश और मान-सम्मान प्राप्त करे, नेता, धनवान और नम्र स्वभाव का, बहुत बोलने वाला।

बृहस्पति : अपने परिवार के मुकाबले नीच कार्य करे, बुद्धिमान, दीर्घायु, अच्छी याददाश्त वाला।

शुक्र : शारीरिक रूप में बलवान, सांसारिक वस्तुओं से भरपूर, धनवान, आराम की ज़िन्दगी जीने वाला, परन्तु अपने कार्यों की वजह से बदनाम। यदि शुक्र वृषभ या तुला का न हो तो पेशाब-सम्बन्धी रोग हों।

शनि : यदि कन्या या तुला लग्न हो तो पुत्र हों वरना सन्तान कम होती है, नेत्रों की बीमारी हो, धनवान और कमज़ोर परन्तु दीर्घायु हो। जल्दी क्रोध करे परन्तु दूसरों का ध्यान रखने वाला, स्वास-सम्बन्धी रोग हो।

सप्तमेश दोखे ९।४।७।८।१२ भावमा मंगल वा पापग्रह ६ मने ... सौख्य प्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहु : देखने में बीमार-सा, जीवन में बहुत-सी परेशानियां आएं, बदनाम हो।

केतु : दूसरों की पत्नी और धन का उपयोग करे, बीमार-सा, अति लोभी, बुरे आचरण वाला; परन्तु यदि आठवां भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा जातक धनवान और दीर्घायु होता है।

नवां भाव

सूर्य : पिता और गुरु से शत्रु भाव रखे, धर्म-परिवर्तन करे, धनवान, बहुत-से पुत्र हों, सुखपूर्ण और अच्छा जीवन बिताए।

चन्द्रमा : पिता और देवता का भक्त, पुत्र, मित्र और सम्बन्धियों से युक्त, धनवान और भाग्यवान, दूसरों का ध्यान रखने वाला, ज्योतिषशास्त्र में रुचि रखे, समुद्र के किनारे रहने का शौकीन, विदेश से धन मिले।

मंगल : पापी, पिता से अनबन या वियोग, नाम और यश प्राप्त करे, धर्म-परिवर्तन करे, धार्मिक विचारों के कारण कठिनाइयां।

बुध : पुत्र और धन से युक्त, प्रसन्न और खुशहाल जीवन जीने वाला, धार्मिक और अच्छे आचरण वाला, विद्वान हो, अच्छे कार्यों के कारण सराहा जाए।

बृहस्पति : धार्मिक और बुद्धिमान, देवता और गुरु की सेवा करने वाला, राजाओं के बराबर पद प्राप्त हो, सोलहवें वर्ष में विदेश यात्रा करे।

शुक्र : धन और बुद्धि से युक्त, अच्छी पत्नी और पुत्रों से युक्त, धनवान, धार्मिक, सांसारिक समृद्धि हो, भक्ति और गाने-बजाने में रुचि हो।

शनि : धनवान, पुत्रों से युक्त, आराम की ज़िन्दगी जीने वाला, दार्शनिक, अपने कार्य में कुशल और उसमें विख्यात, वैवाहिक सुख कम हो। यहां शनि का विशेष प्रभाव रहता है। यदि शनि बलवान हो तो वह व्यक्ति संन्यासी हो जाता है।

राहु : विख्यात और धनवान, धार्मिक कार्यों में रुचि न रखे, अपना स्वयं का धर्म बनाए, दूसरों की बात काटने वाला, पिता से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शत्रुता हो।

केतु : अच्छा बोलने वाला, घमंडी और बहादुर, क्रोध करे, दूसरों की बुराई में तत्पर, पिता से अनबन रहे, धार्मिक स्वभाव न हो।

(हमारा अपना अनुभव है कि कोई भी ग्रह नवें स्थान में धर्म में रुचि अवश्य देता है, परन्तु भिन्न-भिन्न रूप में। जैसे शुक्र देवताओं में भक्ति और श्रीकृष्ण की आराधना, मंगल धर्म-परिवर्तन कराए अथवा हनुमानजी में प्रीति, बुध विष्णु की उपासना, वृहस्पति ब्रह्मा की अथवा जातक भगवान को सशरीर देखने का इच्छुक, शनि संन्यास में रुचि रखने वाला, सूर्य और चन्द्रमा अग्नि और शिव के उपासक तथा, राहु और केतु तंत्र-मंत्र में विश्वास रखने वाले होते हैं। विशेष प्रभाव के लिए 'सारावली' का दसवां अध्याय देखिए।)

दसवां भाव

सूर्य : अच्छे चाल-चलन और अच्छे कार्य करने वाला, विद्वान, बहादुर और बलवान, पिता की ओर से विरासत में धन मिले, उच्च स्थिति प्राप्त हो, प्रसन्न और खुशहाल जीवन हो।

चन्द्र : धार्मिक और उच्च स्वभाव का, धनवान और बुद्धिमान, अपने कार्यों में सफल हो, कला में रुचि रखे, जीवन में सुख और समृद्धि मिले।

मंगल : बहुत धनवान और आराम का जीवन जीने वाला, फौज या पुलिस के कार्यों में सफलता प्राप्त करे, फैक्टरी में कार्य करे, बहुत बहादुर और दुश्मनों के हृदय में भय पैदा करने वाला, अपने कार्यों के कारण विख्यात हो। यदि मेष, वृश्चिक या मकर का मंगल न हो तो पिता के लिए खराब फलकारक होता है। मंगल यहां विशेष रूप से बलवान होता है। उत्तम भाग्य विधाता/

बुध : बहादुर, खुशमिज़ाज, धनवान, विख्यात, विद्वान और राजनीति में निपुण, प्राध्यापक का कार्य करे, बोलने में प्रवीण।

वृहस्पति : अपने कार्यों में सफल हो, धार्मिक और अच्छे आचरण वाला, धनवान और आदर-सम्मान प्राप्त करे, विद्वान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र : खेती या स्त्रियों से धन मिले, जातक को जीवन में ऊंचा स्थान मिले और सुख प्राप्त करे।

शनि : धनवान, समृद्धिशाली, बहुत बहादुर और घमण्डी, कठोर अनुशासक, जीवन में ऐसी ऊंची पदवी मिले जहां से दूसरों को दण्डित कर सके, परिवार का नाम रोशन करे। शनि यदि दशम में उच्च का हो तो धार्मिक कारणों से यश मिले।

राहु : राजनीति में रुचि रखे, जीवन में तेज़ तथा बिल्कुल भी मिलनसार न हो, अन्याय से धन प्राप्त करे, हमेशा लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार रहे।

केतु : यात्रा में रुचि रखे, बलवान, लोगों द्वारा पसन्द किया जाए, दूसरों का मुकाबला करने वाला, कला में निपुण, आध्यात्मिक ज्ञान में रुचि हो।

ग्यारहवां भाव

सूर्य : बहुत धनवान, पत्नी, पुत्रों, नौकरों से युक्त, अच्छा जीवन विताए, राज्य से लाभ मिले अथवा बड़े-बड़े व्यक्तियों से सम्पर्क हो।

चन्द्रमा : समृद्धि हो, जनसाधारण से धन प्राप्त करे, स्त्रियों से और सफेद वस्तुओं से लाभ हो, मानसिक अस्थिरता रहे और बिना वजह के चिन्ता हो, अत्यधिक विख्यात हो।

मंगल : हिम्मती, धनवान, बातचीत में निपुण, अतिकामी, सन्तान को कष्ट हो।

बुध : अपनी व्यापार-कुशलता के कारण धन और यश प्राप्त करे, अत्यधिक धनवान।

बृहस्पति : बहुत धन कमाने वाला, बड़े-बड़े लोगों से मित्रता और उनसे लाभ, बुद्धिमान, विद्वान और विख्यात।

(यदि दिन का जन्म हो और सूर्य ग्यारहवें भाव में हो या रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में हो तो यह लम्बी आयु के लिए अच्छा कारण होता है।)

शुक्र : सिनेमा, संगीत, कला की वस्तुएं, सफ़ेद वस्तुऐ, चांदी, जवाहरात, हाथी दांत, खुशबूदार और उच्च स्तर की वस्तुओं से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेम, स्त्रियों के द्वारा धन प्राप्त करे, यात्रा में रुचि हो, परस्त्री-गामी, आराम की ज़िन्दगी जीने वाला।

शनि : सब प्रकार के सुख भोगने वाला, राज्य, जन साधारण, तेल, लोहे, पेट्रोल, खेती, खानों इत्यादि से लाभ हो, बहुत धनवान।

राहु : अपने कार्य में कुशल, विद्वान और धनवान, सब प्रकार से धन का उपार्जन करे (रिश्वत इत्यादि से भी), बहरा हो (या सुनने में कठिनाई हो)।

केतु : दूसरे लोगों से आदर मिले और पसन्द किया जाए, अच्छे कार्य करे, दूसरों पर शासन करे, विख्यात, सन्तोषी, ज्यादा सुख न हो।

(ग्यारहवें भाव में जितने अधिक ग्रह होंगे, उतना ही धन अधिक होगा।)

बारहवाँ भाव

सूर्य : अच्छे आचरण से गिरे, किसी भी कार्य को लगातार करता रहे जब तक कार्य पूर्ण न हो जाए, नेत्रों में कष्ट, अधिक खर्चा हो, बड़े व्यक्तियों से अनबन हो, जीवन के उत्तरार्द्ध में सफलता अधिक मिले, पांव में खराबी हो, यात्रा करने का शौकीन, पुत्रों से युक्त, जेल जाए।

चन्द्र : विदेश में काफी समय तक रहे, संकुचित मन का, शरीर में कष्ट।

मंगल : जातक के कार्य नीच प्रकार के हों, नेत्रों और आंखों में कष्ट, न्यायालय द्वारा दण्डित किया जाए, कर्ज में डूबा रहे, बेकार मे दूसरों की बातें काटे, स्त्री-पुत्र से सुख न मिले।

बुध : सम्बन्धियों से शत्रुता, अधिक बुद्धि न हो, सीधा आचरण न हो।

बृहस्पति : यात्रा में रुचि, अति धार्मिक न हो (यदि कर्क, धनु और मीन का बृहस्पति हो तो धार्मिक होता है), दूसरों पर दया नहीं दिखाए, अच्छे कार्यों में धन व्यय करे, शत्रुओं को भी मित्र बना ले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र : खेती या स्त्रियों से धन मिले, जातक को जीवन में ऊंचा स्थान मिले और सुख प्राप्त करे।

शनि : धनवान, समृद्धिशाली, बहुत बहादुर और घमण्डी, कठोर अनुशासक, जीवन में ऐसी ऊंची पदवी मिले जहां से दूसरों को दण्डित कर सके, परिवार का नाम रोशन करे। शनि यदि दशम में उच्च का हो तो धार्मिक कारणों से यश मिले।

राहु : राजनीति में रुचि रखे, जीवन में तेज़ तथा बिल्कुल भी मिलनसार न हो, अन्याय से धन प्राप्त करे, हमेशा लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार रहे।

केतु : यात्रा में रुचि रखे, बलवान, लोगों द्वारा पसन्द किया जाए, दूसरों का मुकाबला करने वाला, कला में निपुण, आध्यात्मिक ज्ञान में रुचि हो।

ग्यारहवां भाव

सूर्य : बहुत धनवान, पत्नी, पुत्रों, नौकरों से युक्त, अच्छा जीवन विताए, राज्य से लाभ मिले अथवा बड़े-बड़े व्यक्तियों से सम्पर्क हो।

चन्द्रमा : समृद्धि हो, जनसाधारण से धन प्राप्त करे, स्त्रियों से और सफेद वस्तुओं से लाभ हो, मानसिक अस्थिरता रहे और बिना वजह के चिन्ता हो, अत्यधिक विख्यात हो।

मंगल : हिम्मती, धनवान, बातचीत में निपुण, अतिकामी, सन्तान को कष्ट हो।

बुध : अपनी व्यापार-कुशलता के कारण धन और यश प्राप्त करे, अत्यधिक धनवान।

बृहस्पति : बहुत धन कमाने वाला, बड़े-बड़े लोगों से मित्रता और उनसे लाभ, बुद्धिमान, विद्वान और विख्यात।

(यदि दिन का जन्म हो और सूर्य ग्यारहवें भाव में हो या रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में हो तो यह लम्बी आयु के लिए अच्छा कारण होता है।)

शुक्र : सिनेमा, संगीत, कला की वस्तुएं, सफेद वस्तुएं, चांदी, जवाहरात, हाथी दांत, खुशबूदार और उच्च स्तर की वस्तुओं से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेम, स्त्रियों के द्वारा धन प्राप्त करे, यात्रा में रुचि हो, परस्त्री-गामी, आराम की ज़िन्दगी जीने वाला।

शनि : सब प्रकार के सुख भोगने वाला, राज्य, जन साधारण, तेल, लोहे, पेट्रोल, खेती, खानों इत्यादि से लाभ हो, बहुत धनवान।

राहु : अपने कार्य में कुशल, विद्वान और धनवान, सब प्रकार से धन का उपार्जन करे (रिश्वत इत्यादि से भी), बहरा हो (या सुनने में कठिनाई हो)।

केतु : दूसरे लोगों से आदर मिले और पसन्द किया जाए, अच्छे कार्य करे, दूसरों पर शासन करे, विख्यात, सन्तोषी, ज्यादा सुख न हो।

(ग्यारहवें भाव में जितने अधिक ग्रह होंगे, उतना ही धन अधिक होगा।)

बारहवाँ भाव

सूर्य : अच्छे आचरण से गिरे, किसी भी कार्य को लगातार करता रहे जब तक कार्य पूर्ण न हो जाए, नेत्रों में कष्ट, अधिक खर्चा हो, बड़े व्यक्तियों से अनबन हो, जीवन के उत्तरार्द्ध में सफलता अधिक मिले, पांव में खराबी हो, यात्रा करने का शौकीन, पुत्रों से युक्त, जेल जाए।

चन्द्र : विदेश में काफी समय तक रहे, संकुचित मन का, शरीर में कष्ट।

मंगल : जातक के कार्य नीच प्रकार के हों, नेत्रों और आंखों में कष्ट, न्यायालय द्वारा दण्डित किया जाए, कर्ज में डूबा रहे, बेकार मे दूसरों की बातें काटे, स्त्री-पुत्र से सुख न मिले।

बुध : सम्बन्धियों से शत्रुता, अधिक बुद्धि न हो, सीधा आचरण न हो।

बृहस्पति : यात्रा में रुचि, अति धार्मिक न हो (यदि कर्क, धनु और मीन का बृहस्पति हो तो धार्मिक होता है), दूसरों पर दया नहीं दिखाए, अच्छे कार्यों में धन व्यय करे, शत्रुओं को भी मित्र बना ले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र : सम्बन्धियों से सुख न मिले, बुरे स्वभाव वाला, व्यभिचारी और अपने ऊपर व्यय करने वाला, जीवन में सुख भोगे।

(सारावली के ३४वें अध्याय के ७०वें श्लोक में लिखा है कि यदि बुध, बृहस्पति और शुक्र बारहवें भाव में हों तथा मंगल से न देखे जाएं, तो ऐसा जातक धन का संग्रह करता है। यह इस सिद्धान्त पर आधारित है कि बारहवें भाव में शुभ ग्रह अच्छा फल करते हैं।)

शनि : धन से हीन, उद्वेग रहे, नेत्रों में कष्ट, दांत कम उम्र में ही गिर जाएं, ज्यादा बुद्धिमान न हो, अच्छे आचरण से गिर जाए, झूठ बोलने वाला, नास्तिक, दिखावट के लिए धर्म में रुचि रखे।

राहु : धनवान, अच्छे कार्य करे परन्तु स्वभाव झगड़ालू हो, पांव में कष्ट हो।

केतु : विरासत में मिला हुआ और पूर्वजों का जमा किया हुआ धन नष्ट कर दे, यात्रा में रुचि परन्तु आचरण अच्छा न रहे, धर्म में रुचि और यदि बृहस्पति से सम्बन्ध करे तो मुक्ति हो।

क्रूर ग्रह विशेष रुप से मंगल, शनि और राहु बारहवें भाव में अच्छा फल न दिखाएं। जीवन के किसी भाग में जेल जाना पड़े अथवा रोग के कारण अस्पताल में रहे। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो खराब फल कुछ सीमा तक कम हो जाता है। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि ग्रह किस राशि में बैठा है। यदि अपनी राशि में, मित्र की राशि में या अति मित्र की राशि में, तो उसका प्रभाव अच्छा ही होगा, अर्थात् खराब प्रभाव भी अल्प मात्रा में है। यदि शत्रु राशि में हो तो अत्यधिक खराब फल करे।

जिन पाठकों को अधिक अनुभव नहीं है वे इस बात का ध्यान रखें कि किसी प्रकार का अनुचित सम्बन्ध, व्यभिचार, रिश्वत इत्यादि का फलादेश न करें क्योंकि यदि किसी भी प्रकार शुभ ग्रहों से खराब फल देने वाले ग्रह का सम्बन्ध होगा तो वह अच्छा ही फल देगा। पाश्चात्य देशों में कई विवाह (एक के बाद एक), अनुचित सम्बन्ध इत्यादि का प्रचलन है परन्तु भारत में मध्यम परिवार के लोगों में बहुधा ये बातें नहीं होती हैं। इसीलिए ज्योतिषशास्त्र का नियम है कि देश, काल और पात्र का विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करके ही फलादेश करे। उदाहरण के लिए भारत में पहले (और अभी भी कुछ परिवारों में है) बाल-विवाह का प्रचलन था। बचपन में विवाह का योग आने पर विवाह हो सकता था, परन्तु अब समय के अनुसार इसमें परिवर्तन पड़ गया है इसलिए विवाह का विचार उसी आयु में किया जाए जो परिवार (देश) में प्रचलित है। हमारा निवेदन है कि ग्रहों का फल देश, काल और पात्र के आधार पर ही कहा जाए।

येऽपि ग्रहा धर्मपञ्चाधिपाभ्यां युक्ताश्च दृष्टाश्च सुखप्रदास्ते (लघुपराशरी)
जुन जुन ग्रह नवमेश र पंचमेशाले युक्त छ वा देखेको छ त्यो ग्रहको दशामा सुख र धन दिने हुन्छ।

पञ्चमेशेन युक्तस्य ग्रहस्य शुभदा दशा।
तथा धर्मप्रयुक्तस्य दशा परमशोभना॥ (लघुप-)
पञ्चमेश वा नवमेशाले जुन ग्रह युक्त छ त्यसको दशामा शुभ हुनाको साथै धन दिने हुन्छ।

शुभयुक्तस्य खेटस्य दशा द्रव्यप्रदा भवेत। (लघुप)
शुभग्रहले युक्त पाप ग्रहको दशामा द्रव्य दिने हुन्छ।

निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः।
एकत्रान्यतरो वापि वसेच्चेद्योगकारकौ॥ (ल॰ योग)
केन्द्रेश र त्रिकोणेशको योग कारक संबन्धहरू मध्ये मा धर्मेश र कर्मेशको सम्बन्ध प्रबल योगकारक हुन्छ।

प्रथमः स्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः।
तृतीयस्त्वेकतो दृष्टिः स्थित्यैकत्र चतुर्थकः॥ (लघुप)
ग्रहको स्थान सम्बन्ध भन्दा दृष्टि सम्बन्ध बलवान त्यो भन्दा एक दृष्टि सम्बन्ध बलवान त्यो भन्दा संसर्ग बलवान हुन्छ। सबबाट संसर्ग सम्बन्ध सब भन्दा बलवान देखिन्छ। त्यस्तै सब भन्दा दशमेश बलवान अनी सप्तमेश र त्यसपछी चतुर्थेश बलवान। त्रिकोणेशमा सबभन्दा नवमेश त्यसपछी पञ्चमेश अनी लग्नेश बलवान हुन्छ। पराशरजीको मत प्रथम र नवम स्थानलाई धनस्थान र चतुर्थ र दशम स्थानलाई सुख स्थान भनिन्छ भन्ने छ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—८

फलित विचार

प्रत्येक ग्रह का राशि और भाव में फल दिया जा चुका है, उन सबका निचोड़ निकालना चाहिए, क्योंकि एक ग्रह धन दे सकता है और दूसरा ग्रह धन नाश करने वाला हो तो उनमें से किस ग्रह की प्रधानता रहेगी? जिस जातक की जन्म-कुण्डली का विचार किया जाए, उसके देश, परिवार और समय इत्यादि को ध्यान में रखकर फलादेश किया जाए। दो बच्चों का जन्म एक अस्पताल के दो बराबर के कमरों में एक ही समय में हुआ हो, परन्तु उनमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक समानता नहीं होती है। उनके गुण और आर्थिक क्षमता अलग-अलग धरातल पर होते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि जिस वातावरण में वे पैदा हुए हैं, जो गुण या दोष उन्हें विरासत में मिले हैं, वे अलग-अलग तरह के होते हैं। हम इन शब्दों से शुरू करके जन्म-कुण्डली के विचार के लिए कुछ निर्देश बताते हैं।

पाठक को प्रत्येक भाव का विचार एक के बाद एक करना चाहिए। प्रत्येक भाव शरीर के किसी अंग को, किसी सम्बन्ध को और जीवन के किसी उद्देश्य को दर्शाता है। साधारणतया यदि कोई भाव बलवान है तो उससे सम्बन्धित वस्तुओं में वृद्धि होगी। यहां एक प्रश्न उठता है। दशम स्थान से पिता का विचार करते हैं तथा इससे जीवन में ऊपर उठने का फल भी विचार किया जाता है। परन्तु कई बार देखने में आता है कि किसी व्यक्ति के पिता का स्वर्गवास तो बहुत ही कम उम्र में हो जाता है और इस प्रकार उसको पितृ-सुख नहीं मिला, परन्तु अपने जीवन में अत्यधिक सफलता मिली। या दूसरा उदाहरण लीजिए। दूसरे स्थान से दाहिनी आंख और धन का विचार भी किया जाता है। ऐसा जातक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बहुत धनवान हो, परन्तु नेत्रहीन भी हो सकता है। या एक उदाहरण और देखिए। पंचम स्थान से, बुद्धि, विद्या और सन्तान का विचार किया जाता है। हमारे देखने में आता है कि बहुत-से व्यक्ति ऐसे हैं जिनका बुद्धि का विकास अधिक नहीं, विद्या में भी प्रवीण नहीं, परन्तु उनके कई पुत्र होते हैं।

इन मतभेदों का विचार बाद में किया जाएगा, अर्थात् विभिन्न बातों के फल का एक ही भाव से अलग-अलग प्रकार का परिणाम क्यों होता है? पहले हम इस साधारण सिद्धांत कि यदि कोई भाव बलवान हो तो उस भाव-सम्बन्धी बातें फलीभूत होती हैं और कमज़ोर हो तो उनका अनिष्ट फल होता है। निम्नलिखित बातों से भाव को बलवान समझना चाहिए :

(क) भाव का स्वामी बलवान हो, (ख) भाव बलवान हो (जिस भाव का विचार किया जाए उसमें शुभ ग्रह हो, भाव के स्वामी से देखा जाता हो, उसमें किसी त्रिकोण का स्वामी हो अथवा लग्नेश ही उस भाव में हो), (ग) भाव का कारक बलवान हो। इस अध्याय में आगे हम बताएंगे कि कौन-कौन से ग्रह किन वस्तुओं के कारक होते हैं। पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाता है कि इस संस्कृत शब्द 'कारक' का ध्यान रखें, यह अनेक बार प्रयोग किया जाएगा।

अब हम बताते हैं कि किस प्रकार (क) भाव के स्वामी का, (ख) भाव का और (ग) कारक का विचार किया जाए कि वे बलवान हैं कि नहीं। इनमें से क्रमशः एक-एक को लीजिए।

भाव का स्वामी

निम्नलिखित कारणों से भाव का स्वामी बलवान समझना चाहिए। यदि भाव का स्वामी बलवान हो तो उस भाव का अवश्य ही शुभ फल होगा। यदि स्वामी कमज़ोर हो या पीड़ित हो (यानी पाप-ग्रह के साथ हो, पाप-ग्रह से दृष्ट हो या स्वयं नीच या शत्रु राशि का हो) तो उन भाव सम्बन्धी बातों का शुभ फल नहीं होता या फल पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है।

भाव के स्वामी से हमारा क्या तात्पर्य है, यह पहले बताया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जा चुका है और यहां हम फिर से वताते हैं कि भाव का स्वामी उस राशि के स्वामी को कहते हैं, जो उस भाव में पड़ी हो। उदाहरण के लिए नीचे दी गई जन्म-कुण्डली देखिए :

जन्म-कुण्डली

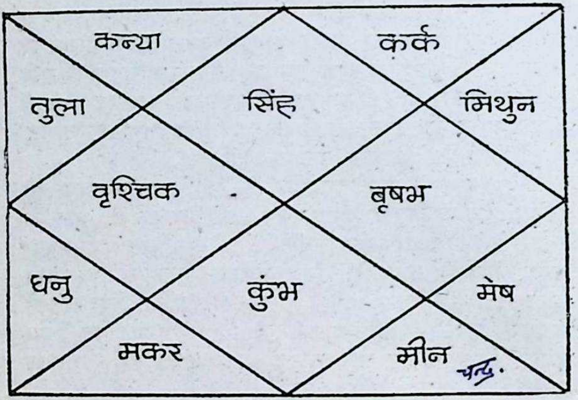

इस जातक का जन्म सिंह लग्न में हुआ, अर्थात् प्रथम भाव में सिंह राशि हुई और सिंह राशि का स्वामी सूर्य है तो प्रथम भाव का विचार सूर्य से किया जाए। दूसरे भाव में कन्या राशि है, इसका स्वामी वुध है तो वुध द्वितीय भाव का स्वामी हुआ। इसी प्रकार शुक्र तीसरे भाव का स्वामी, मंगल चौथे भाव का इत्यादि।

निम्नलिखित बातों से भाव के स्वामी को वलवान समझना चाहिए :

(१) अपने उच्च स्थान या अपनी ही राशि में हो। अपनी राशि में होने से भी जिस भाव में वह राशि है उस भाव का अधिक अच्छा फल होगा। जैसे वृश्चिक लग्न में वृहस्पति धनु या मीन में हो। ये दोनों ही वृहस्पति की अपनी राशियां हैं। किसी भी राशि में होने से वृहस्पति वलवान हुआ और साथ ही द्वितीय और पंचम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थान वलवान होगा। परन्तु धनु राशि में होने से दूसरे भाव में भी हुआ तो पंचम भाव के वजाय द्वितीय भाव का अधिक अच्छा फल देगा। यदि मीन में हो तो पंचम भाव का फल द्वितीय भाव के फल से अधिक अच्छा होगा। यदि ग्रह किसी अति मित्र या मित्र की राशि में हो तो भी वलवान होता है। यदि ग्रह किसी सम राशि में हो (अर्थात् जिस राशि में बैठा हो उसका स्वामी न मित्र हो न शत्रु) तो वह ग्रह न तो वलवान होता है न कमज़ोर, परन्तु हम उसे कमज़ोर ही मानेंगे। यदि वह शत्रु राशि में हो तो कुछ भी अच्छा फल नहीं दिखाता अपितु अच्छे फल को खराब ही करता है। यदि अति शत्रु या नीच राशि में हो तो अति कमज़ोर होता है और अत्यधिक हानिकारक फल करता है।

(२) ऊपर जो कुछ ग्रह की राशि के वारे में कहा गया है, वैसा ही फल नवांश राशि में भी समझना चाहिए।

(३) निम्नलिखित जिससे भली भांति समझ में आ सके इसलिए हम पाठकों को राशीश का तात्पर्य समझाते हैं। ग्रह जिस राशि में बैठा हो उस राशि के स्वामी को हम उसका राशीश कहते हैं। मान लीजिए, चन्द्रमा मीन में है तो बृहस्पति जो मीन राशि का स्वामी है, चन्द्रमा का राशीश हुआ। मान लीजिए, मंगल सिंह के ११° पर हो तो वह कर्क नवांश में हुआ। कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है इसलिए चन्द्रमा नवांश में मंगल का राशीश हुआ। ग्रह वलवान है या नहीं, इसका विचार करने के लिए यदि राशीश, नवांश राशीश दोनों वलवान हुए तो ग्रह वलवान होगा वरना कमज़ोर। इसलिए ग्रह की राशि और नवांश के अतिरिक्त राशीश का भी विचार करना चाहिए।

(४) भाव का स्वामी किसी खराव स्थान में न हो। जन्म लग्न से छठा, आठवां और बारहवां स्थान त्रिक कहलाता है। इस संस्कृत शव्द का अर्थ 'तीन खराव घर' और ज्योतिष में इसका प्रयोग छठे, आठवें और वारहवें स्थान के लिए किया जाता है। ज्योतिषशास्त्र में इसको बहुत ही खराब माना गया है।

'प्रश्न मार्ग' (एक प्राचीन भारतीय ज्योतिष के ग्रंथ में अध्याय चौदह श्लोक उनतीस) में लिखा है, मुनियों ने छठे, आठवें, वारहवें भावों को खराब फल देने वाला कहा है। इन तीनों भावों के स्वामी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी जिन भावों में हों या जिनपर दृष्टि डालें वे भी खराब हो जाते हैं। जिन भावों के स्वामी इनके स्वामी के साथ हों या इनके स्वामी से दृष्ट हों उनका अपना भी अच्छा फल नष्ट हो जाता है। इन तीनों भावों में भी आठवें को सबसे खराब फल देने वाला कहा गया है। यही सिद्धांत 'जातकादेश मार्ग' के दसवें अध्याय श्लोक चौंतीस में कहा गया है।

हमें छठे, आठवें और बारहवें का विचार न सिर्फ लग्न से अपितु जिस भाव का विचार कर रहे हैं उस भाव से भी करना चाहिए (जैसे कर्क लग्न में पांचवें भाव का विचार करना है तो पांचवें भाव से छठा, आठवां और बारहवां मेष, मिथुन और तुला हुआ। इसलिए पंचम भाव सम्बन्धी फल के लिए जन्म लग्न से छठे, आठवें और बारहवें के अतिरिक्त दसवें, बारहवें और चौथे भाव और इनके स्वामी को भी देखना चाहिए)। ग्रह यदि अपने भाव को देखे तो अच्छा फल देता है। इसलिए यदि ग्रह किसी ऐसे स्थान में बैठा हो, जहां से वह अपने भाव को नहीं देख सकता तो अपने भाव का अच्छा फल नहीं करेगा। उदाहरण के लिए कर्क लग्न उदय हो तो कर्क से मीन नवां स्थान हुआ। हमने पहले बताया है कि बृहस्पति मीन का स्वामी है और बृहस्पति अपने स्थान से पांचवें, सातवें और नवें स्थान को पूर्ण रूप से देखता है। इसलिए बृहस्पति यदि कर्क, कन्या या वृश्चिक में हो तो वहां से अपनी मीन राशि को पूर्ण रूप से देखेगा (मीन राशि इस उदाहरण में नवम स्थान है)। जन्म लग्न या जिस भाव का विचार कर रहें हैं, उस भाव से। इन दोनों में जन्म लग्न से जो बलवान हो उसे ज्यादा प्रधानता देनी चाहिए। यदि ग्रह दोनों ही स्थानों से खराब स्थानों में हो तो अत्यधिक खराब फल ही देगा।

इसमें कुछ अपवाद भी हैं :

(१) यह अच्छा होता है यदि (क) छठे भाव का स्वामी आठवें या बारहवें में हो, (ख) आठवें का स्वामी छठे या आठवें में हो, (ग) बारहवें का स्वामी छठे या आठवें में हो,(२) यदि पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, नवें, दसवें और ग्यारहवें भाव के स्वामी किसी केन्द्र या त्रिकोण या ग्यारहवें घर में हों। इन सब भावों के शुभ स्वामी (सप्तम के अलावा) को दूसरे भावों में भी बलवान समझना

१, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहिए।

(५) भाव का स्वामी शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। यदि भाव का स्वामी क्रूर ग्रहों के साथ एक ही राशि में बैठा हो या उनसे दृष्ट हो तो उसका अच्छा फल नष्ट हो जाता है। इसमें भी एक अपवाद है—यदि एक ग्रह केन्द्र का स्वामी हो और दूसरा ग्रह त्रिकोण का स्वामी हो तो उनका एक राशि में होना अच्छा होता है, चाहे उनमें से एक या दोनों ही क्रूर हों। किसी भी भाव के स्वामी का (छठे, आठवें और बारहवें के अतिरिक्त) लग्नेश के साथ बैठना अच्छा फलदायक होता है, चाहे लग्नेश नैसर्गिक शुभ ग्रह हो अथवा क्रूर ग्रह हो।

(६) भाव का स्वामी अस्त न हो। सूर्य कभी अस्त नहीं होता, परन्तु दूसरे ग्रह जब सूर्य के बहुत पास होते हैं तो वे दिखाई नहीं देते। तब उन्हें अस्त कहते हैं। अस्त हुए ग्रह का कुछ अच्छा फल नष्ट हो जाता है। क्रूर ग्रह यदि अस्त भी हो तो अधिक खराब फल करता है। पंचांग में देखने पर पता चल जाएगा कि कोई ग्रह जन्म के समय अस्त है या नहीं।

(७) भाव राशीश क्रूर ग्रहों के मध्य में न हो। मध्य में का मतलब है कि ग्रह के आगे और पीछे क्रूर ग्रह न हो। मान लीजिए, मंगल सिंह राशि के १३° में हो, चन्द्रमा २०° और शनि २८° में हो तो चन्द्रमा को दो क्रूर ग्रहों के मध्य में कहा जाएगा। परन्तु यदि ऊपर दिए गए उदाहरण में सिंह राशि के १५° अंश में बृहस्पति हो तो चन्द्रमा के सबसे नज़दीक शनि और बृहस्पति होंगे और चन्द्रमा क्रूर ग्रहों के मध्य में नहीं कहलाएगा। दूसरा उदाहरण लीजिए—यदि सिंह राशि के १३° से २०° में चन्द्रमा २८° अंश बृहस्पति हो तो चन्द्रमा शुभ ग्रहों के मध्य में कहलाएगा। परन्तु यदि कोई क्रूर ग्रह जैसे शनि सिंह राशि में हो तो चन्द्रमा को शुभ ग्रह के मध्य में नहीं कहा जाएगा क्योंकि चन्द्रमा के सबसे करीब में शनि और बृहस्पति हुए।

अब एक और उदाहरण देखिए। मान लीजिए, मंगल तुला में सूर्य वृश्चिक में और शनि धनु में हो तब भी सूर्य क्रूर ग्रहों के मध्य में कहा जाएगा क्योंकि जिस राशि में सूर्य है उसकी पहली और बाद की राशि में क्रूर ग्रह है। परन्तु इसका उतना खराब फल नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगा जितना कि यदि तीनों ग्रह—एक ग्रह और उसके दोनों सबसे करीब के ग्रह—एक ही राशि में हों। यदि मध्य में आया हुआ ग्रह दो क्रूर ग्रहों के पूर्ण मध्य में हो (मंगल तुला के १३° में, सूर्य वृश्चिक के १८° में और शनि धनु के २३° में तो सूर्य, मंगल और शनि के बीच में ३५° मंगल से और ३५° ही शनि से होगा) तो इसका फल या तो बहुत अच्छा (यदि शुभ ग्रहों के बीच में हो) या बहुत ही खराब (यदि क्रूर ग्रहों के मध्य में हो) होता है।

शुभ ग्रहों के मध्य में होना बहुत अच्छा होता है। इससे ग्रह का शुभ फल बढ़ जाता है। क्रूर ग्रहों के मध्य में खराब फल होता है।

भाव

यह देखने के लिए कि भाव बलवान हैं, निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(१) भाव में शुभ ग्रह बैठे हों और क्रूर ग्रह न हों। किन-किन ग्रहों को शुभ मानना चाहिए और किन ग्रहों को क्रूर, इसके विचार के लिए दो बातों का ध्यान करना चाहिए :

(अ) चन्द्रमा (पांच या उससे अधिक कला का हो अर्थात् शुक्ल पक्ष की पंचमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक), बुध, बृहस्पति और शुक्र शुभ-ग्रह कहलाते हैं; मंगल, शनि, राहु और केतु क्रूर ग्रह हैं।

(ब) छठे, आठवें और बारहवें घर के स्वामी अशुभ समझे जाते हैं जबकि शेष भावों के स्वामी शुभ होते है। मान लीजिए, वृषभ लग्न है। तब बृहस्पति नैसर्गिक शुभ ग्रह होता हुआ भी अच्छा नहीं समझा जाएगा और वृश्चिक में (सातवें भाव में जिससे विवाह का विचार किया जाता है) अशुभ फल देगा, क्योंकि बृहस्पति आठवें भाव का स्वामी होते हुए सप्तम में बैठेगा। मान लीजिए, कन्या लग्न में मंगल सप्तम स्थान में मीन राशि में बैठा हुआ है। यहां मंगल अत्यधिक खराब फल देगा क्योंकि मंगल एक तो नैसर्गिक क्रूर ग्रह है और कन्या लग्न वाले के लिए तीसरे और आठवें घर का स्वामी भी है। जन्म-कुण्डली के फलादेश में इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(२) भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और क्रूर ग्रहों की दृष्टि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न हो। यहां भी नैसर्गिक शुभ ग्रह जो अच्छे भाव के स्वामी हैं, प्रथम श्रेणी में आते हैं और शुभ ग्रह जो अशुभ भावों के स्वामी होंगे, द्वितीय श्रेणी में आते हैं। नैसर्गिक क्रूर ग्रहों की दृष्टि अशुभ फल देने वाली है, परन्तु यदि क्रूर ग्रह स्वयं अच्छे भावों के स्वामी होंगे तो जिस जन्म-कुण्डली का विचार किया जा रहा है उसमें उतना खराब फल नहीं देंगे। परन्तु यदि क्रूर ग्रह अशुभ भावों के स्वामी भी होंगे तो ज्यादा खराब फल देने वाले होंगे। यहां एक अपवाद भी है। यदि किसी भाव का स्वामी चाहे वह शुभ हो या क्रूर, अपने भाव पर दृष्टि डाले तो अच्छा ही फल करता है। लग्नेश की दृष्टि भी हमेशा अच्छा फल करने वाली होती है।

(३) जिस भाव का विचार किया जा रहा है, वह क्रूर ग्रहों के मध्य में हो तो भाव विगड़ जाता है। इसके विपरीत यदि शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो उसका अच्छा फल बढ़ जाता है। मान लीजिए, हम सिंह लग्न में चौथे भाव का विचार कर रहे हैं। वृश्चिक राशि चौथे भाव में हुई। अब यदि बृहस्पति तुला के १३° में हो और बुध धनु के २०° में हो तो चौथा भाव वृश्चिक शुभ ग्रहों के मध्य में होगा। परन्तु यदि ऊपर दिए गए उदाहरण में राहु तुला के २८° में हो तो वृश्चिक शुभ ग्रह के मध्य में नहीं होगा, क्योंकि इसके सबसे करीब में राहु तुला में हुआ न कि बृहस्पति। इस बात का ध्यान भी उसी प्रकार रखना चाहिए, जैसा कि शुभ अथवा अशुभ ग्रहों के बीच में बैठे हुए ग्रहों के बारे में कहा गया है।

(४) मन्त्रेश्वर ने अपनी 'फलदीपिका' के पन्द्रहवें अध्याय के दूसरे, छठे और सातवें श्लोकों में कहा है कि शुभ ग्रह दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, नवें और दसवें भाव में (जिस भाव का विचार कर रहे हों, उस भाव से) शुभ फल को बढ़ाते हैं। किसी भाव से चौथे, पांचवें, आठवें, नवें और बारहवें में क्रूर ग्रह उस भाव को खराब कर देते हैं। किसी भी भाव से तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में क्रूर ग्रह भाव के शुभ फल को बढ़ाते हैं।

'जातकादेशमार्ग' (एक प्राचीन फलित ज्योतिष का ग्रंथ) में लिखा है कि यदि क्रूर ग्रह (क) दूसरे और बारहवें, (ख) चौथे और आठवें, (ग) पांचवें और नवें में हों तो भाव के शुभ फल को नष्ट कर देते हैं और यदि इन्हीं स्थानों में शुभ ग्रह हों तो भाव के शुभ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फल को बढ़ाते हैं !

चन्द्र राशि से भाव विचार

चन्द्र राशि से तात्पर्य है कि जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में हो। भारतीय ज्योतिष में जन्म राशि और लग्न को बराबर की प्रधानता दी गई है। रुद्र ने अपनी संस्कृत टीका 'होरा-शास्त्र' के पृष्ठ २३ पर कहा है कि ५० प्रतिशत प्रभाव लग्न से होता है और ५० प्रतिशत फल चन्द्र राशि से होता है। अपने अनुभव से हमने यह देखा है कि यदि हम सिर्फ लग्न से ही भावों का और ग्रहों का विचार करें तो कभी-कभी जातक के जीवन में फल नहीं मिल पाता। जब हम जन्म राशि से गिनकर भाव का विचार करें तो हमारा निष्कर्ष ज्यादा ठीक बैठता है। यहां चन्द्रमा से दशम में मंगल, केतु और नवम में सूर्य; बुध और शुक्र हैं। लग्न से भी सूर्य,

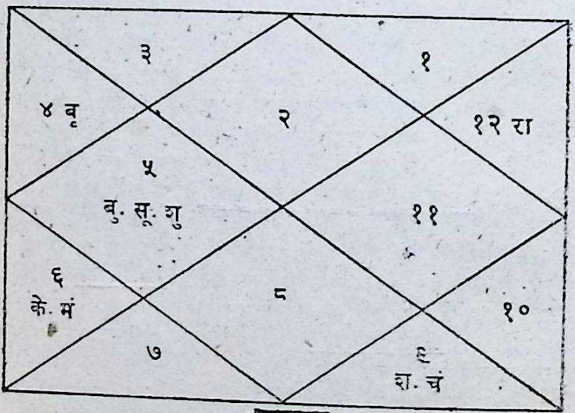

डाक्टर

बुध और शुक्र का एकसाथ बैठना राजयोग है। यह एक प्रसिद्ध डाक्टर हैं। इन्हें पद्मश्री और पद्मभूषण से सम्मानित किया गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इसलिए हमने जो कुछ सिद्धांत भावों के स्वामी और भाव का लग्न से बतलाया है वही सिद्धांत चन्द्र राशि में भी करना चाहिए और जब दोनों प्रकार से : (१) लग्न से, (२) चन्द्र से एक ही फल आए तो उसका फल अवश्य ही होगा अन्यथा इसके विपरीत समझना।

कारक

कारक का विचार भी उतना ही महत्त्व रखता है जितना कि भाव का और भाव के स्वामी का। हमने पहले पृष्ठों में बतलाया है कि कौन-कौन से ग्रह किन-किन बातों के कारक (द्योतक) होते हैं। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका के पन्द्रहवें अध्याय के सत्रहवें श्लोक में बारह भावों के कारक इस प्रकार बतलाए हैं : (१) सूर्य, (२) बृहस्पति, (३) मंगल, (४) चन्द्रमा, और बुध, (५) बृहस्पति (६) मंगल और शनि, (७) शुक्र, (८) शनि, (९) सूर्य और बृहस्पति, (१०) सूर्य, बुध, बृहस्पति और शनि, (११) बृहस्पति (१२) शनि।

इसलिए जब आप प्रथम भाव का विचार करें तो प्रथम भाव के स्वामी के अलावा सूर्य का भी विचार करें।

जब दूसरे भाव का विचार करें तो न सिर्फ दूसरे भाव और उसके स्वामी का अपितु बृहस्पति का भी विचार करें। कारक बलवान है अथवा कमजोर, इसके लिए भी जो सिद्धान्त इतने (१) से (७) तक भावों के स्वामी के लिए पिछले पृष्ठों में बताए हैं, वही सिद्धान्त यहां भी समझने चाहिए। हम उन्हें यहां फिर से नहीं दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त भाव का स्वामी भाव के कारक से छठे, आठवें और बारहवें भाव में न बैठा हो। साधारण तौर से भाव के कारक का उसी भाव में बैठना अच्छा फल नहीं देता। जैसे कि बृहस्पति पुत्रकारक है और पांचवें में बैठे अथवा शुक्र पत्नी का कारक है और सातवें में बैठ जाए (परन्तु यदि ग्रह अपनी ही राशि में हों तो अच्छा और पूर्ण फल ही करेंगे)। इसमें कुछ अपवाद भी हैं—जैसे मंगल और शनि छठे स्थान में, शनि अष्टम में, बृहस्पति नवम में और सूर्य, बुध, बृहस्पति और शनि दशम भाव में हों तो उन स्थानों के कारक होते हुए भी अच्छा फल करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब हम कुछ खास-खास बातों का विचार करने के लिए कुछ सिद्धान्त बताते है—यद्यपि वे हम फलादेश के साधारण सिद्धान्त के रूप में पिछले पृष्ठों में भी बतला चुके हैं।

शरीर

प्रथम भाव से, उसके स्वामी से और प्रथम भाव में जो ग्रह बैठे हों या जिन ग्रहों की उसपर दृष्टि पड़ती हो, शरीर का विचार करना चाहिए। जातक का कद, रूप और शारीरिक अनुपात उसके ऊपर निर्भर करता है। परन्तु यदि चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र पहले स्थान में बैठे हों तो जातक को लावण्यवान बनाएंगे। प्रथम भाव में मंगल गेहुआं रंग देता है, जबकि शनि, राहु और केतु कुछ श्याम वर्ण करते हैं। प्रथम भाव में बुध स्फूर्ति और चंचलता देता है। शरीर का अनुपात प्रथम भाव (लग्न) के स्वामी और जन्म लग्न में जो नवांश हो, उसके स्वामी पर निर्भर करता है।

शरीर के अंग

शरीर के विभिन्न अंगों का सम्बन्ध जन्म-कुण्डली के बारह भावों से (एक से बारह तक) है। शरीर के किस हिस्से का जन्म-कुण्डली के किस भाव से विशेष सम्बन्ध है, यह नीचे दिया जाता है:

भाव	हिस्सा	भाव	हिस्सा
१	सिर	४	दिल
२	चेहरा[1]	५	पेट
३	कंठ, कंधे और बाजू[2]	६	नाभि

१. नेत्र, मुंह और जीभ भी

२. कान भी (पाश्चात्य ज्योतिष में विचार किया जाता है।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७	बस्ति[१]	१०	घुटने
८	जननेन्द्रिय	११	पिंडली
९	जांघ	१२	पैर

दूसरे भाव से छठे भाव तक का शरीर के दाहिने भाग पर अधिकार है जबकि बायां हिस्सा आठवें भाव से बारहवें भाव के अधिकार में है। इसके अतिरिक्त लग्न के दूसरे आधे हिस्से का (अर्थात् १६° से ३०°) तथा सप्तम भाव के पहले आधे हिस्से का (०°—१५°) शरीर के दाहिने भाग पर अधिकार है। बायें भाव पर लग्न के पहले आधे भाग का (०°—१५° तक) और सातवें भाव के दूसरे आधे हिस्से का (१६°—३०°) दाहिने भाग पर अधिकार रहता है।

पाश्चात्य ज्योतिषी गले और गर्दन का विचार दूसरे भाव से करते हैं, परन्तु भारतीय ज्योतिषी गले और गर्दन को तीसरे भाव से देखते हैं।

मेष, वृषभ, कुंभ और मीन छोटी राशियां हैं (इसका तात्पर्य यह है कि इन राशियों का उदय काल दो घंटे से कम

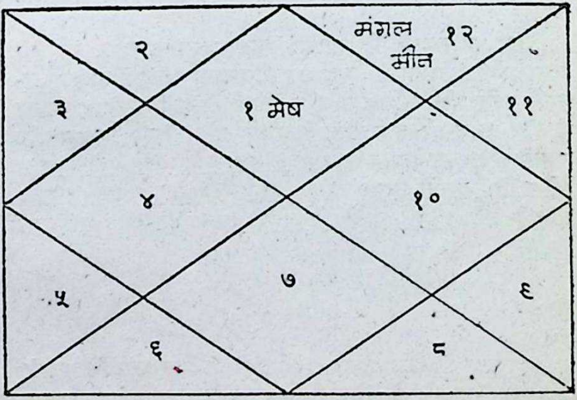

१. नाभि से लिंग मूल तक एक रेखा सीधी खींची जाए और उसके दो भाग किए जाएं तो ऊपर का भाग वस्ति होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है)। मिथुन, कर्क, धनु और मकर मध्यम राशियां हैं, जबकि सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक बड़ी राशियां हैं (इनका उदय काल २ घण्टे से अधिक का होता है)। इन बारह राशियों में प्रत्येक में ३०° होती है। यदि कोई छोटी राशि किसी भाव में पड़े तथा उस भाव का स्वामी स्वयं भी किसी छोटी राशि में हो तो शरीर का वह हिस्सा, जो उस भाव के अधिकार में है, छोटा होगा। मेष लग्न में मंगल मीन राशि में बैठा हो तो मेष और मीन दोनों ही राशियां छोटी हैं तथा मेष से सिर का विचार होता है तो ऐसे जातक का सिर छोटा होगा।

स्वभाव

सामान्य तौर पर किसीका स्वभाव जानने के लिए पूर्ण जन्म-कुण्डली का विचार करना चाहिए (कौन-सा ग्रह किस राशि में है तथा किस भाव में है), परन्तु विशेष बल प्रथम भाव, उसके स्वामी को तथा जो ग्रह प्रथम भाव में हो अथवा उसे देखता हो, देना चाहिए।

सूर्य अक्खड़पन दिखाता है। चन्द्रमा नम्रता का कारक है। मंगल क्रोध दिखाता है। बुध से हंसी-मजाक पसन्द होता है। बृहस्पति बुद्धि और धार्मिक स्वभाव देता है। शुक्र मिलनसार बनाता है और शान-शौकत दिलाता है, जबकि शनि शक्की स्वभाव और गमगीन स्वभाव देता है। इन सब अलग-अलग लक्षणों को, चन्द्रमा की राशि, चन्द्रमा किस भाव में पड़ा है, किस ग्रह या ग्रहों के साथ बैठा है और कौन से ग्रहों से दृष्ट है, देखकर निष्कर्ष निकालना चाहिए।

बीमारियां

क्रूर ग्रह की जिस भाव पर दृष्टि हो या जिस भाव में बैठा हो, उस भाव से शरीर के जिस हिस्से का बोध होता है, उस हिस्से में बीमारी होती है। यह देखने के लिए कि शरीर का कौन-सा अंग किस भाव में आता है, पिछले अध्याय में देखिए। दूसरे और बारहवें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर में क्रूर ग्रह हों अथवा क्रूर ग्रह आठवें और छठे स्थान में हों तो क्रमशः दूसरे और बारहवें भावों पर दृष्टि डालेंगे। इससे आंखों की ज्योति खराब हो जाती है। सूर्य और शुक्र या चन्द्रमा और शुक्र एकसाथ छठे या बारहवें स्थान में बाईं आंख को जबकि आठवें और दूसरे स्थान में दाहिनी आंख की रोशनी को खराब करते हैं। शुक्र विशेष रूप से इन स्थानों में नेत्रों को खराब करता है (शुक्र शुभ ग्रह है, परन्तु नेत्रों के स्थान में बैठने पर अथवा उन-पर दृष्टि डालने से नेत्रों की खराबी करता है)। बारहवें भाव से दांतों को देखते हैं। क्रूर ग्रह यदि पांचवें स्थान में हो या ग्यारहवें स्थान में हो (ग्यारहवें स्थान से पंचम पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे) तो पेट में विकार पैदा करेंगे। अष्टम स्थान में क्रूर ग्रह विशेषकर मंगल जननेन्द्रियों में रोग देते हैं—रक्त-विकार, बवासीर, भगन्दर इत्यादि। चन्द्रमा अथवा चौथा भाव यदि खराब हो तो हृदय रोग होता है। कुम्भ का सूर्य लग्न में हृदय रोग देता है। बुध यदि दूषित हो (क्रूर ग्रहों के स्थानों में बैठा हो, विशेष कर शनि के साथ या शनि से देखा जाता हो) तो स्नायुमंडल के रोग, मानसिक रोग, मानसिक विकार। यदि चन्द्रमा और बुध दोनों ही पीड़ित हों तो पागलपन दें, मंगल से फोड़े-फुन्सी, ज़ख्म, बुखार, चोट लगने से पीड़ा, शुक्र से पेशाब सम्बन्धी बीमारियां, गुर्दे सम्बन्धी रोग। बृह-स्पति से रक्तचाप, अधिक भोजन करने के कारण रोग होते हैं। शनि से शारीरिक तत्त्वों की कमी हो जाने के कारण रोग होता है अर्थात् यथेष्ट मात्रा में भोजन इत्यादि की कमी रहे। आयुर्वेद में बीमारियों का कारण वात, पित्त और कफ का बिगड़ जाना है। किन ग्रहों से कौन-सा तत्त्व देखना चाहिए, यह नीचे बताया गया है।

सूर्य और मंगल से पित्त, चन्द्रमा और शुक्र से वात और कफ दोनों ही, बुध से वात, पित्त और कफ, शनि से वात। राहु शनि के समान है और केतु मंगल के समान (मान लीजिए, जन्म-कुण्डली में शनि रोग का कारक है तो ऐसे व्यक्ति को शनि की महादशा अथवा शनि के गोचर में वात विकार होगा)। यदि कोई ग्रह दूसरे, तीसरे, छठे, आठवें, ग्यारहवें और बारहवें भाव का स्वामी है और कमज़ोर हो अथवा खराब स्थान में बैठा हो, क्रूर ग्रहों से देखा जाता हो और विशेष रूप से देखने वाला ग्रह यदि किसी खराब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर का स्वामी हो तो जातक को, जो ग्रह-पीड़ित हो, उसके तत्त्व के विकार से रोग होगा।

पाठकों को चाहिए कि रोग विचार के लिए मंगल, शनि और छठे भाव तथा छठे भाव के स्वामी का विचार करें। यदि प्रथमभाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में किसी क्रूर ग्रह के साथ बैठा हो तो स्वास्थ्य को खराब कर देता है। इसके अतिरिक्त राशियों से शरीर के हिस्सों का विचार हम पिछले पृष्ठों में बता चुके हैं। उदाहरण के लिए यदि मेष राशि में क्रूर-ग्रह हों और उन-पर क्रूर ग्रहों की ही दृष्टि पड़ती हो तो मस्तक में बीमारी हो या चोट लगे अथवा मस्तिष्क रोग हो।

जिस राशि में लग्न का उदय हो उससे भी रोग का विचार करना चाहिए।

मेष : अत्यधिक श्रम, क्रोध, मस्तिष्क रोग।

वृषभ : अत्यधिक आराम करना, चिन्ता और उद्वेग, जिससे तात्कालिक बीमारियों को बल मिलता है।

मिथुन : चंचल प्रवृत्ति, घबराहट।

कर्क : मानसिक दुर्बलता और तनाव—इसका कारण परिवार के लोग अथवा स्वयं की अपेक्षा दूसरे लोग ही होते हैं।

सिंह : अत्यधिक श्रम हो, इनकी बीमारी का कारण है रक्त-विकार।

कन्या : पाचन-क्रिया की, खराबी जिसके कारण पेट में गैस इत्यादि बने।

तुला : थकान, अंतड़ियों की बीमारियां, किसी भी कारण से गुर्दे की खराबी।

वृश्चिक : चिन्ता के कारण शरीर में आवश्यक तत्त्वों का कम हो जाना। वस्ति में रोग।

धनु : जोड़ों का दर्द, व्यग्रता, चोट लगना।

मकर : डर, बचपन की किसी घटना का जीवन के उत्तरार्द्ध में मानसिक दबाव पैदा करना।

कुम्भ : हृदय-सम्बन्धी रोग, ठंड लगना, नसों में दर्द या विकार।

मीन : अत्यधिक मानसिक तनाव, गर्मी तथा मानसिक और शारीरिक क्षमता का पूर्ण मात्रा में न होना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धन

धन का विचार करने के लिए दूसरे, चौथे, पांचवें, नवें और ग्यारहवें भावों को तथा बृहस्पति को देखिए। यदि ग्रहों में सम्बन्ध हो तथा लग्नेश उनमें से एक हो तो जीवन में धन मिलता है। ज्योतिष में 'सम्बन्ध' का अर्थ है कि यदि 'अ' और 'ब' दो ग्रह हैं और वे (१) अ और ब एक ही राशि में हों, (२) अ और ब एक-दूसरे को परस्पर देखते हों, (३) अ ब के घर में बैठा हो और ब अ के घर में बैठा हो अर्थात् परिवर्तन हो, (४) यदि अ ब की राशि में बैठा हो और ब द्वारा देखा जाता हो अथवा अ ब को पूर्ण रूप से देखता हो और ब अ की राशि में बैठा हो।

पाठक इस 'सम्बन्ध' शब्द का ध्यान रखेंगे, क्योंकि आगे हमने इसका बार-बार विचार किया है। भावों के स्वामी जिनका परस्पर सम्बन्ध होने से धन होता है, वह नीचे बताया गया है :

१ और २, १ और ४, १ और ५, १ और ९, १ और १०; १ और ११, २ और ४, २ और ५, २ और ९, २ और १०, २ और ११, ४ और ५, ४ और ९, ४ और १०, ४ और ११, ५ और ९, ५ और १०, ५ और ११; ९ और १०, ९ और ११, १० और ११।

ये ग्रह भाव और राशि में जितने बलवान हों तथा जितने अधिक शुभ ग्रहों से दृष्ट हों, उतना ही अधिक धन देते हैं।

गरीबी

निम्नलिखित भावों के स्वामियों में यदि परिवर्तन हो, एक ही राशि में बैठे हों, या दूसरे को पूर्ण रूप से देखते हों तो ऐसा जातक गरीब (धनहीन) होता है।

१ और ६, २ और ६, ३ और ६, ४ और ६, ५ और ६, ७ और ६, ८ और ६, ९ और ६, १० और ६, ११ और ६, १२ और ६, ८ और १२, १ और १२, २ और १२, ३ और १२, ४ और १२, ५ और १२, ७ और १२, ९ और १२, १० और १२ तथा ११ और १२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किसी भी जन्म-कुण्डली में सिर्फ अच्छे या खराब सम्बन्ध ही हों, ऐसा नहीं होता है। इसलिए पाठकों को तारतम्य से निष्कर्ष निकालना चाहिए। कभी ऐसा भी होता है कि जीवन के किसी भाग में ऐसे ग्रह की दशा हो, तब धन रहता है। परन्तु दूसरे भाग में अशुभ ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा पर धन का नाश हो और निर्धनता रहे। यह जानने के लिए कि दशा-अन्तर्दशा का क्या फल होगा, दसवें अध्याय को देखें।

यदि चन्द्रमा, शुक्र और बृहस्पति कमजोर हों या क्रूर ग्रहों से सम्बन्धित हों, तब भी धन की कमी रहती है। ११वां भाव लाभ-स्थान है, दूसरा भाव जमा किया हुआ धन, नवम स्थान भाग्य से प्राप्त धन और चौथा भाव ज़मीन-जायदाद इत्यादि को बताता है। पहले और दूसरे भाव में शुभ ग्रह हों तो धन आता है। ग्यारहवें भाव में जो भी ग्रह होगा, चाहे शुभ या क्रूर, धन देता है। १२वें भाव में शुभ ग्रह खराब फल नहीं दिखाते हैं परन्तु क्रूर ग्रह धन का नाश करते हैं। दूसरे भाव में क्रूर ग्रह (यदि छठे आठवें और बारहवें भाव के स्वामी हों तो विशेष) धन को नष्ट कर देते हैं। (हमारा अपना अनुभव है कि यदि मंगल दूसरे स्थान में हो तो वह व्यक्ति अपने पराक्रम से धनवान बन जाता है, परन्तु जीवन के किसी भाव में उस धन के कारण क्लेश उत्पन्न हो या कर-अधिकारियों द्वारा परेशान किया जाए।)

अचल सम्पत्ति

अचल सम्पत्ति के विचार के लिए मंगल, चौथे भाव और चौथे भाव के स्वामी का विचार करते हैं। यदि चौथा भाव कमजोर हो और आठवां भाव बलवान हो तो जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को बेच देता है और नया घर बनाता है। यदि पहले भाव का स्वामी चौथे भाव के स्वामी के साथ बैठा हो (विशेष रूप से चौथे ही भाव में) तो अचानक अचल सम्पत्ति दिलाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाणी

दूसरे भाव और बुध से बोलने में प्रवीणता और बातचीत करने की क्षमता का पता चलता है। यदि बुध और दूसरा भाव दोनों ही बलवान हों और शुभ ग्रहों से सम्बन्धित हों तो बातचीत करने की क्षमता होती है। यदि शुभ ग्रह दूसरे भाव में बैठे हों या उसे देखते हों तो मीठी वाणी और मिलनसार स्वभाव देते हैं जबकि क्रूर ग्रह जातक को कठोर वचन बोलने वाला बनाता है। अष्टम स्थान में यदि बुध बैठा हो तो दूसरे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा—ऐसा जातक अत्यधिक बोलता है।

भाई और बहन

तीसरे भाव से और इसके कारक मंगल से भाई और बहन का विचार किया जाता है। यदि तीसरा भाव और इसका स्वामी बलवान हों परन्तु मंगल पीड़ित हो तो भाई-बहन से सुख साधारण रहता है। यदि मंगल स्वयं बलवान हो परन्तु तीसरा भाव कमज़ोर हो तो भी साधारण सुख ही बताता है। यदि दोनों ही कमज़ोर हो तो भाइयों से अच्छे सम्बन्ध नहीं रहते हैं। तीसरे भाव में क्रूर ग्रह पराक्रम में वृद्धि करते हैं, परन्तु भाई-बहनों की आयु को घटाते हैं तथा उनसे मतभेद रहे। पुरुष ग्रह तीसरे भाव में बैठें या उसे देखें तो अधिक भाई होंगे। स्त्रीकारक ग्रह या नपुंसक ग्रह बहनें ज्यादा देते हैं। (ग्यारहवें भाव से भी बड़े भाई-बहन का विचार करना चाहिए। शनि यदि नवम-स्थान में बैठा हो या अष्टम भाव में मंगल तो ग्यारहवें और तीसरे दोनों ही स्थानों को देखेगा और जीवन के किसी काल में भाइयों से धोखा मिलेगा। सप्तम में बृहस्पति भी ग्यारहवें और तीसरे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह भाइयों से मधुर सम्बन्ध रखेगा।)

आगे एक विख्यात पुरुष की जन्म-कुण्डली है। इसमें तीसरे और ग्यारहवें दोनों भावों पर शनि की दृष्टि है। मंगल भी पूर्ण रूप से ग्यारहवें भाव को देखता है। इनको अपने भाई के कारण आर्थिक हानि हुई। छठे स्थान में बृहस्पति है। इन्हें अपने नाना से

 माता को पिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-कुण्डली

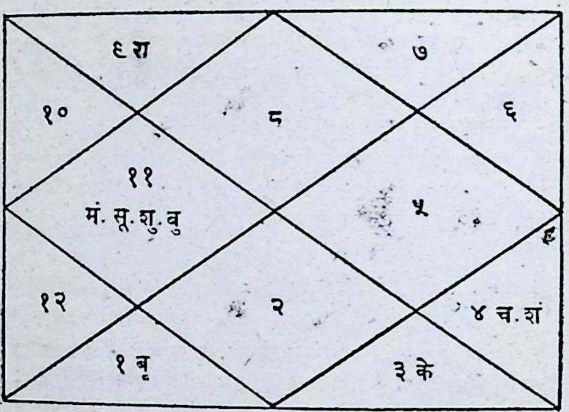

विरासत में लाखों रुपये की आय देने वाली अचल सम्पत्ति मिली। चन्द्रमा और शनि यहां राजयोग बनाते हैं। जीवन के उत्तरार्द्ध में इन्हें राजनीति में विशेष पद प्राप्त होगा।

माता

चन्द्रमा और चौथे भाव से माता का विचार किया जाए। यदि दोनों ही दूषित हों तो माता की आयु को क्षीण कर देते हैं। यदि क्रूर ग्रह चौथे भाव में बैठे हों तो माता से सम्बन्धों को बिगाड़ते हैं। ऐसा ही उस समय भी होता है जब चन्द्रमा अशुभ स्थानों में हो अथवा क्रूर ग्रहों से सम्बन्धित हो। इसके अतिरिक्त पहले और चौथे भाव के स्वामियों के सम्बन्ध को भी देखना चाहिए। (एक-दूसरे के मित्र हैं या एक-दूसरे से किस भाव में बैठे हैं। एक-दूसरे से छठे-आठवें हों तो खराब सम्बन्ध करते हैं।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाहन

चौथे भाव और शुक्र से सवारी का विचार किया जाता है। किसी व्यक्ति के पास मोटर होगी अथवा साइकिल होगी, इसमें इस वात का विचार करना चाहिए कि उसका धन-स्थान या उसका सामाजिक स्तर क्या है। कुछ व्यक्तियों के लिए वर्ष में एक या दो गाड़ियां खरीद लेना साधारण-सी वात है और कुछ लोगों के लिए तो विलकुल ही नामुमकिन। इसलिए धन भाव का विचार भी करना चाहिए।

मित्र

पाश्चात्य ज्योतिष में ग्यारहवें भाव से मित्र का विचार किया जाता है, परन्तु भारतीय ज्योतिष में बुध और चतुर्थ भाव से मित्र का विचार करते हैं। शुक्र का विचार भी करना चाहिए, क्योंकि जन्म-कुण्डली में दूसरों से सहयोग कैसा रहेगा (विशेष तौर से स्त्रियों के साथ), वह शुक्र ही वताएगा। यदि लग्नेश बलवान हो और अच्छे स्थान में वैठा हो तथा शुभ ग्रह से सम्वन्धित हो तो ऐसे जातक का बड़े-वड़े व्यक्तियों से सम्पर्क होता है और यदि लग्नेश कमज़ोर हो और अच्छे स्थान में न वैठे तथा कमज़ोर क्रूर ग्रहों से सम्बन्धित हो तो अपने मुकावले में छोटे व्यक्तियों से मित्रता करता है। उसके मित्र भी विश्वास करने योग्य नहीं होते।

सुख

जीवन में अच्छे घर और प्रसन्नता का विचार चौथे भाव से किया जाता है। यदि लग्नेश और चौथे भाव बलवान हों, शुभ ग्रहों से सम्वन्धित हों तो जातक को प्रसन्नता मिलती है। क्रूर ग्रह पहले भाव में वैठा हो, पहले भाव के स्वामी को देखता हो और चन्द्रमा पर दृष्टि डाले तो ऐसा व्यक्ति जीवन में दुखी और हमेशा असन्तुष्ट रहता है। यदि शुक्र वलवान हो तो ऐसे व्यक्ति को जीवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में आनन्द मिलता है, जिससे प्रसन्नता का आभास होता है। शुक्र के दोषी होने में जीवन में भोग-विलास की कमी होती है। यद्यपि ऐसे जातक के पास धन और सामर्थ्य दोनों ही होते हैं। इसके अतिरिक्त अच्छी महादशा में प्रसन्नता रहती है और अशुभ महादशा में दु:ख मिलता है। (दशा-अन्तर्दशा के लिए कृपया दसवें अध्याय को देखें।)

विद्या

पांचवें भाव और उसके स्वामी से विद्या का विचार किया जाता है। बृहस्पति से ज्ञान और बुध से बुद्धि का विचार करते हैं। इन दोनों ग्रहों का, पांचवें भाव में बैठे हुए ग्रहों का तथा जो उन्हें देखे इन सबका विचार करना चाहिए। पांचवें भाव के स्वामी का बल विचार भी करना चाहिए। दक्षिण भारत में चौथे भाव से विद्या का विचार करते हैं।

सन्तान

पांचवें भाव, उसके स्वामी और बृहस्पति से संतान का विचार किया जाता है। पांचवें भाव में यदि क्रूर ग्रह बैठे या उसे देखे तो संतान या तो नष्ट हो जाती हैं या उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। यदि लग्नेश और पांचवें भाव के स्वामी परस्पर मित्र हैं, एक-दूसरे को देखते हैं या एकसाथ बैठे हों, अति मित्र हों, तो जातक और उसके बच्चों में अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यदि अति शत्रु हों या एक-दूसरे से छठे-आठवें में बैठे हों तो सन्तान से सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। या ऐसे व्यक्ति के बच्चे अलग रहते हैं। यदि पांचवें और सातवें दोनों ही भावों में क्रूर ग्रह हो तो सन्तान के लिए अधिक खराब फल होता है।

श्रील स्वामी हंसदूत की जन्म-कुण्डली के पांचवें और सातवें दोनों ही भाव पीड़ित हैं। इनके पुत्र अवश्य हुआ, परन्तु नष्ट हो गया। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा और बुध भी पीड़ित हैं। संन्यास योग भी है। यह अपना सर्वस्व त्यागकर संन्यासी हो गए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म लग्नम्

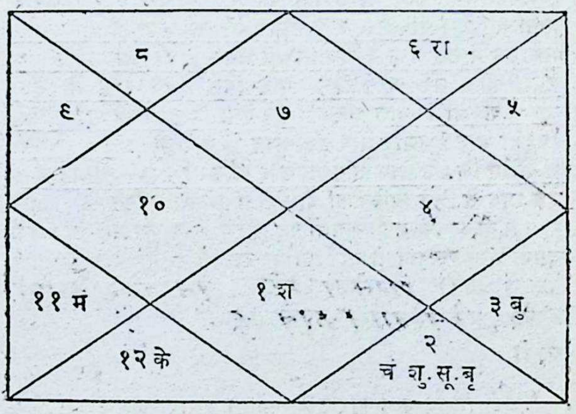

सट्टे से लाभ

सट्टा, घुड़दौड़, लॉटरी, जुआ, अचानक धन-लाभ (विरासत के अतिरिक्त)—इन सबका विचार पांचवें भाव और उन सबके स्वामी से करना चाहिए। परन्तु यह देखें कि धन होगा कि नहीं? यदि पांचवां घर बलवान हो, शुभ ग्रह से दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रह वहां बैठा हो, पांचवें घर का स्वामी भी बलवान हो, दूसरे या ग्यारहवें भाव में बैठा हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को अचानक धन-लाभ होता है। परन्तु यदि उसके विपरीत हो, जैसे पांचवां भाव और पांचवें भाव का स्वामी अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित हों या बारहवें भाव में बैठे तो सट्टे में नुकसान होता है। चन्द्रमा और राहु पांचवें भाव में सट्टा करने की तीव्र रुचि प्रदान करते हैं।

शत्रु

शत्रुओं का विचार छठे भाव; इसके स्वामी, मंगल और शनि से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया जाता है। यदि ये बलवान हों तो साधारणतया शत्रु पर विजय मिलेगी, परन्तु इनके साथ लग्न और लग्नेश को बलवान होना चाहिए। यदि लग्न और लग्नेश तो कमज़ोर हों और इनके मुकाबले में छठे भाव का स्वामी बलवान हो तो जीवन में शत्रु हमेशा ही परेशान करते रहेंगे। यदि मंगल बलवान है तो ऐसा बालक शत्रुओं का नाश कर देता है। ऐसा ही शनि भी करता है। (पहला भाव कमज़ोर और छठा भाव बलवान हो तो जन्म-कुण्डली में देखिए कि छठे भाव के मुकाबले में कौन-सा भाव बलवान है। उस भाव से जिस व्यक्ति का बोध होता हो उस व्यक्ति की सहायता से ही जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकेगा। जैसे दसवां भाव बलवान हो तो पिता या राज्य की सहायता से शत्रु परास्त होंगे।) लग्नेश छठे भावमा छ भने शत्रु हमेशा ही परेशान करते रहेंगे।

पत्नी

शुक्र, सप्तम भाव और उसके स्वामी से पत्नी का विचार करें। बलवान शुक्र सुख और आनन्द देता है। सप्तम भाव से स्त्री-सुख का विचार भी करते हैं। यदि शुक्र, सातवां भाव और इसका स्वामी ये तीनों ही कमज़ोर हों तो ऐसे व्यक्ति को वैवाहिक सुख नहीं मिलता है। स्त्रियों से आनन्द प्राप्त होगा कि नहीं, इसके लिए बारहवें भाव का विचार करना चाहिए। बारहवें भाव में शुक्र आनन्द देता है। यदि पहले भाव का स्वामी सातवें भाव के स्वामी से कमजोर हो तो जातक का विवाह अपने परिवार से अच्छे परिवार में होता है। पहले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें भाव में क्रूर ग्रह बैठे हों तो ऐसे जातक की पत्नी का समय से पहले ही सम्बन्धविच्छेद हो जाता है। यदि इसी प्रकार के ग्रह दोनों कुण्डलियों में हों तो इसका अशुभ फल नहीं होता है। पति का विचार करने के लिए भी ऊपर दिए गए सिद्धान्तों से निष्कर्ष निकालें। इसके साथ ही बृहस्पति का भी विचार करें। बृहस्पति पति का कारक है।

१ शुक्र २ सप्तमस्थान ३ सप्तमेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयु

प्राचीन ग्रन्थों में आयु का निर्णय करने के लिए विशेष गणनाएं और सिद्धान्त बतलाए गए हैं परन्तु उन सबका इस पुस्तक में देना सम्भव नहीं है, इसलिए पाठकों को नीचे दिए गए सिद्धान्तों (जिनसे अच्छी आयु का पता चलता है) पर ध्यान देना चाहिए :

(१) लग्न और लग्नेश दोनों बलवान हों और शुभ ग्रहों से देखे जाते हों।

(२) शुभ ग्रह बलवान हों और केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हों।

(३) क्रूर ग्रह तीसरे, छठे और ग्यारहवें में हों।

(४) अष्टमेश बलवान हो परन्तु लग्नेश से अधिक नहीं। अष्टमेश शुभ ग्रहों के साथ या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।

(५) आठवें भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़े।

(६) चन्द्रमा बलवान हो, शुभ ग्रह के साथ हो अथवा शुभ ग्रहों से देखा जाता हो। यदि चन्द्रमा कमजोर और दूषित हो तो बचपन में मृत्यु को प्राप्त होता है अथवा बचपन में बीमार रहे।

(७) अष्टमेश लग्न से तीसरे भाव में या लग्न से आठवें भाव में शनि दीर्घायु करता है। (८) केमद्रुमयोग पर्नो को आगे पूर्णचन्द्र हो

आयु कब पूर्ण होगी (मृत्यु का समय) इसका ठीक-ठीक निर्णय करना अनुभवी ज्योतिषियों के लिए भी कठिन है। परन्तु यदि ऊपर दिए गए सिद्धान्तों को ध्यान में रखें तो पाठकों के लिए यह निर्णय करना आसान रहेगा कि किसी जातक की अल्पायु, मध्यायु या दीर्घायु होगी। ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा से मृत्यु का समय कब होगा, यह हम दसवें अध्याय में बताएंगे। (अच्छे कार्य करने से, धार्मिक कार्यों से, खाने-पीने का ध्यान रखने से आयु बढ़ती है और बददुआओं से आयु कम हो जाती है। मान लीजिए, किसी व्यक्ति को अत्यधिक शराब पीने की आदत है तो जन्म-कुण्डली में दीर्घायु योग भी मध्यायु में बदल जाएगा और मध्यायु अल्पायु में।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विरासत

विरासत में धन इत्यादि का लाभ होगा कि नहीं, इसके लिए पहले यह देखिए कि जातक के सम्बन्धियों में से क्या कोई धनवान भी है जिससे जातक को धन मिलने की आशा हो। अधिकतर लोग माता-पिता, पति-पत्नी या नजदीकी रिश्तेदारों से, जिनके वे वारिस हैं, धन प्राप्त करते हैं। परन्तु यदि यह लाभ साधारण ही है तो जन्म-कुण्डली में शायद इसका योग न मिले। अष्टम भाव और उसके स्वामी से विरासत का (जो विरासत कहलाने योग्य हो) आभास होगा। यदि ये दोनों ही बलवान हों तो विरासत में धन मिले। अष्टम भाव का स्वामी दूसरे/ग्यारहवें भाव में या दूसरे/ग्यारहवें भाव का स्वामी बलवान हो और आठवें भाव में बैठे या शुभ ग्रहों की दृष्टि आठवें भाव और उसके स्वामी पर हो, तो विरासत में धन इत्यादि का लाभ होगा।

धार्मिक स्वभाव

कुछ व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। कुछ व्यक्ति नास्तिक होते हैं। यह बहुत कुछ देश और समय पर निर्भर करता है। कम्युनिस्ट देशों में अधिकतर लोग भगवान् पर विश्वास नहीं करते हैं। भारतवर्ष के लोग स्वभाव से धार्मिक होते हैं। इन सबका ध्यान रखते हुए ही नवें भाव से धर्म और पांचवें भाव से भक्ति का निर्णय किया जाए। बृहस्पति धर्म का कारक है। यदि ये सब बलवान हों तो जातक धार्मिक होगा। नवें भाव में शनि और राहु बैठे हों तो ऐसा जातक धार्मिक (या दार्शनिक प्रकृति का) होता है। शनि की दृष्टि से भी ऐसा ही होता है। लग्न, तीसरे, पांचवें या नवें भाव में बृहस्पति बैठे या चन्द्रमा-गुरु एकसाथ हों या बृहस्पति चन्द्रमा से नवें भाव को देखे तो ऐसे जातक का धार्मिक स्वभाव होगा। नवें या दसवें भाव में उच्च का शनि धर्म के कार्य में बहुत मान-सम्मान दिलाता है।

(१) दशम के उच्च का शनि, (२) नवमेश और दशमेश का नवम में एकसाथ बैठना राजयोग भी है। श्रील ए० सी० भक्ति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म लग्नम्

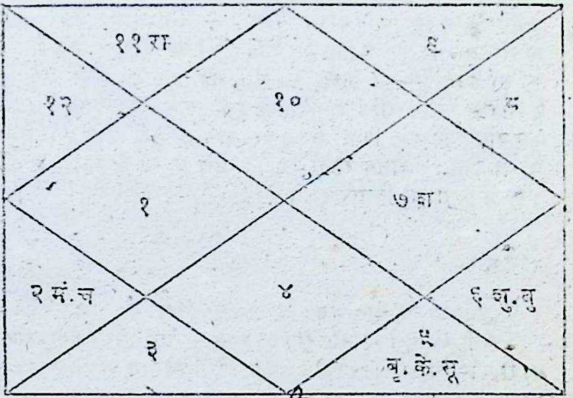

स्वामी प्रभुपाद.

वेदान्त स्वामी प्रभुपाद ही हरे रामा हरे कृष्णा के संस्थापक थे।

विदेश यात्राएं

विदेश यात्रा का विचार नवें और बारहवें भाव से किया जाता है। नवें भाव में शुभ ग्रह बैठे हों तो विदेश और विदेशियों से लाभ होता है। यदि बारहवें भाव का स्वामी नवें में अथवा नवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में हो तो ऐसा जातक विदेश जाता है। अष्टम भाव में शुभ ग्रह बलवान होकर बैठे तो समुद्र पार के देशों से लाभ होता है।

पिता

सूर्य और दशम भाव से पिता का विचार करते हैं। दसवां भाव और इसके स्वामी तथा सूर्य बलवान हों तो पिता दीर्घायु होता है। दसवें भाव में क्रूर ग्रह हो या उसे देखे अथवा दशमेश-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीड़ित हो या सूर्य क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो, तो पिता की आयु को क्षीण करते हैं (जातक का अपने पिता से मतभेद रहता है)। लग्नेश और दशमेश के परस्पर सम्बन्ध से जातक और उसके पिता के सम्बन्धों का पता चलता है। यदि दोनों एक-दूसरे से छठे-आठवें हों तो पिता-पुत्र में अच्छे सम्बन्ध नहीं होते हैं। तुला राशि में क्योंकि सूर्य नीच राशि का होता है इसलिए तुला के सूर्य में जन्मे हुए बालक के अपने पिता से अच्छे सम्बन्ध नहीं होते (या ऐसा जातक पिता से अलग रहता है)। दक्षिण भारत के ज्योतिषी नवें भाव से पिता का विचार करते हैं।

व्यवसाय

व्यवसाय को चार मुख्य भागों में बांटा जा सकता है—(१) खेती-बाड़ी, (२) नौकरी, (३) स्वतन्त्र कार्य और (४) दुकानदारी और व्यापार। प्राचीन भारत में व्यवसाय वंश-क्रमानुगत होता था। अब ज्यादातर लोग तरह-तरह के कार्यों को अपना रहे हैं, परन्तु तब भी व्यवसाय का निर्णय करने के लिए वंश का, योग्यता और रुझान का तथा पृष्ठभूमि का ध्यान रखना चाहिए।

खेती यदि चौथे भाव या उसके स्वामी का दूसरे, नवें अथवा ग्यारहवें भाव के स्वामी से कुछ भी सम्बन्ध हो तो ऐसे जातक को खेती के कार्य में सफलता मिलेगी। शुक्र से गीली ज़मीन और शनि से खेती का विचार करते हैं। भारतीय पुराणों में मंगल को 'भूमिपुत्र' कहा गया है। इसलिए इन सबका विचार करना चाहिए।

नौकरी नौकरी का विचार तीसरे, छठे और दसवें भाव और इनके स्वामियों से किया जाता है। लग्नेश यदि तीसरे या छठे भाव में हो तो नौकरी की तरफ झुकाव रहेगा। तीसरे भाव में बैठे हुए ग्रह भी ऐसा ही करते हैं। तीसरे भाव का स्वामी या छठे भाव का स्वामी दसवें या ग्यारहवें भाव में हो तो नौकरी से लाभ मिलता है।

हमने बहुधा देखा है कि वृश्चिक लग्न या वृश्चिक राशि वाले नौकरी में सफल होते हैं। लग्न तीसरे और दसवें भाव में मंगल हो या मंगल किसी भी भाव में बलवान हो तो ऐसा जातक सेना अथवा पुलिस में (जहां हथियार आदि का उपयोग होता है) कार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करता है। कभी ऐसा कार्य करता है, जहां लोहे की ढलाई, आग, बिजली का काम हो।

व्यापार दुकानदारी, व्यापार या स्वतंत्र कार्य, जैसे डॉक्टर, वकील इत्यादि के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। जिस जातक का सातवां भाव कमज़ोर हो, अथवा सप्तमेश-पीड़ित हो, उसे साझेदारी में व्यवसाय नहीं करना चाहिए।

साधारण तौर से नवें भाव, दसवें भाव और इनके स्वामी बलवान हों तो जातक को अपने व्यवसाय में अच्छा स्थान मिलता है। राजनीति के लिए सूर्य बलवान होना चाहिए। लोगों के प्रतिनिधित्व के लिए (चुनाव में सफलता के लिए, जहां जनता का समर्थन चाहिए, चन्द्रमा बलवान होना चाहिए) सूर्य से बड़े-बड़े व्यक्तियों का विचार और चन्द्रमा से जनसाधारण का विचार किया जाता है।

शुभ योग

साधारण नियम बताने के बाद हम अब जन्म-कुण्डली के कुछ 'योग' बताते हैं। योग से मतलब दो या अधिक वस्तुओं का जोड़ (यहां दो या दो से अधिक ग्रह जब सम्बन्धित हों) है। दूसरा शब्द 'राजयोग' है, जिसका मतलब दो या अधिक ग्रहों के योग से है जिसके द्वारा जातक जीवन में उच्च स्थान प्राप्त करता है।

(१) निम्नलिखित भावों के स्वामियों में सम्बन्ध हों, जैसे— १. १ और ५, २. १ और ९, ३. १ और ४, ४. १ और ७, ५. १ और १०, ६. ४ और ५, ७. ४ और ९, ८. ५ और ७, ९. ५ और १०, १०. ७ और ९, ११. ९ और १०, तो यह बहुत अच्छे राजयोग कहलाते हैं। परन्तु यदि तीसरे, छठे, आठवें और ग्यारहवें भाव के स्वामियों के साथ भी सम्बन्ध करें तो राजयोग का फल नहीं होता है। सम्बन्ध से हमारा क्या तात्पर्य है? देखें पारिभाषिक शब्दावली में नम्बर ४६।

मेष लग्न वाले जातक के लिए मंगल और शनि का योग (पहले और दसवें भावों के स्वामी) अच्छा राजयोग है, परन्तु मंगल और शनि दोनों क्रूर ग्रह पंचम स्थान में बैठने से संतान होने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की सम्भावना को नष्ट कर देंगे (पांचवें भाव से संतान का विचार होता है)। इसलिए एक योग कुछ कारणों के लिए तो अच्छा होगा, परन्तु किन्हीं कारणों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। इन बारीकियों को ध्यान में रखना चाहिए।

(२) यदि चन्द्रमा से दूसरे, बारहवें अथवा दूसरे और बारहवें दोनों ही भावों में शुभ ग्रह हों।

(३) सूर्य से बारहवें भाव में शुभ ग्रह (चन्द्रमा के अलावा), सूर्य से दूसरे भाव में (चन्द्रमा के अलावा) शुभ ग्रह हों अथवा सूर्य से दूसरे और बारहवें दोनों ही भावों में शुभ ग्रह हों। चन्द्रमा इन स्थानों में न तो योग को बिगाड़ता है और न बनाता है।

ऊपर बताए हुए (१) और (२) में मंगल या शनि सूर्य या चन्द्रमा जिस राशि में हों, उसके दोनों तरफ की राशियों में या किसी भी एक तरफ की राशि में बैठे हो तो योग तो बनाएंगे परन्तु शुभ ग्रहों का होना (क्रूर ग्रह की अपेक्षा) योग के लिए अच्छा होता है।

(४) लग्न से तीसरे, छठे, ग्यारहवें भाव में शुभ ग्रह हों।

(५) चन्द्र राशि से तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में शुभ ग्रह हों।

ऊपर (४) और (५) में सबसे अधिक अच्छा फल उस समय होगा जबकि शुभ ग्रह एकसाथ या अलग-अलग उन सब भावों में बैठे हों। यदि सिर्फ दो ग्रह ही होंगे तब भी अच्छा ही फल होगा। यदि सिर्फ एक ही शुभ ग्रह हो तो अल्प मात्रा में फल होगा।

(६) यदि चन्द्रमा अपने नवांश में हो या अपने अति मित्र के नवांश में हो और उसपर (अ) दिन में जन्म हो और बृहस्पति की दृष्टि पड़े। (ब) रात्रि में जन्म हो और शुक्र की दृष्टि पड़े (सूर्योदय तक का समय दिन कहलाता है, सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय रात्रि)।

(७) यदि लग्न से छठे, सातवें और आठवें भाव में बुध, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों।

(८) यदि चन्द्रमा जिस राशि में हों उससे छठे, सातवें, आठवें भावों में बुध, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों।

ऊपर (७) और (८) में यह आवश्यक नहीं है कि बुध, बृहस्पति और शुक्र क्रमशः छठे, सातवें या आठवें में हों। दो या तीनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही ग्रह किसी भी भावों में हों।

(९) पुरुष की जन्म-कुण्डली में (अ) जन्म-दिन के समय में हो, (ब) लग्न, सूर्य, चन्द्रमा—ये तीनों ही विषम राशियों में हों (पहली, तीसरी, पांचवीं इत्यादि)।

(१०) स्त्रियों की जन्म-कुण्डली में (अ) यदि रात्रि में जन्म हो, (ब) लग्न, सूर्य, चन्द्रमा—ये तीनों ही सम राशियों में हों (२, ४, ६ इत्यादि)।

जन्म चक्र

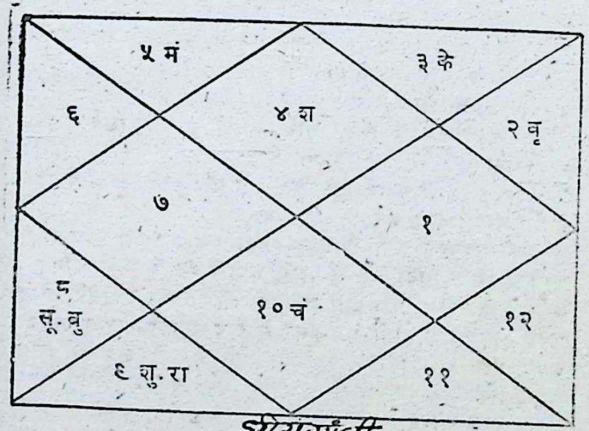

इंदिरा गांधी

श्रीमती गांधी की जन्म-कुण्डली में रात्रि का जन्म है तथा सूर्य, चन्द्रमा और लग्न तीनों ही सम राशियों में होने के कारण राजयोग हुआ। यह 'महाभाग योग' कहलाता है। इसके अतिरिक्त सूर्य-मंगल, शुक्र-वृहस्पति, शनि-चन्द्र के परस्पर परिवर्तन से ये सब ग्रह बलवान हो गए हैं।

(११) बुध, वृहस्पति और शुक्र ये तीनों ही लग्न से केन्द्र में हों (अर्थात् पहले, चौथे, सातवें, दसवें)। एक या अधिक ग्रह एकसाथ भी हो सकते हैं। यदि इनके अलावा मंगल भी दसवें भाव में हों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब बहुत अच्छा होता है।

(१२) लग्न या चन्द्रमा से मंगल (मेष, वृश्चिक या मकर राशि में बैठकर) पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में बैठा हो।

(१३) लग्न या चन्द्रमा से बुध (मिथुन या कन्या राशि का) पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में बैठा हो।

(१४) लग्न या चन्द्रमा से बृहस्पति (कर्क, धनु या मीन में हो) पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में हो।

(१५) लग्न या चन्द्रमा से शुक्र (तुला, वृषभ या मीन राशि में हो) पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में हों।

(१६) लग्न या चन्द्रमा से शनि (तुला, मकर या कुम्भ राशि में हो) पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में बैठा हो।

(१७) चन्द्रमा और मंगल एक ही राशि में बैठे हों।

(१८) चन्द्रमा से पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में बृहस्पति बैठा हो।

कर्क राशि में चन्द्रमा और बृहस्पति यदि पहले या चौथे भाव में बैठे हों तो बहुत बलवान योग करते हैं, क्योंकि चन्द्रमा अपनी स्वयं की राशि में होता है और बृहस्पति वहां अपनी उच्च राशि का। इसके अलावा यह दो अच्छे भाव के स्वामियों का योग है। परन्तु मान लीजिए, चन्द्रमा वृश्चिक का हो और बृहस्पति वृषभ राशि का तो ये दोनों एक-दूसरे से केन्द्र में होंगे परन्तु चन्द्रमा अपनी नीच राशि में और बृहस्पति अपने नैसर्गिक शत्रु की राशि में। इसलिए इन बारीकियों का ध्यान रखना चाहिए।

(१९) राहु या केतु केन्द्र में हों (पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में) और इनके साथ केन्द्र में पांचवें या नवें भाव के स्वामी बैठे हों।

(२०) राहु या केतु त्रिकोण में (लग्न से पांचवें या नवें भाव में) हों और उनके साथ किसी केन्द्र का स्वामी बैठा हो।

(२१) बृहस्पति यदि दूसरे, पांचवें या ग्यारहवें भाव का स्वामी हो तथा उसके साथ दूसरे नवें या ग्यारहवें भाव का स्वामी चन्द्रमा से केन्द्र में हो।

(२२) सूर्य वर्गोत्तम(तुला राशि के अलावा) और चन्द्रमा कर्क राशि में।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२३) यदि चन्द्रमा या वृहस्पति अपनी-अपनी राशियों में हों और केन्द्र या त्रिकोण में हों (एक केन्द्र में और दूसरा त्रिकोण में)।

(२४) यदि पूर्णिमा का चन्द्रमा केन्द्र में हो और उसपर वृहस्पति और शुक्र दोनों की दृष्टि पड़े।

(२५) वृषभ राशि का पूर्ण चन्द्र।

ऊपर दिए गए सबके सब २५ योग जीवन में धन, समृद्धि और उच्च स्थान देते हैं, परन्तु किस मात्रा में इन योगों का फल होगा उसके लिए पहले बताए हुए सिद्धान्त (भावों के स्वामियों के फल का निर्णय) लागू करने चाहिए।

इन सब योगों के अतिरिक्त चन्द्रमा को प्रधान मानकर और योग भी हैं। चन्द्रमा कमज़ोर समझा जाएगा, यदि नीचे बताए गए कारणों में से कोई हो और अच्छे योग का फल अल्प ही रह जाता है। यदि दोनों ही लागू हों तो अच्छा फल बिलकुल नष्ट हो जाता है।

चन्द्र निर्बल

(१) यदि जन्म कृष्ण पक्ष की दसवीं से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक।

(२) यदि दिन का जन्म हो और चन्द्रमा उदय हो। (लग्न के अंश से सप्तम भाव के अंश तक अस्त हिस्सा और सप्तम भाव के अंश से लग्न के अंश तक गणना करने से उदित भाग होता है।)

लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणः स्याद्विष्णुस्थानं तु केन्द्रकम् / तेषां संयोग मात्रेण चक्रवर्ती नरो भवेत् ।(लघुप)
त्रिकोण १/५/९ स्थान लक्ष्मीजी को हो र केन्द्र ४/७/१० स्थान विष्णुजीको हो / यी दुबैको परस्पर सम्बन्ध छ भने मनुष्य राजा समान चक्रवर्ती हुन्छ भन्ने छ तापनि आजको युगमा मन्त्री र धनवान हुन्छ भन्ने देखिन्छ /

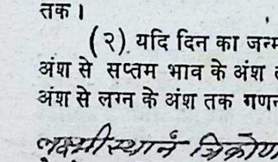

दिनको जन्म
उदित

दिनको जन्म

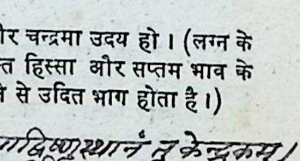

दिनको जन्म
अस्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—६

दशा-अन्तर्दशा

भारतीय ज्योतिष में जन्म-कुण्डली का फलादेश दशा-अन्तर्दशा और गोचर पर आधारित है। पाश्चात्य ज्योतिष में दशा-अन्तर्दशा नहीं होती है। ये महादशाएं इस बात को बताती हैं कि जीवन के किस भाग में किस ग्रह की प्रधानता रहेगी। ग्रहों के स्वभाव के अनुरूप ही जातक के सोचने-विचारने (दृष्टिकोण) में परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन न केवल उसके मन पर प्रभाव डालता है, अपितु बाहरी रूप में भी दृष्टिगत होता है। इन्हीं ग्रहों की दशाओं के अनुरूप जातक के रंग-रूप, दोषों (वात, पित्त, कफ) में, वाणी में, गुणों में परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण के लिए मंगल की महादशा में जातक के स्वभाव में क्रूरता आ जाती है। वह लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार रहता है, उसकी सहनशक्ति कम हो जाती है इत्यादि या शनि की महादशा में उसका रंग कुछ काला प्रतीत होता है, चेहरे पर(और शरीर में) रूक्षता प्रतीत होती है, मन में उदासी रहती है। बृहस्पति में शरीर का वजन बढ़ जाता है, रंग निखर आता है, वाणी मे मिठास आ जाती है। कहने का तात्पर्य है कि यह परिवर्तन स्थायी नहीं होता अपितु दशा-अन्तर्दशा के अनुरूप बदलता रहता है। अनुभवी ज्योतिषी चेहरा देखकर यह जान जाते हैं कि जातक पर किस ग्रह का प्रभाव है (या उसकी जन्म-कुण्डली में किस ग्रह की दशा चल रही है)। यहां हम 'दशा' शब्द का प्रयोग—'महादशा' के लिए ही कर रहे हैं।

ज्योतिष में कई प्रकार की महादशाएं और अन्तर्दशाएं होती हैं। महर्षि पराशर ने (इनका जन्म हजारों वर्ष पहले हुआ था और यह भारतीय ज्योतिष के पिता कहलाते हैं) बयालीस प्रकार की दशाओं की गणना और उनका प्रभाव बतलाया है। परन्तु समय के साथ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साथ इनमें से बहुत-सी दशाओं का प्रयोग धीरे-धीरे लुप्त हो गया है। इनमें से केवल कुछ का प्रयोग किया जाता है और वह भी विभिन्न स्थानों में अलग-अलग ही है। जैसे बंगाल और पश्चिम भारत में (विशेषतः गुजरात में) अष्टोत्तरी दशायें प्रचलित हैं। अष्टोत्तरी दशाओं की गणना भी दो प्रकार से की जाती है। बंगाल में एक प्रकार से और गुजरात में दूसरी प्रकार से। 'त्रिभागी दशा' का प्रयोग नेपाल में और योगिनी दशाओं की परिपाटी कश्मीर, हिमाचल और पर्वतीय देशों में है।

सबसे अधिक प्रचलित विंशोत्तरी महादशा है, जिसकी अवधि १२० वर्ष की है। क्योंकि समस्त भारत में इसका प्रयोग होता है (और हमारे अनुभव में भी यह सबसे अधिक ठीक उतरती है) इसलिए इसकी गणना करने का तरीका हम यहां बताते हैं।

ग्रहों की सम्पूर्ण महादशाएं (१२० वर्ष) निम्नलिखित प्रकार से प्रत्येक ग्रह में बांटी गई हैं :

सारिणी 'क'

ग्रह	काल
सूर्य	६ वर्ष
चन्द्र	१० "
मंगल	७ "
राहु	१८ "
बृहस्पति	१६ "
शनि	१९ "
बुध	१७ "
केतु	७ "
शुक्र	२० "
योग	१२० वर्ष,

पाठक यह देखें कि ऊपर जो दशाओं का क्रम है, वह ग्रहों के नैसर्गिक क्रम से भिन्न है, क्योंकि राहु और केतु का किसी भी दिन में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्बन्ध नहीं है और दशाकाल में उनको भी सम्मिलित किया गया है। ग्रहों के काल में भी समानता नहीं है और यह किस तर्क पर आधारित है, यह कहना भी कठिन है। परन्तु अनुभव में यह ठीक उतरता है। इस दशाकाल के विभाग का अनेक व्यक्तियों ने विभिन्न प्रकार से विश्लेषण अवश्य किया है, परन्तु अभी तक इस विश्लेषण में कोई तथ्य नहीं जान पड़ता है।

प्रत्येक ग्रह के काल को पुनः नौ भागों में बांटा गया है, जिसे अन्तर्दशा कहते हैं। सूर्य की महादशा जो ६ वर्ष की है, उसमें ९ अन्तर्दशाएं हैं। ये क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु इत्यादि होती हैं। चन्द्रमा की महादशा जो कि १० वर्ष की है, ९ भागों में बांटी गई है। यह चन्द्रमा, मंगल, राहु, वृहस्पति इत्यादि क्रम से होती है। प्रत्येक ग्रह की महादशा ९ भागों में तो बांटी जाएगी, परन्तु उनका आरम्भ अपने-आप से होगा और उसके पश्चात् दूसरे ग्रहों की अन्तर्दशाएं सारिणी 'क' में बताए गए क्रम के अनुसार होंगी।

इन ९ अन्तर्दशाओं को फिर से नौ-नौ भागों में बांटा जाता है। इसे प्रत्यंतर दशाएं या प्रत्यंतर कहते हैं। प्रत्यंतर दशाओं को नौ-नौ भागों में बांटने से सूक्ष्म दशाएं होती हैं। परन्तु यहां हम केवल महादशा और अन्तर्दशा का ही विचार करेंगे।

प्रत्येक अन्तर्दशा का किस ग्रह में कितना-कितना काल होता है, यह हम उदाहरण देकर समझाते हैं।

शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा कितने समय तक होगी ?

जब कुल वर्ष १२० तो राहु के वर्ष १८

जब कुल वर्ष १ तो राहु के वर्ष $\frac{१८}{१२०}$

इसलिए जब कुल वर्ष २० तो राहु के वर्ष $\frac{१८ \times २०}{१२०}$

अर्थात् राहु की अन्तर्दशा ३ वर्ष की हुई (शुक्र की महादशा में)। अब हम आगे सारिणी 'ख' देते हैं, जिसमें प्रत्येक ग्रह की महादशा में अन्तर्दशाओं का समय बतलाया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सारिणी 'ख'

१. सूर्य

	वर्ष मास दिन
सूर्य	०— ३—१८
चन्द्र	०— ६— ०
मंगल	०— ४— ६
राहु	०—१०—२४
वृहस्पति	०— ९—१८
शनि	०—११—१२
बुध	०—१०— ६
केतु	०— ४— ६
शुक्र	१— ०— ०
योग	६ वर्ष

२. चन्द्र

	वर्ष मास दिन
चन्द्र	०—१०—०
मंगल	०— ७—०
राहु	१— ६—०
वृहस्पति	१— ४—०
शनि	१— ७—०
बुध	१— ५—०
केतु	१— ७—०
शुक्र	१— ८—०
सूर्य	०— ६—०
योग	१० वर्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. मंगल

	वर्ष	मास	दिन
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
वृहस्पति	०	११	६
शनि	१	१	९
वुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	७	०
चन्द्र	०	४	१६
योग	७ वर्ष		

४. राहु

	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२
वृहस्पति	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
सूर्य	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८
योग	१८ वर्ष		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५. वृहस्पति

	वर्ष	मास	दिन
वृहस्पति	२	१	१८
शनि	२	६	१२
वुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
सूर्य	०	४	१८
चन्द्र	१	४	०
मंगल	०	११	६
राहु	२	४	२४
योग	१६ वर्ष		

६. शनि

	वर्ष	मास	दिन
शनि	३	०	३
वुध	२	८	४
केतु	१	१	४
शुक्र	३	२	०
सूर्य	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
मंगल	१	१	४
राहु	२	१०	६
वृहस्पति	२	६	१२
योग	१९ वर्ष		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७. बुध

	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	१०	६
चन्द्र	१	५	०
मंगल	०	११	२७
राहु	२	६	१८
वृहस्पति	२	३	६
शनि	२	८	४
योग	१७ वर्ष		

८. केतु

	वर्ष	मास	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
वृहस्पति	०	११	६
शनि	१	१	४
बुध	०	११	२७
योग	७ वर्ष		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९. शुक्र

	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	३—	४—	०
सूर्य	१—	०—	०
चन्द्र	१—	८—	०
मंगल	१—	२—	०
राहु	३—	०—	०
बृहस्पति	२—	८—	०
शनि	३—	२—	०
बुध	२—	१०—	०
केतु	१—	२—	०
योग	२० वर्ष		

ग्रहों की पहले महादशा हो, फिर उनकी अन्तर्दशाएं की जाएं, इसके पीछे क्या सिद्धान्त है ? यह प्रश्न उचित है और इसका विश्लेषण हमने आगे के अध्याय में किया है। यहां पर हम केवल महादशा और अन्तर्दशाओं की गणना करने का तरीका बता रहे हैं।

जन्म के समय भोग्य दशा

हमने सारिणी 'क' में ग्रहों की महादशाएं बताई हैं । सारिणी 'ख' में हमने अन्तर्दशाओं का समय बताया है ।

अब हमें यह देखना है कि जन्म के समय किस ग्रह की दशा थी और उसमें से कितनी भोग्य दशा रही । इसके लिए यह बताया जाता है कि जन्म के महादशा का काल चन्द्र स्पष्ट पर आधारित होता है ।

भचक्र (राशि-मण्डल) में ३६०° हैं। यह ३६०° अंश, २७ बराबर के भागों में बांटे गए हैं । प्रत्येक भाग में १३०° और २०' आए। प्रत्येक भाग का अधिपति एक-एक नक्षत्र होता है। सारिणी 'ग' में २७ विभागों के अंश और कला, नक्षत्रों के नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म समय चन्द्रमा स्पष्ट ४-२६°-४० देखि ५-१०°-०० मा छ भने जातकको जन्म समय सूर्यको महादशा रहन्छ /

सारिणी 'ग'

चन्द्र ग्रह स्पष्ट, नक्षत्र और ग्रह

चन्द्रमा स्पष्ट - २

ग्रह स्पष्ट राशि अंश कला	राशि अंश कला	नक्षत्र	ग्रह
०—००—००	०—१३—२०	अश्विनी	केतु
०—१३—२०	०—२६—४०	भरणी	शुक्र
०—२६—४०	१—१०—००	कृत्तिका	सूर्य
१—१०—००	१—२३—२०	रोहिणी	चन्द्र
१—२३—२०	२—०६—४०	मृगशिर	मंगल
२—०६—४०	२—२०—००	आर्द्रा	राहु
२—२०—००	३—०३—२०	पुनर्वसु	बृहस्पति
३— ३—२०	३—१६—४०	पुष्य	शनि
३—१६—४०	४—००—००	आश्लेषा	बुध
४—००—००	४—१३—२०	मघा	केतु
४—१३—२०	४—२६—४०	पूर्वा फाल्गुनी	शुक्र
४—२६—४०	५—१०—००	उत्तरा फाल्गुनी	सूर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५—१०—००	५—२३—२०	हस्त	चन्द्र
५—२३—२०	६—०६—४०	चित्रा	मंगल
६—०६—४०	६—२०—००	स्वाती	राहु
६—२०—००	७—०३—२०	विशाखा	वृहस्पति
७—०३—२०	७—१६—४०	अनुराधा	शनि
७—१६—४०	८—००—००	ज्येष्ठा	बुध
८—००—००	८—१३—२०	मूल	केतु
८—१३—२०	८—२६—४०	पूर्वाषाढ़	शुक्र
८—२६—४०	९—१०—००	उत्तराषाढ़	सूर्य
९—१०—००	९—२३—२०	श्रवण	चन्द्र
९—२३—२०	१०—०६—४०	धनिष्ठा	मंगल
१०—०६—४०	१०—२०—००	शतभिषा	राहु
१०—२०—००	११—०३—२०	पूर्वा भाद्रपद	वृहस्पति
११—०३—२०	११—१६—४०	उत्तरा भाद्रपद	शनि
११—१६—४०	१२—००—००	रेवती	बुध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और उनके ग्रह बताए गए हैं। प्रत्येक नक्षत्र के सामने एक-एक ग्रह दिया गया है। चन्द्र स्पष्ट जिस नक्षत्र के विभाग में आए, उसके सामने दिए गए ग्रह की महादशा (जन्म के समय) समझी जाएगी।

नक्षत्रों के नाम जो संस्कृत में प्रचलित हैं वही बताए गए हैं। यहां आप यह ध्यान रखिए कि यदि चन्द्र स्पष्ट (जन्म के समय) ४—२६°—४०′ से ५—१०°—०′ (अर्थात् सिंह राशि के २६°—४०′ से लेकर कन्या के १०° तक) हो तो जातक के जन्म के समय सूर्य की महादशा होगी। या एक दूसरा उदाहरण लीजिए। मान लीजिए, जन्म के समय चन्द्र स्पष्ट ११—१६°—४०′ से लेकर १२—०°—०′ (अर्थात् मीन राशि के १६°—४०′ से ३०° से लेकर १२—०°—०′ तक हो) हो तो जन्म के समय बुध की महादशा होगी।

दूसरी बात यह है कि यदि जातक के जन्म के समय चन्द्र स्पष्ट मीन में १६°—४०′ हो अर्थात् विभाग के बिलकुल शुरू में हो तो उस जातक को बुध की महादशा पूरे १७ वर्ष मिलेंगे। परन्तु यदि जातक का जन्म उस समय हुआ हो जबकि चन्द्र स्पष्ट मीन में २३°—२०′ था (जो कि १६°—४०′ और ३०° के मध्य में है) तो उसको बुध के १७ वर्ष में से केवल ८ वर्ष और छः मास प्राप्त होंगे। ये बाकी बचे हुए ८ वर्ष और छः मास जो हैं यह भोग्य दशा हुई। इसके बाद जातक को केतु महादशा के ७ वर्ष, शुक्र महादशा के २० वर्ष, सूर्य महादशा के छः वर्ष इत्यादि मिलेंगे। विंशोत्तरी महादशा १२० वर्ष की होती है और केवल ऐसे ही व्यक्ति को पूर्ण रूप से मिलेगी जिसकी आयु १२० वर्ष या उससे अधिक हो। अधिकतर लोगों को ४, ५, ६, ७ या ८ महादशाएं ही मिल पाती हैं।

उदाहरण : भोग्य दशा निकालने के लिए जो तारीख, समय और स्थान हमने अध्याय दो की उदाहरण कुण्डली के लिए दिया है, उसे ही यहां लेते हैं। पाठकों से निवेदन है कि वे यह ध्यान रखें कि महादशा की गणना के लिए केवल चन्द्र स्पष्ट की ही आवश्यकता है।

प्रत्येक नक्षत्र में १३° और २०′ हैं। इनको मिनट में बदलने पर १३°—२०′ = १३ × ६० + २० = ८०० कलाएं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि जातक का जन्म अश्विनी, मघा या मूल के शुरू में हुआ हो तो ८००′ की पूरी भोग्यदशा ७ वर्ष की होगी (जो कि केतु की है), यदि जातक का जन्म भरणी, पूर्वा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ में हुआ हो तो जातक को शुक्र की महादशा के बीस वर्ष मिलते हैं। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के बिलकुल आरम्भ में चन्द्र स्पष्ट हो तो पूरी-पूरी महादशाएं मिलेंगी। जन्म नक्षत्र का नाम और उसके सामने ग्रह का नाम यह बताता है कि यदि उस जन्म नक्षत्र में चन्द्र स्पष्ट हो तो सम्मुख दिए गए ग्रह की महादशा होगी (यह सब हम सारिणी 'ग' में बता चुके हैं)।

जन्म के समय भोग्य दशा

जातक के जन्म के समय महादशा का पूरा भाग केवल उसी समय मिलेगा जबकि चन्द्र स्पष्ट बिलकुल आरम्भ में हो। यदि चन्द्रमा नक्षत्र का चौथाई भाग चल चुका हो और तीन-चौथाई उसे अभी और जाना है तो जातक को केवल महादशा का ३/४ भाग मिलेगा। यह भली भांति समझ लें। अब इसे हम पुनः उदाहरण देकर समझा रहे हैं।

उदाहरण में दी गई जन्म-कुण्डली में चन्द्र स्पष्ट ८—०° २४′। सारिणी 'ग' में देखिए कि यदि चन्द्र स्पष्ट ८—०°—०′ से ८—१३°—२०′ हो तो मूल नक्षत्र में जन्म हुआ, क्योंकि प्रत्येक नक्षत्र में चन्द्रमा को ८०० कलाएं चलना होगा। अब देखिए—

मूल नक्षत्र की समाप्ति	८—१३°—२०′
चन्द्र स्पष्ट	८—०°—२४′
बाकी बचे	०—१२°—५६′

चन्द्रमा को १२°—५६′ चलने बाकी हैं। अब १२°—५६′ की कलाएं बनाने से हमारे पास १२ × ६० + ५६ = ७७६ कलाएं।

यदि चन्द्रमा को ८००′ चलना है तो दशा हुई ७ वर्ष

यदि " " १′ " " " " " $\frac{७}{८००}$ वर्ष

यदि चन्द्रमा को ७७६ " " " " " $\frac{७}{८००}$ × ७७६

= ६ वर्ष ९ मास १४ दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदि दिन बनाने में आधे से अधिक आए तो हम एक दिन मान लेते हैं।

पूरे ७ वर्ष इसलिए, क्योंकि जन्म के समय चन्द्रमा मूल नक्षत्र में था और सारिणी 'ग' में यह देखिए कि मूल नक्षत्र में जन्म हुआ हो तो जातक के जन्म के समय केतु की महादशा होगी। सारिणी 'क' में देखने से केतु की महादशा के ७ वर्ष होते हैं इसलिए हमने ऊपर की महादशा में जन्म के समय भोग्य दशा ६ वर्ष ९ महीने और १४ दिन की निकाली। महादशा की सारिणी इस प्रकार होगी :

ग्रह	महादशा काल वर्ष मास दिन	आयु तक वर्ष मास दिन
जन्म के समय		
केतु की भोग्य दशा	६—९—१४	६—९—१४
शुक्र महादशा	२०—०— ०	२६—९—१४
सूर्य महादशा	६—०— ०	३२—९—१४
चन्द्र महादशा	१०—०— ०	४२—९—१४
मंगल महादशा	७—०— ०	४९—९—१४
राहु महादशा	१८—०— ०	६७—९—१४
वृहस्पति महा दशा	१६—०— ०	८३—९—१४

हमने ऊपर ग्रहों की महादशा की गणना ८३ वर्ष ९ मास १४ दिन तक की है, परन्तु यदि जातक चाहे तो वह शनि की महादशा के १९ वर्ष, जो कि वृहस्पति की महादशा के बाद आती है, जोड़ सकते हैं।

उदाहरण कुण्डली में अन्तर्दशाएं

अब हम यह बताएंगे कि अन्तर्दशा की गणना किस प्रकार करनी चाहिए। ऊपर महादशा की जो गणना की गई है उसमें देखें कि केतु के पूरे ७ वर्ष में से हमने ६ वर्ष ९ मास और १४ दिन भोग्य दशा बताई है और इसलिए २ महीने और १६ दिन जन्म होने से पहले बिता चुके हैं (इसे मुक्त महादशा कहते हैं)। अब देखिये सारिणी 'ख'। यदि जन्म के समय केतु महादशा के पूरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७ वर्ष भोग्य रहते, तो शुरू में केतु की अन्तर्दशा अपनी ही महादशा में ४ महीने और २७ दिन की होती, परन्तु क्योंकि इसमें २ महीने और १६ दिन जन्म से पहले ही बीत चुके हैं इसलिए अन्तर्दशा की अवधि काल ४ महीने २७ दिन में से २ महीने १६ दिन घटाने पर २ महीने ११ दिन बाकी बचे। यह २ महीने ११ दिन केतु की अन्तर्दशा के (अपनी महादशा में) समझे जाएंगे। अब हम अन्तर्दशा की सारिणी नीचे बताते हैं।

केतु की महादशा में ग्रहों की अन्तर्दशाएं

ग्रह	अन्तर्दशा काल वर्ष मास दिन	आयु तक वर्ष मास दिन
समय केतु अन्तर्दशा	०—२—११	०—२—११
शुक्र अन्तर्दशा	१—२— ०	१—६—११
सूर्य अन्तर्दशा	०—४— ६	१—८—१७
चन्द्र अन्तर्दशा	०—७— ०	२—३—१७
मंगल अन्तर्दशा	०—४—२७	२—८—१४
राहु अन्तर्दशा	१—०—१८	३—६— २
बृहस्पति अन्तर्दशा	०—११—६	४—८— ८
शनि अन्तर्दशा	१—१— ६	५—६—१७
बुध अन्तर्दशा	०—११—२७	६—६—१४

हमने शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि की अन्तर्दशाएं कहां से ली हैं? यह हमने सारिणी 'ख' से ली हैं। पहली महादशा में अन्तर्दशाओं की सारिणी पूरी करने के बाद बाकी महादशाओं में अन्तर्दशाएं बनाना आसान है। ग्रहों का क्रम हमेशा ही इस प्रकार रहेगा—केतु, शुक्र, सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति शनि, बुध, केतु इत्यादि।

प्रत्येक महादशा में पहली अन्तर्दशा उस ग्रह की स्वयं अपनी ही होती है और उसके बाद आने वाली अन्तर्दशाएं ऊपर बताए हुए क्रम के अनुसार होती हैं। अब हम शुक्र की महादशा में अन्तर्दशाएं बताते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र की महादशा में ग्रहों की अन्तर्दशाएं

ग्रह	अन्तर्दशा काल	आयु तक
	वर्ष मास दिन	वर्ष मास दिन
शुक्र में शुक्र	३—४— ०	१०— १—१४
शुक्र में सूर्य	१—०— ०	११— १—१४
शुक्र में चन्द्रमा	१—८— ०	१२— ९—१४
शुक्र में मंगल	१—२— ०	१३—११— १४
शुक्र में राहु	३—०— ०	१६—११—१४
शुक्र में वृहस्पति	२—८— ०	१९— ७—१४
शुक्र में शनि	३—२— ०	२२— ९—१४
शुक्र में बुध	२—१०—०	२५— ७—१४
शुक्र में केतु	१—२— ०	२६— ९—१४

केतु की महादशा छः वर्ष ९ महीने और १४ दिन पर समाप्त हुई। इसमें इसने शुक्र में शुक्र के ३ वर्ष ४ महीने जोड़ दिए, जिससे १० वर्ष १ महीना १४ दिन तक शुक्र की महादशा में शुक्र का ही अन्तर रहा।

इसी प्रकार से अन्तर्दशाओं की सारिणी आगे की महादशाओं के लिए भी बनानी चाहिए। इस अध्याय में हमने दशा-अन्तर्दशा की गणना करनी बतलाई है। इसका क्या प्रभाव होता है, कैसे फलादेश करना चाहिए, दशा अच्छी जाएगी या नहीं इत्यादि के लिए आगे का दसवां अध्याय देखिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—१०

ग्रह फल का समय

यह अध्याय विशेष महत्त्व रखता है और जो सिद्धान्त इसमें दिए गए हैं, उनमें काफी अनुभव और कुशलता की आवश्यकता है। लेकिन कुशलता और अनुभव किसी नियम के आधार पर होने चाहिए। उन नियमों का यहां उल्लेख किया जाता है।

अब तक पिछले अध्यायों में हमने यह बतलाया है कि 'क्या' होगा। अब यह बतलाते हैं कि वह कब होगा। यह ध्यान में रखना चाहिए कि जन्म-कुण्डली में जो फल नहीं लिखा है, वह अनुकूल ग्रह फल परिस्थिति होने पर भी नहीं होता है और जो प्रभाव ग्रह परिस्थितिवश होने को होता है वह साधारण-से दशा-अन्तर्दशा या गोचरवश हो जाता है।

यदि किसीकी जन्म-कुण्डली में धन का योग नहीं है तो वह अत्यन्त शुभ दशाओं में भी धनी नहीं होगा। यद्यपि अपेक्षाकृत अनुकूल परिस्थिति होने पर किंचित् धन का लाभ कराता है। जिस जातक की कुण्डली में सातवां भाव शुक्र और सातवें भाव का स्वामी दूषित हो तो उसे वैवाहिक सुख नहीं मिलता है और जब शुभ महादशा, शुभ गोचर इत्यादि होता है तो भी उसे कोई विशेष प्रसन्नता नहीं मिलेगी। इस मुख्य सिद्धान्त को हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

फलादेश करते समय दशा-अन्तर्दशा का तथा जो सिद्धान्त और फल पहले बताए जा चुके हैं (१) ग्रह किस भाव में है, (२) किस राशि में बैठा है, (३) किन ग्रहों के साथ है अथवा दृष्ट है और (४) किन भावों का स्वामी है अथवा किन वस्तुओं का कारक है, उन सबका ध्यान रखना चाहिए। जन्म-कुण्डली में जो फल होता है वह ग्रह की दशा-अन्तर्दशा आने पर होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय ज्योतिष में फल का समय महादशा और अन्तर्दशा तथा ग्रहों के गोचर पर आधारित है। दशा-अन्तर्दशा की गणना करने का तरीका पहले ही बताया जा चुका है (देखिए अध्याय ६)। गोचर का क्या प्रभाव होता है, यह इस अध्याय में बताया जाएगा। यहां हम दशा-अन्तर्दशा अच्छी जाएगी या खराब, यह विचार कर रहे हैं।

आप किसी रत्न की परीक्षा कैसे करते हैं? मान लीजिए, हीरे की कि वह अच्छा है या नहीं। इसमें तीन बातें देखनी चाहिए। वज़न और बनावट तथा सफाई के अलावा हमें यह भी ध्यान देना पड़ता है कि उसमें कोई दोष न हो। यदि इनमें से किसी भी बात का ध्यान नहीं रखा गया तो हमारा निर्णय त्रुटिपूर्ण होगा। इसी प्रकार दशा-अन्तर्दशा में तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए वरना हमारा निष्कर्ष गलत ही रहेगा। पहले हम ग्रहों की महादशा का विचार करते हैं और अन्तर्दशा का उसके बाद में करेंगे। इसके पहले कि हम उन तीन सिद्धान्तों का उल्लेख करें, जिनका महादशा के फल का निर्णय करने में ध्यान देना चाहिए—निम्नलिखित बातों पर भी ध्यान दिया जाए :

साधारण सिद्धान्त

(१) अपनी दशा में ग्रह फल दिखाता है। (अ) जिस भाव या भावों का स्वामी हो, (ब) जिस भाव में बैठा हो, (स) जिन भावों पर दृष्टि डालता हो, (द) जिन ग्रहों के साथ बैठा हो या जिन ग्रहों से देखा जाता हो।

इसलिए एक क्रूर ग्रह की दशा में उस भाव का नाश हो जाता है जहां दशानाथ (अर्थात् जिस ग्रह की दशा हो) बैठा हो। ऐसा ही उन भावों के लिए समझना, जहां पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो। परन्तु यदि क्रूर ग्रह अपनी ही राशि में हो या अपनी ही राशि को देखता हो तो उन भावों को बढ़ाता है अर्थात् उन भावों के शुभ फल ही देता है। यह उसी सिद्धान्त पर आधारित है कि एक दुष्ट भी अपने परिवार का रखवाला और भरण-पोषण करने वाला होता है।

(२) जब एक ग्रह दो भावों का स्वामी हो तो अपनी दशा के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहले भाग में पहले भाव का (लग्न से गिनने पर जो भाव पहले आए) फल देता है। दशा के दूसरे भाग में दूसरे भाव का (जो लग्न के गिनने के बाद में आता है) फल देता है। जैसे सिंह लग्न से, सिंह राशि से गिनने पर वृश्चिक (जो कि चौथा भाव है) पहले आता है और मेष (जो नवम भाव है) बाद में आता है। इसलिए मंगल की सात वर्ष की महादशा में पहले ३ वर्ष ६ मास तक चतुर्थ भाव के स्वामित्व का फल अधिक रूप से होगा तथा बाद के दूसरे ३ वर्ष ६ मास की अवधि में नवम भाव के स्वामित्व का फल विशेष रूप से होगा। परन्तु यदि विशेष विवेचन करें तो ग्रह का मूल त्रिकोण जिस भाव में पड़ा है, उसका फल विशेष रूप से होगा।

(३) ग्रह जिस राशि में बैठा है वह पृष्ठोदय है या शीर्षोदय या दोनों ही, यह पिछले पृष्ठों में बताया गया है। ग्रहों का फल इस-पर निर्भर करता है।

(४) यदि ग्रह दो राशियों का स्वामी—एक राशि शुभ भाव में पड़े और दूसरी अशुभ स्थान में तथा ग्रह स्वयं भी शुभ भाव में जो उसकी राशि है उसीमें बैठे तो उसका फल शुभ ही होगा। हालांकि वह एक अशुभ भाव का स्वामी भी है। उदाहरण के लिए कन्या लग्न वाले जातक के लिए शनि कुंभ का (जो छठा और अशुभ स्थान है) और मकर का (जो पंचम और शुभ स्थान है) स्वामी है। यदि शनि मकर में बैठे तो वह छठे भाव के स्वामित्व का अशुभ फल नहीं दिखाता है।

(५) किसी ग्रह की महादशा आरम्भ में ग्रह जिस भाव में है उसका फल दिखाएगी, दशा के मध्य में जिस राशि और नवांश में है उसका फल और उसके बाद जिन ग्रहों के साथ बैठा हो या जिन ग्रहों से देखा जाता है, उसका फल होता है।

(६) यदि एक ग्रह राशि में बलवान हो परन्तु नवांश में नीच का हो तो वह अच्छा फल नहीं दिखाएगा, अपितु अशुभ फल-कारक होगा (यहां यह फल जो कहा गया है वह यदि ग्रह अकेला बैठा हो तभी होता है)।

(७) एक ग्रह मान लीजिए—'क' यदि 'ख' का अति शत्रु है तो अपनी 'क' की दशा में 'ख' जिन भावों का स्वामी है उन भावों के अशुभ फलों को देगा। इसलिए लग्नेश के शत्रु और अति शत्रु ग्रहों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की दशा अच्छी नहीं जाएगी।

[मान लीजिए, चन्द्रमा लग्नेश हो और शनि का शत्रु भी तो शनि की महादशा में ऐसे व्यक्ति को अत्यधिक कष्ट मिलेगा और यदि परस्पर मित्र हों तो शनि सप्तमेश-अष्टमेश होने पर भी खराब फल नहीं देगा।]

(८) राहु और केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं हैं इसलिए वे जिस भाव में बैठे हों या जिन ग्रहों के साथ हों, उनका फल दिखाते हैं।

पहला सिद्धान्त

ग्रह जिन-जिन वस्तुओं का 'कारक' है उनका असर दिखाता है। यदि बलवान है तो जिन वस्तुओं का वह द्योतक है उनके संबंध में शुभ फल करेगा, परन्तु यदि कमज़ोर और पीड़ित है तो खराब फल करता है।

सूर्य : सूर्य जब बलवान हो तो अपनी महादशा में राजा से धन (सरकार से अथवा सरकारी नौकरी से), बड़े-बड़े व्यक्तियों से सम्पर्क, नये कार्यों में सफलता, हिम्मत, विभिन्न प्रकार से धन-प्राप्ति,यश, सफल यात्राए करवाता है। जातक को मुकदमे, लड़ाई-झगड़े इत्यादि में सफलता मिलती है। जातक के पिता के लिए भी महादशा अच्छी रहेगी।

परन्तु यदि सूर्य कमज़ोर है (और पीड़ित भी) तो राज्य की तरफ से भय, शत्रुओं से कष्ट, अग्नि से भय, यात्राओं में असफलता मिले, पेट और हृदय सम्बन्धी रोग हों, पिता के अच्छे सम्बन्ध न रहें अथवा पिता का स्वास्थ्य खराब रहे। ऐसे व्यक्ति की आत्मा में बल नहीं रहता।

चन्द्रमा : यदि चन्द्रमा बलवान हो तो धन-वृद्धि आसानी से होती है, परिवार में वृद्धि, अच्छा भोजन,कार्यों मे सफलता, अधिक मित्र इत्यादि होते हैं। जातक की माता के लिए भी यह महादशा अच्छी होती है।

यदि चन्द्रमा कमज़ोर हो तो धन कम हो जाता है, मानसिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परेशानी, परिवार में क्लेश, अपने ही लोगों से दुश्मनी, उदासीनता, बासी भोजन, किसी बड़े व्यक्ति से दुश्मनी और उसके कारण उदासीनता और उद्वेग, माता को कष्ट होता है। जातक बात और कफ बिगड़ जाने से अस्वस्थ होता है।

मंगल : मंगल बलवान हो तो राज्यलाभ, भूमि, अग्नि (जहां ढलाई इत्यादि का कार्य होता है), भाइयों, भेड़-बकरियों इत्यादि से लाभ होता है। जातक में हिम्मत और उत्साह रहता है और इस कारण उसे अपने कार्यों में सफलता मिलती है, क्रूर कर्म और दवाई इत्यादि कार्यों से लाभ होता है।

परन्तु यदि मंगल कमजोर हो तो लड़ाई-झगड़े, मुकदमे से हानि, किसी छोटी जाति की स्त्री से सम्बन्ध और उस कारण हानि, भाइयों से मतभेद अथवा उनका स्वास्थ्य खराब रहे। जातक को झुंझलाहट रहती है और कठोर वचन बोलने के कारण लोगों द्वारा पसन्द नहीं किया जाता। फोड़े, फुन्सियां, रक्त-विकार, चोट लगना (हथियार या दुर्घटना द्वारा) इत्यादि का भय रहता है।

बुध : जब बुध बलवान हो तो मित्रों से या मित्रों के सहयोग से, लेखन-कार्यों से, दलाली से लाभ होता है। पारिवारिक प्रसन्नता, व्यापार में सफलता, बुद्धि का विकास, पढ़ाई में सफलता, यश और नाम मिले। यात्रा से धन प्राप्त हो। स्नायुमंडल बलवान होता है।

परन्तु यदि बुध कमज़ोर हो तो जल्दी घबरा जाने वाला, उसे मानसिक कार्यों से धनलाभ नहीं होता, बातचीत में सफलता नहीं मिलती, दूसरों द्वारा तिरस्कृत किया जाता है, अधिक मेहनत करने पर भी उतना लाभ नहीं मिलता, धोखाधड़ी के मामलों में नुकसान, बिना सोचे-समझे दस्तावेज़ों पर दस्तखत करने के कारण परेशानी, यकृत, स्नायुमंडल, बुद्धि में विकार, नींद न आना इत्यादि रोग। वात, पित्त और कफ के बिगड़ जाने से रोग हो।

बृहस्पति : जब बृहस्पति बलवान हो तो धनवृद्धि, विद्या-लाभ, धार्मिक कार्यों में रुचि, अच्छा स्वास्थ्य, पुत्रप्राप्ति या परिवार में बौद्धिक कार्यों में सफलता, बड़े-बड़े व्यक्तियों से सम्पर्क, मान-मर्यादा, पुत्रों से प्रसन्नता होती है। स्त्रियों की जन्म-कुण्डली में विवाह (जो विवाहित हैं उनके पति की समृद्धि)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परन्तु यदि वृहस्पति कमज़ोर है तो कानों में खरावी, रक्त-चाप सम्बन्धी दोप, पाचनक्रिया में खरावी, सन्तान को दुःख या वीमारी, धन-नाश और मानसिक अशान्ति, स्त्रियों की जन्म-कुण्डली में पति को कष्ट।

शुक्र : जव शुक्र वलवान हो तो जातक को आनन्द, स्त्रियों से प्रसन्नता, धनवृद्धि, सुख-भोग की वस्तुएं, इन्द्रिय सुख, विलास होता है। अविवाहित हो तो विवाह हो, सवारी का लाभ, पशु और खेती से लाभ, विदेश यात्रा, वस्तुओं के खरीदने और वेचने से धन-लाभ, भोग-विलास की वस्तुओं, स्त्रियों से लाभ, परिवार में धार्मिक कार्य, भक्ति। ये सव शुक्र की महादशा में होते हैं।

परन्तु यदि शुक्र कमज़ोर हो, तो पति से कलह, पत्नी का स्वास्थ्य खराव रहे, वात और कफ सम्बन्धी रोग, छूत की वीमारियों, गुर्दे और पेशाव के रोग, चीजों के खरीदने और वेचने से नुकसान, खेती और पशुओं के कारण हानि। दूसरे लोगों से सहयोग भी नहीं मिलता है और अनुचित कार्यों में धन का व्यय होना।

शनि : यदि शनि वलवान हो तो खेती-वाड़ी, खानों, लोहे, तेल, पेट्रोल, मज़दूरों, वूढ़े व्यक्तियों से विरासत में लाभ होता है। यदि नौकरी में हो तो तरक्की मिलती है तथा अच्छे ओहदे की प्राप्ति। ज्ञान-प्राप्ति और ज्योतिष इत्यादि पढ़ने में रुचि रहती है।

शनि यदि कमज़ोर हो तो उद्वेग, किसी सम्वन्धी की मृत्यु (कष्ट), परिवार में बीमारी, लगातार मुकदमे इत्यादि के कारण परेशानी, हड़ताल और अपने नीचे कार्य करने वालों से अनवन, यदि नौकरी में हो तो मानहानि, आर्थिक हानि, ज़मीन-जायदाद का नुकसान, रक्तचाप के कम हो जाने से बीमारियां, लकवा इत्यादि से कष्ट। ऐसे व्यक्ति का मुंह सूज जाता है और रंग काला पड़ने लगता है।

राहु : राहु वलवान हो तो सफल यात्रा, उन्नति, धन-लाभ (वाहन के कार्य से), जुआ, सट्टा, घुड़दौड़, विदेश-यात्रा, वेईमानी से और विजातीय व्यक्ति से लाभ, विदेशी भाषा सीखने में सफलता, धन में रुचि इत्यादि जानना।

जव राहु कमज़ोर हो तो धन-हानि, जातक धोखाधड़ी का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिकार हो, पद-हानि, स्थानच्युत किया जाए, कष्टकारक यात्राएं करनी पड़ें, सट्टे में नुकसान, वात विगड़ने से बीमारी, चर्मरोग, सूजन, सांप से काटा जाए, छोटे लोगों से मित्रता और उनसे कष्ट।

केतु : जब केतु बलवान हो तो उसकी महादशा, मित्रों से लाभ, शत्रु पर विजय और हिम्मत के कार्य, धार्मिक उत्सव, तीर्थ-यात्रा कराता है। सब प्रकार से धन का लाभ होता है।

परन्तु जब केतु कमज़ोर हो तो अग्नि से भय, चोरों द्वारा धन चुराया जाए, परिवार में परेशानी, लोगों से दुश्मनी, धन-नाश, मानसिक उद्वेग, स्वयं की पत्नी को और बच्चों को बीमारी।

दूसरा सिद्धान्त

दूसरा सिद्धान्त भाव के स्वामी पर आधारित है। यदि भाव का स्वामी जो ग्रह हो वह बलवान हो तो अपनी महादशा में जिन भाव या भावों का वह स्वामी है उन सम्बन्धी शुभ फल दिखाएगा, परन्तु दूसरी ओर यदि कमज़ोर और अशुभ स्थान में बैठे तो अपनी महादशा में, जिन भावों का वह स्वामी है, उनसे जिन वस्तुओं का ज्ञान होता है, उसका खराब फल दिखाएगा। किस भाव से किन-किन वस्तुओं को देखना चाहिए, यह हम पहले ही चौथे अध्याय में बता चुके हैं और इसे यहां फिर से नहीं बता रहे हैं। अध्याय आठ में हम यह भी बता आए हैं कि ग्रह किन कारणों से बलवान समझा जाता है और किन कारणों से पीड़ित।

इन सब सिद्धान्तों को ग्रह का बल देखने के लिए प्रयोग करना चाहिए।

अपनी महादशा में ग्रह के प्रभाव को हमने दो भागों में बांटा है : (१) जब ग्रह बलवान हो और (२) जब ग्रह कमज़ोर हो। यदि ग्रह बलवान हो और शुभ स्थान में बैठा हो तो अच्छा प्रभाव दिखाता है। यदि कमज़ोर और पीड़ित हो तो खराब फल दिखाएगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहले भाव का स्वामी

बलवान : जीवन में उत्थान, प्रसन्नता, अच्छा स्वास्थ्य, धन-वृद्धि, कार्यों में सफलता।

कमज़ोर : बीमारी के कारण अस्पताल में रहना पड़े अथवा जेल जाना पड़े, डर, बीमारी, उद्वेग रहे, परिवार में मृत्यु, धन-हानि, शत्रुता, भाग्य-हानि।

दूसरे भाव का स्वामी

बलवान : परिवार में वृद्धि, अच्छा भोजन, बोलने में प्रवीणता और बातचीत के द्वारा धनप्राप्ति, सन्तान-सुख।

कमज़ोर : धन-हानि, नेत्र और मुख की बीमारियां, चिन्ता, परेशानी और दुःख, अनुचित वाणी के कारण कष्ट, मृत्यु।

तीसरे भाव का स्वामी

बलवान : भाइयों से प्यार और सहयोग, अच्छी घटनाएं, हिम्मत बढ़े और कार्यों में सफलता, लोकप्रियता, ऊंची पदवी प्राप्त हो।

कमज़ोर : भ्रातृ-हानि या उनसे अनबन रहे, दूसरों के द्वारा विरोध, शत्रु से पीड़ा, हार, बेइज्ज़ती।

चौथे भाव का स्वामी

बलवान : अच्छा स्थान प्राप्त हो, ज़मीन-जायदाद का लाभ, धन और वाहन का लाभ, खेती-बाड़ी से लाभ, सम्बन्धियों से सहयोग।

कमज़ोर : माता को कष्ट, पानी से डर, पशु-हानि, बुरा भाग्य, ज़मीन-जायदाद का नाश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पांचवें भाव का स्वामी

बलवान : सरकार में ऊंचा स्थान मिले, पुत्र-जन्म या सन्तान से प्रसन्नता, विद्या में सफलता, इज्ज़त, सम्बन्धियों के साथ सुख, अच्छे कार्य।

कमज़ोर : पुत्र को कष्ट या सन्तान की वजह से पीड़ा, मानसिक तनाव और फैसला करने में देर के कारण हानि हो, शक्ति का ह्रास, राजा से भय, लोगों द्वारा ठगा जाए, विद्या में असफलता, पेट के रोग, वीर्यक्षय, बेकार रहे।

छठे भाव का स्वामी

बलवान: अच्छा स्वास्थ्य, उदारता, अपने से नीचे कार्य करने वालों और नौकरों की संख्या में वृद्धि, धन-लाभ, शत्रुओं से पराजित न किया जाए, हिम्मत से शत्रुओं का नाश करे, अच्छी नौकरी मिले।

कमज़ोर : बहुत-से खराब कार्य, धन-हानि, बीमारी और चोट लगे, चोरों से भय, दूसरों के द्वारा दबाया या परास्त किया जाए, दूसरों की सेवा में तत्पर, नौकरी छूट जाए।

सातवें भाव का स्वामी

बलवान : भोग-विलास की वस्तुएं बढ़ें, जननेन्द्रियों का सुख, विवाह हो, यात्रा में सफलता, घर में अच्छा कार्य हो, समृद्धि (साझेदारी के कार्य में)।

कमज़ोर : पति-पत्नी से सम्बन्ध-विच्छेद, दामाद को कष्ट, स्त्रियों के कारण हानि (स्त्री की जन्म-कुण्डली में पुरुषों के कारण हानि हो), जननेन्द्रिय के रोग, अनुचित कार्य, साझेदारों से मतभेद अथवा उनके द्वारा आर्थिक हानि, मृत्युतुल्य कष्ट), व्यर्थ भ्रमण करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आठवें भाव का स्वामी

बलवान : कर्जों से निवृत्ति, नया मकान बनवाने का योग (पैतृक मकान के अतिरिक्त), पशुओं और नौकरों की संख्या में वृद्धि, विरासत में धन, शत्रुता का नाश।

कमजोर : अत्यधिक दुःख, जलन, मानसिक असन्तुलन, वात बिगड़ने से बीमारी, गरीबी, मान-हानि, व्यर्थ भ्रमण करना, अपमान।

नवें भाव का स्वामी

बलवान : देवता और ब्राह्मण की भक्ति, अच्छे और शुभ कार्य, धार्मिक कृत्य, सब प्रकार की समृद्धि और अत्यधिक धन का लाभ, पत्नी, पुत्र-पौत्र इत्यादि से सुख, शान्तिपूर्ण और आनन्द से परिपूर्ण जीवन बिताए।

कमजोर : देवताओं की अप्रसन्नता (नास्तिकता और उसके परिणामस्वरूप), दुःख, पिता, पत्नी और सन्तान को दुःख, बुरे कार्यों में प्रवृत्ति, परिवार के किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु।

दसवें भाव का स्वामी

बलवान : तरक्की, मान-वृद्धि, सम्मान, नाम और यश, चतुर और सफल कार्य, धन बढ़े, आनन्दमय जीवन, जातक को सब कार्यों में (जो वह करे) सफलता मिलती है। सफल यात्राएं।

कमजोर : मानहानि, बेइज्जती, असफल यात्राएं, बुरे कार्य। जो भी कार्य करे उसमें विघ्न-बाधाएं आएं और अन्त में असफलता मिले।

ग्यारहवें भाव का स्वामी

बलवान : प्रसन्नता और समृद्धि, नौकरों की संख्या में वृद्धि, लगातार धन-लाभ और मित्रों, सम्बन्धियों के साथ मिलकर जीवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का आनन्द ।

कमज़ोर : भाई को कष्ट (विशेष रूप से बड़े भाई को), सन्तान को परेशानी, कान में दर्द, गरीबी और बेइज्जती, दुःखदायी समाचार, जातक के साथ धोखा या दगा हो।

बारहवें भाव का स्वामी

बलवान : शुभ कार्यों में अधिक व्यय करने वाला, धार्मिक कार्य करे, विदेश यात्रा।

कमज़ोर : धन कम हो जाए, बीमारी, जेल जाना पड़े, छुपे हुए दुश्मनों से पीड़ित किया जाए।

जातकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाता है कि सामान्य रूप से यदि कोई ग्रह सब प्रकार से बलवान है (अर्थात् शुभ राशि और शुभ नवांस में हो, अच्छे भाव में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या उनके साथ बैठा हो, जो ग्रह अच्छे भावों के स्वामी भी हों) तो उस बलवान ग्रह की दशा में अत्यधिक अच्छा फल मिलेगा। इसके विपरीत यदि कोई ग्रह किसी खराब भाव में हो, पीड़ित हो (राशि भाव या नवांश में), क्रूर ग्रह से दृष्ट अथवा उनके साथ हो जो स्वयं अशुभ भावों के स्वामी हैं, तो अपनी दशा में अत्यधिक खराब फल दिखाएगा। यदि किसी प्रकार से बलवान हो और किन्हीं कारणों से कमज़ोर तो मिला-जुला फल दिखाएगा।

जातकादेशमार्ग (ज्योतिष का प्राचीन ग्रन्थ) के दसवें अध्याय के ३७वें श्लोक में ग्रह को दो प्रकार से दुःखित (पीड़ित) बताया गया है। इन दो में से (अ) अच्छी राशि में तो हो परन्तु अशुभ भाव में बैठा हो जैसे कि आठवें भाव में, (ब) नीच या शत्रु राशि में बैठे परन्तु अच्छे भाव में हो जैसे कि ग्यारहवें भाव में। इन दोनों में पहली स्थिति में अपेक्षाकृत अधिक खराब फल दिखाएगा। इन सब बारीकियों का हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

तीसरा सिद्धान्त

अब हम पाठकों के समक्ष तीसरा सिद्धान्त रखते हैं। 'उडुदाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रदीप' फलित ज्योतिष का ग्रन्थ, जो पराशर के मत से ज्योतिष-शास्त्र का संक्षिप्त रूप है (पराशर ऋषि कई हजार वर्ष पहले हुए हैं और एक प्रकार से भारतीय ज्योतिष के पिता कहलाते हैं), में ग्रहों को क्रूर और शुभ दो भागों में बांटा गया है। परन्तु ये दो भाग उन नैसर्गिक कारणों से, जो कि पांचवें अध्याय में बताए गए हैं, नहीं किए गए हैं अपितु उनका शुभ या क्रूर होना इसपर निर्भर करता है कि वे किन भावों के स्वामी हैं। जैसे :

(१) लग्न (प्रथम भाव) का स्वामी हमेशा शुभ होता है।

(२) त्रिकोण के स्वामी (अर्थात् पांचवें और नवें भाव के स्वामी) शुभ होते हैं। नवें भाव का स्वामी पांचवें भाव की अपेक्षा अधिक शुभ होता है।

(३) तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव के स्वामी अशुभ (या पापी) होते हैं। छठे भाव का स्वामी तीसरे भाव के स्वामी से ज्यादा अशुभ होता है और ग्यारहवें भाव का स्वामी छठे भाव के स्वामी से भी अधिक अशुभ होता है।

(४) केन्द्र के स्वामी (पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव के स्वामी—यहां हम चौथे, सातवें और दसवें भावों के स्वामियों का विचार करेंगे क्योंकि लग्न का स्वामी हमेशा शुभ होता है) यदि नैसर्गिक शुभ हैं तो शुभ परन्तु यदि तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में से किसी एक के स्वामी भी हों तो अशुभ। यदि क्रूर ग्रह केन्द्र (४, ७, १०) के स्वामी हों तो अशुभ परन्तु यदि साथ ही त्रिकोण के स्वामी भी हुए तो शुभ होंगे। पहले, चौथे, सातवें और दसवें भावों के स्वामी उत्तरोत्तर बलवान होते हैं।

(५) आठवें भाव का स्वामी सबसे अधिक अशुभ होता है, परन्तु इसमें दो अपवाद हैं।

(क) यदि आठवें भाव का स्वामी पहले भाव का स्वामी भी हो (जैसे मेष लग्न वालों के लिए मंगल पहले और आठवें भावों का स्वामी हुआ, जैसे तुला लग्न वालों के लिए शुक्र पहले और आठवें भावों का स्वामी हुआ) तो अशुभ नहीं है, बल्कि शुभ ही होगा।

(ख) दूसरा अपवाद यह है कि सूर्य और चन्द्रमा आठवें भाव के स्वामी होने पर भी दोषी नहीं होते हैं (जैसे धनु लग्न वालों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए चन्द्रमा अष्टमेश हुआ या मकर लग्न वालों के लिए सूर्य अष्ट-मेश हुआ)। एक मत के अनुसार यदि धनु लग्न वालों के लिए सूर्य कर्क राशि में (आठवें भाव में) और मकर लग्न वालों के लिए सूर्य सिंह राशि में (आठवें भाव में) बैठा हो तब तो शुभ समझा जाएगा, परन्तु यदि किन्हीं और राशियों में हो तो पूर्ण रूप से शुभ नहीं रहेगा। हमारा अनुभव है कि सूर्य और चन्द्रमा आठवें भाव के स्वा-मित्व का मिला-जुला फल ही दिखाते हैं।

(६) दूसरे और बारहवें भावों के स्वामी अपने-आप में न तो शुभ होते हैं और न ही अशुभ। यदि सूर्य या चन्द्रमा इन भावों के स्वामी हों तो अच्छा फल दिखलाएंगे, यदि वे अच्छे भाव में बैठें और शुभ ग्रह के साथ हों (अन्य ग्रह का शुभत्व ऊपर दिए गए सिद्धांत पर आधारित है)। परन्तु यदि सूर्य या चन्द्रमा किसी क्रूर ग्रह के साथ हों या अशुभ स्थान में बैठे हों तो अशुभ होंगे। शेष पांच ग्रहों में (मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि) यदि दूसरे या बारहवें का स्वामी, साथ में किसी अच्छे भाव का स्वामी भी हो तो शुभ परन्तु यदि साथ में किसी अशुभ भाव (तीसरे, छठे या ग्यारहवें) का स्वामी भी हो तो अशुभ होता है।

योगकारक

हम पाठकों का ध्यान दो संस्कृत के शब्दों, जिनका ज्योतिष में बहुधा प्रयोग होता है, की ओर ध्यान दिलाते हैं—(अ) योग-कारक और (ब) मारक। जब कोई ग्रह एकसाथ केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी हो तो योगकारक कहलाता है। योगकारक ग्रह अपनी महादशा में अच्छा और शुभ फल दिखलाता है। जैसे वृषभ लग्न में शनि नवें और दसवें भावों का स्वामी होता है; कर्क लग्न में मंगल पांचवें और दसवें भावों का स्वामी होता है; सिंह लग्न में मंगल चौथे और नवें भावों का स्वामी, तुला लग्न में शनि चौथे और पांचवें भावों का स्वामी; मकर लग्न में शुक्र पांचवें और दसवें भावों का स्वामी और कुम्भ लग्न में शुक्र चौथे और नवें भावों का स्वामी होता है। एकसाथ ही एक केन्द्र और एक त्रिकोण का स्वामी होने के कारण 'योगकारक' हुआ। ये योगकारक ग्रह किस मात्रा में

२, ४, ५, ७, १०, ११ / १, ३, ६, ८, ९, १२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अच्छा प्रभाव दिखलाएंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस राशि में हैं, किस नवांश में हैं, किस भाव में हैंऔर किन ग्रहों के साथ हैं या किन-किन ग्रहों से दृष्ट हैं। परन्तु इन योगकारक की महादशा अच्छा फल ही दिखलाएगी।

मारक

'मारक' का मतलब है मारने वाला। पहले यह विचार करें कि आयु अल्प, मध्य या दीर्घ है और यदि इसके साथ ही निम्नलिखित ग्रहों में से किसी ग्रह की दशा आती है, तो जातक की मृत्यु (मृत्युतुल्य कष्ट) होगी।

(क) दूसरे भाव का स्वामी, (ख) सातवें भाव का स्वामी, विशेष रूप से यदि दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव में हो या सातवें भाव का स्वामी दूसरे भाव में हो। यह ध्यान रखिए कि यदि चन्द्रमा, बुध, शुक्र या बृहस्पति सातवें भाव के स्वामी हैं तो इन ग्रहों की मारक शक्ति उत्तरोत्तर अधिक होती है। इसलिए बुध सातवें भाव का स्वामी होकर चन्द्रमा से अधिक मारक होगा, शुक्र सातवें भाव का स्वामी होकर बुध की अपेक्षा अधिक मारक होगा और बृहस्पति सातवें भाव का स्वामी होकर सबसे अधिक मारक दोषयुक्त होगा—विशेष रूप से उस हालत में जबकि ऊपर बताए गए चार ग्रह दूसरे या सातवें भाव में भी बैठे हों। परन्तु यदि जातक की दीर्घ आयु हो और उसके मारकेश की दशा आए तो जातक उस दशा में बीमार तो ज़रूर पड़ेगा (मारकेश की महादशा में जब मारकेश का अन्तर भी हो या मारकेश की महादशा में किसी अशुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो), परन्तु उसकी मृत्यु नहीं होगी। यदि अन्तिम दिनों में मारकेश की दशा न हो तो जातक की मृत्यु बारहवें, ग्यारहवें, आठवें, छठे या तीसरे भावों के स्वामी की दशा-अन्तर्दशा में होगी। इन सब ग्रहों में शनि यदि मारकेश है अथवा ३, ६ या ११ भावों का स्वामी तो उसका दोष सबसे अधिक होता है। मृत्यु का ठीक-ठीक समय जानना असम्भव है, क्योंकि अच्छे कार्य करने से आयु बढ़ती है और अशुभ कार्यों से आयु का क्षय होता है।

२,४,७,८ को पतिको दशा-अन्तरदशामा कष्ट गर्छ/उद्छ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्मेण हन्यते व्याधिः हन्यते ग्रहः ।
धर्मेण हन्यते शत्रु यतोधर्मस्ततो जयः ॥

लग्न के अनुसार ग्रह का प्रभाव (शुभाशुभ)

अब हम प्रत्येक लग्न के लिए कौन-से ग्रह शुभ होते हैं और कौन-से ग्रह अशुभ, यह बताते हैं। यदि जिस जन्म-कुण्डली का विचार करना हो उसमें मेष लग्न उदय हो तो नीचे दिए गए 'मेष' में देखें। यदि आपका सिंह लग्न का जन्म हो तो 'सिंह' में देखें इत्यादि।

मेष : सूर्य, चन्द्र, मंगल और वृहस्पति शुभ, शुक्र और शनि अशुभ। बुध मारक।

वृषभ : सूर्य, शुक्र और शनि शुभ। बुध शुभ है, परन्तु दूसरे भाव का स्वामी होने से मारक भी होता है। चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पतिअशुभ।

मिथुन : बुध और शुक्र शुभ। वृहस्पति में मारक दोष है, इसके अलावा शुभ। चन्द्रमा सम है और मारकेश भी नहीं होगा, यदि क्रूर ग्रह के साथ न हो। सूर्य, मंगल और शनि अशुभ हैं। शनि का आठवें भाव का स्वामी होना उसके नवें भाव के स्वामित्व की अपेक्षा अधिक फल दिखाता है। परन्तु यदि शनि स्वयं आठवें या नवें भाव में बैठा भी हो तो शुभ फल दिखलाएगा।

कर्क : चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति शुभ हैं। वृहस्पति छठे भाव की अपेक्षा नवें भाव का फल अधिक देगा। सूर्य सम है। (न अशुभ न शुभ) बुध, शुक्र और शनि अशुभ हैं।

सिंह : सूर्य और मंगल शुभ हैं। वृहस्पति यदि पांचवें या आठवें भाव में हो तो शुभ वरना मिश्रित प्रभाव दिखलाएगा। चन्द्रमा सम है। बुध, शुक्र और शनि अशुभ।

कन्या : बुध और शुक्र शुभ हैं,, परन्तु शुक्र मारकेश हो सकता है। वृहस्पति शुभ है, परन्तु यह भी मारक हो सकता है। शनि मिला-जुला प्रभाव दिखलाता है, परन्तु यदि पांचवें भाव में हो तो अच्छा फल दिखलाएगा। सूर्य सम है। चन्द्रमा और मंगल अशुभ हैं।

तुला : बुध, शुक्र और शनि शुभ। कुछ मात्रा में चन्द्रमा भी शुभ होता है। सूर्य और बृहस्पति अशुभ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृश्चिक : सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति शुभ हैं, परन्तु वृहस्पति मारक है। वुध, शुक्र और शनि अशुभ।

धनु : सूर्य, मंगल और वृहस्पति शुभ। वुध भी शुभ है, परन्तु मारक हो सकता है। शुक्र और शनि अशुभ है। चन्द्रमा के आठ या अधिक कलाएं उदित हों तो अच्छा फल दिखलाता है।

मकर : शुक्र और शनि शुभ होते हैं। वुध भी शुभ होता है (वुध का नवें भाव का स्वामित्व छठे भाव के स्वामित्व से अधिक वलवान है)। सूर्य यदि शुभ राशि और भाव में हो तो शुभ होता है। चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति अशुभ।

कुम्भ : शुक्र और शनि शुभ। चन्द्रमा, सूर्य, मंगल और वृहस्पति अशुभ। वुध यदि पांचवें या आठवें भाव में हो तो अच्छा फल दिखाता है, वरना मिश्रित फल दिखाता है।

मीन : चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति शुभ हैं। वुध भी शुभ है, परन्तु मारक होता है। सूर्य, शुक्र और शनि अशुभ हैं।

(१) ऊपर वताए गए विभाग में यदि तीसरे भाव का स्वामी तीसरे में हो या छठे भाव का स्वामी छठे में हो या ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्यारहवें में हो तो अशुभ नहीं समझा जाता अपितु अपनी महादशा में अच्छा फल देता हैं।

(२) किसी जन्म-कुण्डली का विचार करने में यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि किसी त्रिकोण का स्वामी किसी केन्द्र के स्वामी के साथ सम्वन्ध रखे तो उन दोनों ही ग्रहों की महादशा में अच्छा फल प्राप्त होता है।

(३) राजयोग का अधिक फल होगा, यदि किसी केन्द्र का स्वामी दोनों ही त्रिकोणों के स्वामियों से सम्वन्धित हो या किसी त्रिकोण का स्वामी एक से अधिक केन्द्रों के स्वामियों से सम्वन्धित हो।

(४) यह फल कुछ कम मात्रा में होगा, यदि केन्द्र और त्रिकोण के स्वामियों के सम्वन्ध के साथ तीसरे, छठे, आठवें या ग्यारहवें भाव के स्वामी का सम्वन्ध भी हो (आठवें या ग्यारहवें भाव का स्वामी जिस ग्रह या जिस भाव से सम्वन्धित हो, उस भाव को नष्ट कर देता है)।

(५) परन्तु मान लीजिए, त्रिकोण का स्वामी किसी अशुभ स्थान का स्वामी भी हो या किसी केन्द्र का स्वामी किसी अशुभ भाव का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वामी हो, ऐसी दशा में भी क्या त्रिकोण और केन्द्र के स्वामी का सम्बन्ध भी अच्छा रहेगा और क्या उनकी दशाओं में अच्छा फल प्राप्त होगा ? जी हां, यदि वे अशुभ ग्रहों के स्वामी नहीं होते तो अत्यधिक शुभ फल करते। अब शुभ फल तो करेंगे परन्तु कुछ अल्प मात्रा में। राहु और केतु यदि किसी कोण में बैठें और उनके साथ किसी केन्द्र का स्वामी हो अथवा किसी केन्द्र में बैठे हों और उनके साथ किसी कोण का स्वामी हो, तो अपनी दशा में अत्यधिक अच्छा प्रभाव दिखाते हैं।

(८) प्रत्येक ग्रह अपनी दशा में उस भाव का खराब फल दिखाते हैं जिस भाव में दशा नाथ की (जिस ग्रह की दशा हो) वह राशि हो जिसमें वह नीच का होता है और जिस राशि में वह उच्च का होता है, वह जिस भाव में बैठे, उस भाव सम्बन्धी, शुभ फल होते हैं। उदाहरण के लिए सिंह लग्न वाले जातक को सूर्य की महादशा में तीसरे भाव का अशुभ फल मिलेगा (तीसरे भाव में तुला राशि है और तुला में सूर्य नीच का होता है) और क्योंकि मेष सूर्य की उच्च राशि है इसलिए सूर्य की दशा में नवें भाव का शुभ फल होगा।

हमने महादशा का विश्लेषण करने के लिए काफी सिद्धान्त बताए हैं और पाठक जितना अधिक इसका अनुभव करेंगे उतना ही निष्कर्ष निकालने में उन्हें सफलता मिलती जाएगी।

अन्तर्दशा

महादशा का काल काफी लम्बा है—जैसे शुक्र के २० वर्ष, शनि के १६ वर्ष इत्यादि। इसमें सूर्य की महादशा के वर्ष सबसे कम हैं, लेकिन वह भी ६ वर्ष है। कई व्यक्ति लगातार जीवन में बढ़ते ही रहते हैं, कुछ व्यक्ति क्रमशः धन और व्यवसाय में निरन्तर नीचे ही जाते हैं और बहुत-से व्यक्ति कभी समय का और कभी खराब समय का अनुभव करते हैं क्योंकि जीवन में हमेशा अच्छा ही होता रहे या हमेशा ही खराब होता रहे, ऐसा नहीं होता। दिन के बाद रात, रात के बाद दिन। जीवन-मृत्यु—यह जीवन का चक्र है। इसलिए प्रत्येक महादशा को नौ-नौ भावों में बांटा गया है जिसे हम अन्तर्दशा कहते हैं। इस अन्तर्दशा से यह भी बात हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाती है कि महादशा में कब उतार और चढ़ाव आएगा। कभी-कभी तो जातक का धन तो बढ़ता रहे परन्तु उसका स्वास्थ्य अच्छा न रहे, परिवार में दुःख हो या मुकदमेबाजी इत्यादि। कभी-कभी बाहर से देखने पर तो खराब प्रतीत नहीं होता परन्तु धन, पशु, समृद्धि तो होती है, परन्तु मानसिक अशान्ति रहती है और जीवन में हलचल मच जाती है। अन्तर्दशा की गणना हम पिछले अध्याय में बता चुके हैं। अन्तर्दशा के साथ ही जब हम गोचर का विश्लेषण भी करते हैं तब घटना कब घटेगी, इसका समय ज्ञात होता है। गोचर का प्रभाव हम अगले अध्याय में बताएंगे। अन्तर्दशा का निर्णय करने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों को देखिए।

साधारण सिद्धान्त

(१) अन्तर्दशा के स्वामी का भी उसी प्रकार विचार कीजिए जैसे महादशा के स्वामी का। जो तीन सिद्धान्त पहले गए हैं उनसे ज्ञात हो जाएगा कि अन्तर्दशा का स्वामी बलवान है या कमजोर, शुभ है या अशुभ और अन्तर्दशा कैसी जाएगी। जो-जो फल महादशा के बताए गए हैं वही सब फल अन्तर्दशा में भी उसी प्रकार होंगे।

(२) जब महादशा अच्छी हो और अन्तर्दशा भी अच्छी हो, तब समृद्धि, उत्थान, अच्छा समय और सब प्रकार से प्रसन्नता होती है।

(३) जब महादशा और अन्तर्दशा दोनों ही खराब हों तो जातक को दुःख मिलता है। यह दुःख गरीबी का होगा, बीमारी से, मृत्यु से, मुकदमे में हार से, शत्रु द्वारा, पारिवारिक क्लेश या और किसी प्रकार का खराब फल। यह जिस ग्रह की दशा और अन्तर्दशा है उसपर निर्भर करता है। ग्रह का (अ) अपना जो नैसर्गिक स्वभाव है, (ब) वह जिन भावों का स्वामी है, (स) जिस भाव में बैठा है, (द) जिन भावों को देखता है, (य) जिन ग्रहों के साथ बैठा है या जिन ग्रहों से देखा जाता है—इन पांचों ही बातों का फल होगा। जब अच्छा फल होगा तो भी इन सब प्रकार से अच्छा फल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिखलाएगा।

(४) जब महादशा तो अच्छी हो और अन्तर्दशा खराब हो तो अन्तर्दशा का खराब फल ही होगा, परन्तु उतनी खराब मात्रा में नहीं। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति को एक योगकारक ग्रह की महादशा है, तो मारकेश की अन्तर्दशा होने पर भी जातक की मृत्यु नहीं होगी। हां, वह बीमार अवश्य पड़ेगा।

(५) जब महादशा खराब हो, अन्तर्दशा अच्छी हो तो अच्छा फल होगा, परन्तु अधिक मात्रा में नहीं। महादशा का अशुभ फल अन्तर्दशा के शुभ फल को कम करेगा (चार और पांच में बहुधा ऐसा होता है कि अन्तर्दशा जीवन के किसी भाग में अपना फल दिखाती है और महादशा जीवन के किसी दूसरे भाग में, जैसे किसी को पिता की मृत्यु का दुःख तो हो और उसके साथ ही विरासत में धन मिले। नौकरी छूट जाए परन्तु नया कार्य करने में अत्यधिक सफलता का अनुभव हो)।

(६) यदि अन्तर्दशानाथ, दशानाथ से छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो उसकी दशा में कठिनाइयां आएंगी। यदि दोनों ही अशुभ हों तो अत्यधिक खराब फल होगा। यदि ये दोनों ही मारक हों और जन्म-कुण्डली में आयु क्षीण हो तो मृत्यु होती है।

(७) दशानाथ से अन्तर्दशानाथ जन्म-कुण्डली से बारहवें में बहुत व्यय कराएगा।

(८) ग्रह अपनी महादशा में और अपनी ही अन्तर्दशा में पूरा फल नहीं दिखाता है। महादशा का पूरा फल उस ग्रह की अन्तर्दशा में होता है जिसका स्वभाव महादशानाथ की तरह हो अथवा उसका महादशा नाथ के साथ 'सम्बन्ध' हो। दो ग्रहों के एक-दूसरे से स्वभाव से हमारा क्या तात्पर्य है? दोनों ग्रह शुभ हों तो एक से स्वभाव के होंगे। यदि दोनों ग्रह अशुभ हों तो भी एक ही स्वभाव के होंगे।

(९) शुक्र और शनि एक की महादशा और दूसरे की अन्तर्दशा में विशेष प्रकार से फल देते हैं। जब शुक्र की महादशा हो तो शुक्र का पूर्ण फल शनि की अन्तर्दशा में होगा। शुक्र की महादशा में अपनी स्वयं की अन्तर्दशा में शनि का फल होगा। इसी प्रकार जब शनि की महादशा हो तो शनि अपना पूरा प्रभाव शुक्र की अन्तर्दशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में दिखाएगा। जिस समय शनि की महादशा में शनि की ही अन्तर्दशा होगी, उस समय शुक्र का फल होगा। यह विशेष झुकाव केवल शुक्र और शनि के अपनी दशा और अन्तर्दशा तक ही सीमित है।

(१०) (अ) जब केन्द्र का स्वामी किसी ग्रह की महादशा हो और उसमें किसी त्रिकोण के स्वामी ग्रह की अन्तर्दशा हो या (ब) किसी त्रिकोण का स्वामी ग्रह की महादशा हो और उसमें किसी केन्द्र के स्वामी की अन्तर्दशा हो, तो यदि दशानाथ और अन्तर्दशा नाथ में 'सम्बन्ध' है (जो केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी हैं) तो अत्यधिक शुभ फल होगा। इसके अतिरिक्त ऐसे ग्रह की महादशा में जब दूसरे ग्रहों की अन्तर्दशा भी आएगी उस समय भी अच्छा भाग्य और समृद्धि रहेगी (ज्योतिष में केन्द्र और त्रिकोण के स्वामियों का आपस में सम्बन्ध राजयोगकारक होता है)।

(११) शनि की मारक शक्ति सब ग्रहों से अधिक होती है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि किसी मारकेश की महादशा हो तो उसमें शनि की अन्तर्दशा आने पर मृत्यु हो सकती है। इसी प्रकार जब वुढ़ापे में शनि की महादशा हो तो किसी भी मारकेश की अन्तर्दशा में मृत्यु हो सकती है। इसका कारण यह है कि अपनी स्वयं की अन्तर्दशा में ग्रह अपना पूरा फल नहीं दिखाता।

(१२) शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में 'मारक' ग्रह अपनी जबकि उससे किसी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा होती है (चाहे इस शुभ ग्रह का मारकेश से सम्बन्ध भी हो)। मारक ग्रह अपनी महादशा में मृत्यु का कारक उस समय होगा जबकि उसमें किसी अशुभ ग्रह की अन्तर्दशा आएगी [। दशानाथ और अन्तर्दशानाथ का आपस में कोई भी सम्बन्ध न हो।

(१३) अन्तर्दशानाथ का दशानाथ से ज्यादा प्रभाव होता है। अन्तर्दशानाथ के अनुरूप ही खराब या अच्छा फल उस समय होगा जब सूर्य अपने गोचर में अन्तर्दशानाथ जिन राशियों का स्वामी है उनमें से जाएगा। इसलिए मंगल की अन्तर्दशा में जब हमें देखना हो कि किस महीने में घटना होगी तो पंचांग में देखना चाहिए कि सूर्य मेष या वृश्चिक में (जो मंगल की राशियां हैं) से कब जाएगा। मंगल का प्रभाव इन दोनों सूर्य-मासों में अधिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगा। अब मान लीजिए कि हमें यह देखना हो कि अन्तर्दशानाथ का स्वामी बृहस्पति कब प्रभाव दिखाएगा तो उसके लिए पंचांग में देखिए कि सूर्य धनु या मीन राशियों में कब जाएगा। इसी प्रकार जब अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाएं हों तो उनकी राशि में गोचर का सूर्य जाने पर दशा का पूर्ण फल मिलेगा। उनमे लग्न अनुसार अन्तर्दशानाथ का पहिला राशि मे सूर्य जायगा। जन्म समय सूर्य कितना अंश मे होगा उस अंशमे सूर्य जब प्रवेश होगी।

व्यावहारिक सिद्धान्त

अब हम कुछ ऐसे व्यावहारिक सिद्धान्त बतलाते हैं जिनसे अन्तर्दशा की गणना नहीं करनी पड़े।

आयु		ग्रह
(१) जन्म से ४ वर्ष तक		(1) चन्द्रमा का प्रभाव होता है।
(२) ५ से १४	,,	(2) बुध का प्रभाव रहता है।
(३) १५ से २२	,,	(3) शुक्र का प्रभाव रहता है।
(४) २३ से ४१	,,	(4) सूर्य का प्रभाव रहता है।
(५) ४२ से ५६	,,	(5) मंगल का प्रभाव रहता है।
(६) ५७ से ६८	,,	(6) बृहस्पति का प्रभाव रहता है।
(७) ६९ वर्ष के बाद		(7) शनि का प्रभाव रहता है।

मान लीजिए, आपके पास ३९ वर्षीय व्यक्ति सलाह के लिए आता है और उसकी जन्म-कुण्डली देखने पर सूर्य-पीड़ित है परन्तु मंगल बलवान। ऐसी दशा में आप उसको निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उसकी कठिनाइयां ४१ वर्ष तक दूर हो जाएंगी और ४२ वर्ष से ५६ वर्ष तक अत्यधिक अच्छा समय रहेगा। ये ग्रह दशाएं सब व्यक्तियों पर लागू होती हैं। जन्म-कुण्डली देखकर यदि ग्रह बलवान हों तो जिन वर्षों में उनका प्रभाव है वे अच्छे जाएंगे परन्तु यदि ग्रह कमजोर हैं, तो उन ग्रहों के वर्ष, जो ऊपर सारिणी में बताए गए हैं, अशुभ रहेंगे।

दूसरा सिद्धान्त

प्रत्येक ग्रह के अपने विशेष वर्ष होते हैं, जैसे सूर्य का २२वां, चन्द्रमा का २४वां, मंगल का २८वां, बुध का ३२वां, बृहस्पति का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१६वां, शुक्र का २५वां; शनि का ३६वां, राहु का ४२वां और केतु का ४८वां।

मान लीजिए कि एक व्यक्ति आपके पास अपने २०वें वर्ष में आया है और उसका प्रश्न है कि उसे नौकरी कब मिलेगी? यदि आप देखें कि उसकी जन्म-कुण्डली में सूर्य सिंह राशि के दशम स्थान में बैठा है तो आप उसे कह सकते हैं कि २२वें वर्ष में उसे नौकरी मिलेगी। परन्तु यदि आप देखें कि सूर्य कमज़ोर है और पीड़ित भी तो उसका २२वां वर्ष खराब जाएगा।

दूसरा उदाहरण लीजिए। किसी कन्या की जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा किसी अच्छे भाव का स्वामी हो और सातवें भाव में बैठा हो, बृहस्पति से दृष्ट भी हो (यदि यह कन्या २३ वर्ष तक अविवाहित है) तो आप यह पूर्ण रूप से कह सकते हैं कि कन्या का विवाह २४वें वर्ष में होगा। इसका कारण यह है कि २४वां वर्ष चन्द्रमा का है, चन्द्रमा सप्तम भाव (विवाह-स्थान) में बैठा है और बृहस्पति से दृष्ट होने से विवाह कराएगा।

इसके अतिरिक्त इन वर्षों का और भी लाभ उठाया जा सकता है। जैसे सूर्य नवें भाव का स्वामी हो और जन्म-कुण्डली में किसी भी शुभ स्थान में बैठा हो तो हम पूर्ण रूप से कह सकते हैं कि जातक का २२वां वर्ष अच्छा रहेगा और भाग्य में वृद्धि होगी।

अब मान लीजिए कि मकर लग्न वाले जातक की कुण्डली में चन्द्रमा किसी भी शुभ भाव में बलवान होकर बैठा हो तो सातवें भाव का स्वामी होने के कारण २४वें वर्ष में विवाह (अथवा साझेदारी में) कार्य करवाएं। विवाह और साझेदारी सातवें भाव से देखी जाती है।

भाव और वर्ष

अब हम एक और तरीका बताते हैं। प्रत्येक भाव का जीवन के विशेष वर्षों से सम्बन्ध है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव	आयु
नवां भाव	१ से २४ तक
दसवां भाव	२५ से २६ तक
ग्यारहवां भाव	२७ से २८ तक
बारहवां भाव	२९ से ३० तक
पहला भाव	३१ से ३३ तक
दूसरा भाव	३४ से ३६ तक
तीसरा भाव	३७ से ३९ तक
चौथा भाव	४० से ४५ तक
पांचवां भाव	४६ से ५१ तक
छठा भाव	५२ से ५७ तक
सातवां भाव	५८ से ६५ तक
आठवां भाव	६६ वर्ष से अन्तिम समय तक

Hirohito.

जापान के सम्राट हीरोहितो — (जापान)

इनका जन्म २९ अप्रैल १९०१ को टोकियो में रात्रि १०-१०

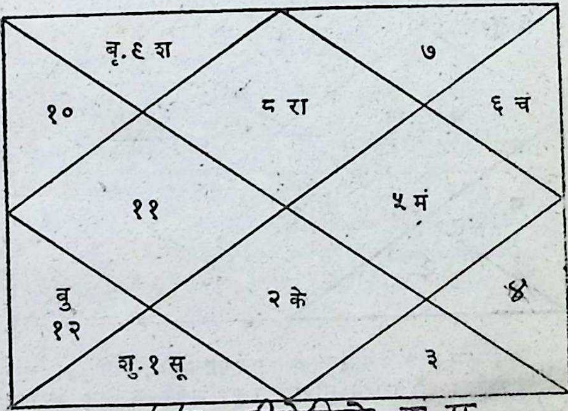

Hirohito- हीरोहितो जा. स.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(स्थानीय मध्यम काल) पर हुआ। दशम स्थान में मंगल है। यह राज्यकारक ग्रह है। हमने पीछे बताया है कि दसवें भाव का २५वें और २६वें वर्षों से विशेष संबंध है। २६वें वर्ष में अपने पिता के स्वर्गवास के बाद यह जापान के शासक बने।

उदाहरण

मान लीजिए, आपके पास कोई व्यक्ति अपने ३८वें वर्ष में आया। जन्म-कुण्डली में आपने देखा कि उस व्यक्ति का तीसरा भाव कमज़ोर और पीड़ित है, परन्तु चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव से ही बलवान और शुभ ग्रह दृष्ट हो तो हम ज़ोर देकर कह सकते हैं कि जातक के कष्ट ३९वें वर्ष में समाप्त हो जाएंगे और ४०वें से ४५वें वर्ष तक का समय अच्छा व्यतीत होगा।

जन्म-लग्न

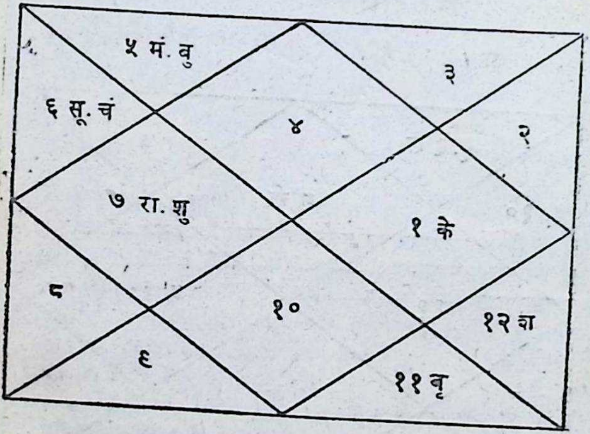

इस जन्म-कुण्डली में पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि है। चन्द्रमा कन्या राशि में है। पेट की बीमारियां दूर करने के लिए इन्होंने मूंगा धारण किया और पिछले चौदह वर्षों में इन्हें कोई पेट या गले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का रोग नहीं हुआ।

पिछले सैकड़ों वर्षों के अनुभव से यह निश्चित किया जा चुका है कि किसी भी ग्रह के दुष्प्रभाव को उस ग्रह का रत्न धारण करके कम किया जा सकता है (देखिए पृष्ठ संख्या १६८)। रत्न धारण करने से पहले उसे पहनकर तीन दिन तक परीक्षा करनी चाहिए। यदि अच्छा प्रभाव प्रतीत हो तो उसे अंगूठी में या लॉकेट में इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि उसका नीचे का हिस्सा शरीर के चमड़े को स्पर्श करता रहे। मान लीजिए, परीक्षा के तीन दिनों में नीलम कोई दुष्प्रभाव दिखाता है तो उसे तुरन्त लौटा देना चाहिए और तब दूसरा नीलम धारण करें। ग्रहों के लिए जो धातुएं बताई गई हैं उन्हें धारण करने से भी कुछ हद तक ग्रहों की तीव्रता में फल पड़ता है। यदि जन्म-कुण्डली में एक ग्रह बलवान हो तब उस ग्रह का रत्न धारण करने से उस ग्रह का अच्छा प्रभाव और भी बढ़ेगा। इसलिए रत्न धारण करना अच्छा है। (१) जन्म-कुण्डली में ग्रह-स्थिति से, (२) गोचर में जाते हुए ग्रह से, (३) दशा-अन्तर्दशा के आधार पर करना चाहिए।

सुदर्शन-चक्र पद्धति

ग्रहों का फल किस समय होगा, यह देखने का एक तरीका और भी है। यह सुदर्शन-चक्र पद्धति कहलाता है। इसमें दशा-अन्तर्दशा की गणना करने की आवश्यकता नहीं होती है।

यहां लग्न, सूर्य और चन्द्रमा से विचार किया जाता है। इन तीनों से ही प्रत्येक भाव को एक-एक वर्ष समझना और इस प्रकार प्रत्येक बारह वर्ष बाद पुनः वही स्थान आता है। उदाहरण के लिए आगे श्री संजय गांधी की जन्म-कुण्डली देखिए। इसमें ३४वें वर्ष का विचार दसवें भाव से किया जाएगा।

यहां ३४वें वर्ष में लग्न से १०वें भाव में शुक्र और बृहस्पति हैं, सूर्य से दसवें भाव में (३४वें वर्ष) चन्द्रमा है, चन्द्रमा से दसवें भाव में राहु है। अर्थात् ३४वां वर्ष फलदायक रहेगा। इस वर्ष यह संसद सदस्य बने और पुत्र का जन्म हुआ। वर्ष समाप्त होने से

लग्न = शरीरआकृति /
चन्द्र = मस्तिष्क /
सूर्य = आत्मा /

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-लग्न

संजय गांधी

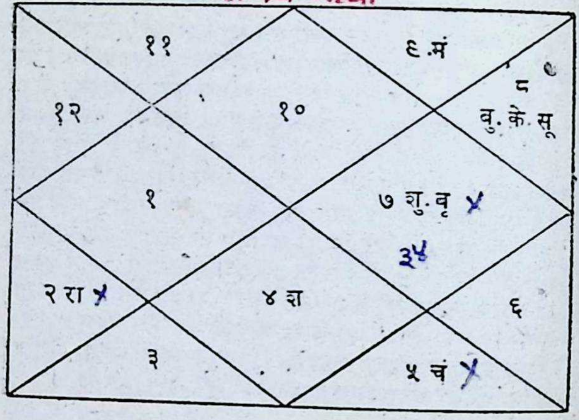

पहले कुछ खराब हो (राहु चन्द्रमा से दशम राशि में है इसलिए अच्छा फल नहीं होगा)।

लग्न चक्र पद्धति

प्रथम	१ से १२ तक
द्वितीय	१३ से २४ तक
तृतीय	२५ से ३६ तक
चतुर्थ	३७ से ४८ तक
पंचम	४९ से ६० तक
षष्ठ	६१ से ७२ तक
सप्तम	७३ से ८४ तक
अष्टम	८५ से ९६ तक
नवम	९७ से १०८ तक

निर्माता:- दैवज्ञ जयन्द्र बी. मल्ल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय—११

गोचर

बहुत-सी कुण्डलियों में केवल जन्म-चक्र रहता है, न तो स्पष्ट ग्रह रहते हैं, न ही महादशा और अन्तर्दशा। ऐसी स्थिति में जन्म-चक्र से ही फलादेश का ज्ञान करना होता है और वही बतलाना पड़ता है। यह नीचे बताया जाता है :

जिन कुण्डलियों में स्पष्ट ग्रह, दशा-अन्तर्दशा दी हुई होती है उनमें भी सम्यक् विचार के लिए गोचर का प्रयोग किया जाता है क्योंकि बिना गोचर के विचार अधूरा रहता है। हां, यह अवश्य है कि दशा-अन्तर्दशा प्रधान है, गोचर गौण।

गोचर क्या है? ज्योतिष में गोचर किसी ग्रह का भचक्र की किसी राशि विशेष में से जाने का नाम गोचर है। 'गो' का मतलब है आकाश, जो जाता है। 'चर' का मतलब है, संचार। इसलिए दिनानुदिन आकाश में जो ग्रह जाते हैं उन्हें गोचर कहते हैं। जब जिस राशि में ग्रह जाता है तब उस राशि में गोचरवश ग्रह हुआ यह कहते हैं। जन्म-चक्र स्थिर है। इसमें ग्रह की स्थिति जैसी जन्म काल में है वैसी होती है, परन्तु ग्रह स्थिर नहीं हैं—चलते रहते हैं। इसलिए जब जहां पर जाते हैं वहां पर उनकी स्थिति कही जाती है। भचक्र में ये चलते रहते हैं और भचक्र को पूरा करने पर फिर उसी मार्ग में दुबारा जाते हैं। इसलिए जब हम गोचर विचार करते हैं तो जन्मकालीन ग्रह की स्थिति और ग्रह कहां जा रहा है, दोनों का ही विचार करते हैं। इसलिए गोचर में केवल यह विचार किया जाता है कि ग्रह कहां जा रहा है। मान लीजिए कि आपको दिसम्बर, १९७६ का विचार करना है तो आपके पास दिसंबर, १९७६ का पंचांग होना चाहिए। अगर आपके पास पंचांग होगा तो आप प्रत्येक ग्रह की स्थिति किस राशि, किस अंश में है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह ज्ञात कर सकेंगे।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में गोचर का विचार साधारण रूप में जन्म राशि (अर्थात् चन्द्रमा जिस राशि में हो) से किया जाता है। उदाहरणस्वरूप नीचे दी गई जन्म-कुण्डली देखिए :

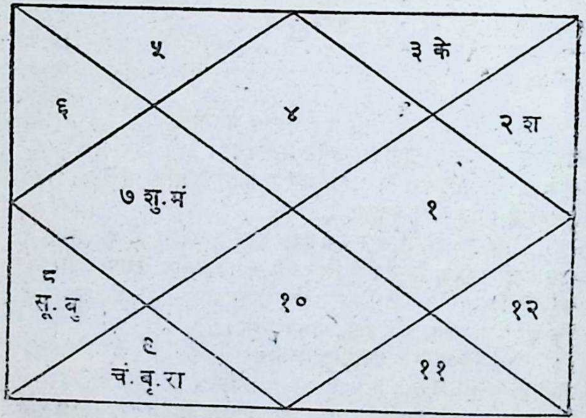

इस जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा धनु राशि में है। इसमें धनु राशि से गोचर का विचार किया जाएगा, अर्थात् धनु को एक, मकर को दूसरा, कुम्भ को तीसरा स्थान और इसी प्रकार से अन्य स्थान समझने चाहिए। मान लीजिए, आपकी मीन राशि है और हम कहें कि मंगल गोचर से अष्टम स्थान में जा रहा है, तो इसका मतलब यह होगा कि मंगल तुला में जा रहा है, क्योंकि मीन से तुला का आठवां स्थान हुआ।

मान लीजिए, आपके मित्र का चन्द्रमा कर्क में स्थित है, तो उनकी कर्क राशि हुई। जब हम कहेंगे कि शनि तीसरे में जा रहा है, तो इसका तात्पर्य यह समझना चाहिए कि शनि कन्या में जा रहा है। कन्या का कर्क राशि से तीसरा स्थान हुआ। इसी प्रकार से प्रत्येक स्थान का विचार करना चाहिए।

इस अध्याय में पहला, दूसरा, तीसरा इत्यादि की गणना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातक की जन्म राशि में समझनी चाहिए।

हमारे यहां चन्द्रमा जिस राशि में हो उसे जन्म राशि या राशि कहा जाता है। जब हम किसी ग्रह की जन्म के समय की स्थिति बताते हैं तो कहते हैं कि ग्रह तीसरे स्थान में या चौथे स्थान में है तो उस समय हम जन्म लग्न से भाव की गणना करते हैं। परन्तु जब हमें गोचर का विचार करना है तो हम ग्रह तीसरे स्थान में जा रहा है या चौथे स्थान में जा रहा है, तो उस समय जन्म राशि से गणना करते हैं। जैसे गोचर का सूर्य, गोचर का चन्द्रमा या गोचर का मंगल इत्यादि। मान लीजिए किसी व्यक्ति की वृश्चिक राशि है और जिस दिन चन्द्रमा गोचर से मिथुन राशि में जा रहा हो वह व्यक्ति ज्योतिष से सलाह ले तो उस समय गोचर का चन्द्रमा अष्टम में हुआ, क्योंकि वृश्चिक से गणना करने पर मिथुन आठवीं राशि हुई। जिन पाठकों को ज्योतिषी का प्रारम्भिक ज्ञान है उन्हें तो ये सब आता ही है, परन्तु नये पाठकों के शंका-समाधान के लिए ही यह सब यहां कहा गया है जिससे उन्हें समझने में आसानी हो।

सूर्य का गोचर

चन्द्र राशि से गोचर का सूर्य (अ) तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें में शुभ होता है। (ब) पहले, दूसरे, पांचवें, सातवें और नवें में अशुभ फल देता है। (स) चौथे, आठवें और बारहवें में अत्यन्त खराब फल देता है।

सूर्य का गोचर फल उस समय नहीं होता है जब यदि कोई अन्य ग्रह (शनि के अलावा) किसी वेध स्थान में होता है। पुराणों में सूर्य को शनि ग्रह का पिता कहा गया है। इसलिए यदि और कोई ग्रह वेध स्थान में हो तो सूर्य के प्रभाव में अवरोध होता है। परन्तु शनि यह अवरोध उत्पन्न करने में असमर्थ है—पुत्र होने के कारण।

इन अवरोध स्थानों को ही संस्कृत भाषा में वेध स्थान कहा गया है।

वेध

३	६	१०	११
९	१२	४	५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(अ) तीसरा और नवां, (ब) छठा और बारहवां, (स) दसवां और चौथा और (द) ग्यारहवां और पांचवां—ये दो-दो के चार जोड़े हैं। यदि जिस समय सूर्य राशि से तीसरे स्थान में जा रहा हो और उसी समय कोई अन्य ग्रह (शनि के अलावा) नवें स्थान में जा रहा हो तो सूर्य का तीसरे स्थान में जाने का शुभ फल नहीं होगा। इसी प्रकार यदि सूर्य नवम में जा रहा हो और उसी समय कोई अन्य ग्रह शनि के अलावा चन्द्रमा से तीसरे स्थान में जा रहा हो तो सूर्य के अशुभ फल को नहीं होने देता है। इसी प्रकार अन्य स्थानों का वेध विचार करना चाहिए।

गोचर का चन्द्र

चन्द्रमा एक चक्र (बारह राशियों का भ्रमण) करीब २७ दिन और कुछ घण्टों में पूरा करता है, अर्थात् एक राशि में उसे साधारण तौर पर २ दिन और ६ घण्टे लगते हैं। जिस समय चन्द्रमा के गोचर का विचार करना हो तो हमें यह देखना है कि वह किस राशि में जा रहा है—जन्म राशि से किस स्थान में जा रहा है।

(अ) गोचर का चन्द्रमा जब राशि से पहले, दूसरे, तीसरे, पांचवें, छठे, सातवें, नवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान में जाता है तो अच्छा फल करता है। (ब) जब गोचर का चन्द्रमा राशि से चौथे, आठवें और बारहवें स्थान में जाता है तब खराब फल करता है।

वेध

शुभस्थान	१	३	६	७	१०	११
वेधस्थान	५	९	१२	२	४	८

जन्म राशि से जब गोचर का चन्द्रमा पहले स्थान में हो तो उसका असर उस समय नहीं होगा जबकि कोई दूसरा ग्रह (बुध के अलावा) उसी समय में पांचवें स्थान में जा रहा हो। पुराणों में यह कहा गया है कि चन्द्र का सम्बन्ध वृहस्पति की पत्नी तारा से था, और इससे बुध की उत्पत्ति हुई। इसलिए हमने कहा कि कोई दूसरा ग्रह चन्द्रमा के प्रभाव को रोक देगा। परन्तु बुध इस प्रभाव को रोकने में असमर्थ है—पुत्र, पिता के प्रभाव को दूर नहीं कर सकता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीछे दी गई सारिणी से यह स्पष्ट है कि (अ) १ और ५ (ब) ३ और ९ (स) ६ और १२ (द) ७ और २ (य) १० और ४ तथा (र) ११ और ८वें स्थानों में परस्पर वेध है। उदाहरण के लिए गोचर का चन्द्रमा जब आठवें स्थान में जा रहा हो तो उसका कोई भी खराब प्रभाव नहीं होगा। यदि उसी समय ग्यारहवें स्थान पर से (बुध के अलावा) कोई दूसरा ग्रह जा रहा हो। इसी प्रकार यदि कोई दूसरा ग्रह (बुध के अलावा) अष्टम में जा रहा हो तो ग्यारहवें स्थान में जाते हुए चन्द्रमा का शुभ प्रभाव भी नहीं हो पाएगा।

मंगल का गोचर

चन्द्र राशि से गिनने पर मंगल का गोचर (अ) तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान में अच्छा फल करता है। (ब) पहले, दूसरे, पांचवें, सातवें और नवें में अशुभ फल करता है। (स) चौथे, आठवें और बारहवें में अत्यधिक खराब फल करता है।

वेध

शुभस्थान	३	६	११
वेधस्थान	१२		५

(अ) जब मंगल तीसरे स्थान में जा रहा हो और दूसरा कोई ग्रह उसी समय बारहवें स्थान पर जाता हो, (ब) जब मंगल बारहवें में हो और दूसरा कोई ग्रह तीसरे में, (स) मंगल जब छठे में हो और कोई अन्य ग्रह नवें में हो, (द) मंगल जब नवें में हो और कोई अन्य ग्रह छठे स्थान में हो, (य) मंगल जब ग्यारहवें में हो तथा कोई ग्रह पंचम स्थान में या (र) मंगल स्वयं चन्द्र राशि से पांचवें स्थान में जा रहा हो और दूसरा ग्रह ग्यारहवें स्थान में हो तो मंगल का शुभ अथवा खराब फल रुक जाता है (इन सब स्थानों की गणना जन्म राशि से ही करनी चाहिए)।

बुध का गोचर

जन्म राशि के चन्द्रमा से बुध का गोचर (अ) दूसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान में शुभ फल करता है। (ब) पहले,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीसरे, पांचवें, सातवें और नवें स्थानों में खराब फल करता है। (स) चौथे, आठवें और वारहवें स्थानों में अत्यधिक खराब फल करता है।

वेध

२	४	६	८	१०	११
५	३	९	१	८	१२

उदाहरण के लिए जिस समय बुध जन्म राशि से दूसरे स्थान में जा रहा हो और उसी समय कोई अन्य ग्रह (चन्द्रमा के अलावा) पांचवें स्थान में जा रहा हो तो बुध के गोचर का प्रभाव बिलकुल भी नहीं होगा। इसी प्रकार यदि बुध पांचवें स्थान में जाता हो तो दूसरा कोई ग्रह (चन्द्रमा के अतिरिक्त) दूसरे स्थान में जाते हुए बुध के प्रभाव को नहीं होने देगा; क्योंकि चन्द्रमा और बुध का सम्बन्ध पिता और पुत्र का है, इसलिए ही वे एक-दूसरे के प्रभाव को नहीं रोकते हैं (गोचर का विचार हमेशा ही चन्द्रमा जिस राशि में हो, उससे करना चाहिए)।

बृहस्पति का गोचर

बृहस्पति जब जन्म के चन्द्रमा से गोचर में (अ) दूसरे, पांचवें, सातवें, नवें और ग्यारहवें स्थान में जाता है तब बहुत अच्छा फल करता है। (ब) पहले, तीसरे, छठे और दसवें स्थानों में अशुभ होता है। (स) चौथे, आठवें और वारहवें स्थानों में अत्यधिक खराब फल करता है।

वेध

२	५	७	९	११
१२	४	३	१०	८

इसलिए बृहस्पति जब गोचर में जन्म के चन्द्रमा से दूसरे स्थान में जा रहा हो तो उसका अच्छा फल नहीं होगा। यदि उसी समय कोई अन्य ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु और केतु) जन्म राशि से वारहवें स्थान में जा रहा हो। इसी प्रकार बृहस्पति के वारहवें स्थान का अशुभ फल भी नहीं होगा। यदि उसी समय दूसरे भाव में कोई अन्य ग्रह जा रहा हो (यहां यह देखना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

प्रथम, तीसरे, पाचवे, सातवे, नवे, दसवे उत्तम फल
२, ६, अशुभ ४, ८, १२ अत्यन्त खराब.

चाहिए कि वृहस्पति एक राशि में सामान्य तौर पर एक वर्ष रहता है जबकि शनि और राहु के अतिरिक्त अन्य ग्रह थोड़े समय में ही एक राशि में अपना भ्रमण पूरा कर लेते हैं। वे वृहस्पति के शुभ अथवा अशुभ प्रभावों को सिर्फ उसी समय तक ही रोक पाएंगे जब तक उसके वेध स्थान में हों)।

शुक्र का गोचर (जन्म समयको चन्द्रमाबाट 'शुक्र)

शुक्र जन्म के चन्द्रमा से गोचर में—

(अ) पहले, दूसरे, तीसरे, नवें और ग्यारहवें में शुभ होता है।

(ब) पांचवें, छठे, सातवें और दसवें में खराब होता है।

(स) चौथे, आठवें और बारहवें में अत्यधिक खराब फल करता है।

वेध

शुभ स्थान	१	२	३	४	५	८	९	११	१२
वेध स्थान	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

पहला-आठवां, दूसरा-सातवां, तीसरा-पहला इत्यादि परस्पर वेध स्थान हैं। इसलिए शुक्र जब जन्म राशि से पहले स्थान में जा रहा हो उसी समय कोई अन्य ग्रह यदि आठवें या तीसरे स्थान में हो तो शुक्र के प्रभाव को रोक देते हैं। इसी प्रकार गोचर में अन्य वेध स्थानों का ध्यान रखना चाहिए।

शनि का गोचर

जन्म राशि से शनि का गोचर—

(अ) तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थानों में शुभ समझना।

(ब) पहले, दूसरे, पांचवें, सातवें और नवें स्थानों में खराब फल देता है।

(स.) चौथे, आठवें और बारहवें भावों में अत्यधिक खराब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फल देता है।

वेध

३	६	११	१०
१२	९	५	४

अर्थात् शनि जब गोचर में जन्म के चन्द्रमा से तीसरे स्थान में जा रहा हो, उसी समय सूर्य के अलावा यदि कोई अन्य ग्रह जन्म राशि से बारहवें स्थान में जा रहा हो तो शनि के प्रभाव को रोक देता है। इसी प्रकार शनि का बारहवें स्थान में गोचर का प्रभाव तीसरे स्थान में (सूर्य के अलावा) जाता हुआ ग्रह नहीं होने देता। इसी तरह (अ) छठे-नवें, (ब) ग्यारहवें-पांचवें को भी परस्पर वेध स्थान समझना। सूर्य और शनि का पिता-पुत्र का सम्बन्ध होने के कारण एक-दूसरे के प्रभाव को नहीं रोकते हैं।

यहां हम यह भी बताते हैं कि साढ़े साती (अर्थात् शनि के साढ़े सात वर्ष) सामान्य रूप से अच्छा फल नहीं करते हैं। शनि भचक्र का भ्रमण तीस वर्ष में करता है और एक राशि के भ्रमण में उसे लगभग २ वर्ष ६ मास की अवधि मिलती है। जन्म राशि से बारहवें स्थान में जब शनि आता है तो साढ़े साती प्रारम्भ होती है—ये पहले ढाई वर्ष हुए। जन्म राशि में से जब गोचर का शनि जाता है, यह मध्य के ढाई वर्ष हुए। जब जन्म राशि से दूसरे स्थान में शनि जाता है तब तीसरे ढाई वर्ष हुए। इन्हीं तीनों स्थानों (बारहवें, पहले, दूसरे) के भ्रमण काल को मिलाकर साढ़े सात वर्ष अर्थात् साढ़े साती कहते हैं।

जन्म राशि से चौथे और आठवें स्थानों में शनि का अत्यधिक खराब फल बताया है। शनि जब इन दोनों स्थानों से जाता है तो प्रत्येक स्थान में ढाई-ढाई वर्ष रहता है। इसे ही शनि की ढइया कहते हैं।

राहु और केतु के गोच

राहु और केतु के गोचर का फल भी वही होता है जो शनि के गोचर का। परन्तु सूर्य शनि के फल को वेध स्थानों में नहीं रोकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जबकि राहु और केतु के फल को सूर्य (और बाकी अन्य ग्रह भी) रोक सकने में समर्थ है। राहु का केतु से और केतु का राहु से वेध नहीं होता है।

गोचर का फल

पिछले कुछ पृष्ठों में सिर्फ यह बताया गया है कि किन-किन स्थानों में गोचर का शुभ फल होता है और किन-किन स्थानों में खराब फल होता है। परन्तु जीवन में किस प्रकार का शुभ फल या अशुभ फल होगा इसकी जानकारी के लिए कुछ सिद्धान्त नीचे दिए जाते हैं :

हमारे विचार से पाठक वेध स्थान का विचार छोड़ सकते हैं, क्योंकि प्राचीन ग्रन्थकारों में भी इसके बारे में मतभेद है अर्थात् एक ग्रह किसी दूसरे ग्रह के प्रभाव को रोक सकता है अथवा नहीं।[1]

पाठक यदि निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंगे तो उनका फलादेश अधिक ठीक आएगा :

(१) ग्रह जब जन्म राशि से अथवा लग्न से बारहवें स्थान में जाते हैं तो अत्यधिक व्यय कराते हैं, खास तौर से उस समय जबकि दो या तीन ग्रह बारहवें स्थान में जाते हों। क्रूर ग्रह विशेष रूप से अधिक व्यय कराते हैं।

(शुभ) ग्रह अच्छे कार्यों में—जैसे विवाह, धर्म इत्यादि में व्यय कराते हैं।)

(२) सूर्य, बुध और शुक्र बारह राशियों का भ्रमण एक वर्ष में पूरा कर लेते हैं। ये ग्रह प्रायः एक राशि में एक मास तक रहते हैं। पाठकों के लिए अच्छा रहेगा कि वे अपने बीत गए वर्षों में देखें कि कौन-कौन से महीने उनके साधारण रूप से अच्छे जाते हैं। हमारे बताने का उद्देश्य यहां यह है कि सूर्य-मास और कैलेण्डर के मास एक नहीं होते।

---

१. देखिए मुहूर्त चिन्तामणि—संस्कृत टीकाकार पीयूषधारा ने नारद, कश्यप, मांडव्य, वशिष्ठ, बृहस्पति इत्यादि से अंश उद्धृत किए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य का आरम्भ उस समय माना जाता है जबकि सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में जाए और जब सूर्य उस राशि से निकलता है तो सूर्य-मास पूरा होता है। प्रत्येक वर्ष के पंचांग से इस बात का पता लग जाएगा कि कौन-सा ग्रह कब तक किन-किन राशियों में रहेगा।

(३) (अ) यदि जन्म के समय कोई ग्रह राशि में बलवान हो (अपने उच्च, मित्र अथवा अपनी ही राशि में) और किसी अच्छे स्थान में भी बैठा हो—विशेष रूप से (लग्न अथवा चन्द्रमा से) तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें भाव में—तो गोचर में यदि वह किन्हीं अशुभ भावों में जाएगा तो भी उसका अधिक खराब फल नहीं होगा।

(ब) यही फल. उस समय भी समझना जबकि ग्रह (जिसके गोचर का विचार किया जा रहा है) अच्छे भावों का स्वामी हो या जन्म-कुण्डली में योगकारक हो।

(४) यदि कोई ग्रह राशि और भाव में भी बलवान हो, विशेष तौर पर तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान में हो (जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से) तो जब गोचर में शुभ स्थानों से जाता है तो अत्यधिक शुभ फल करता है।

(५) यदि कोई ग्रह कमजोर हो (राशि और नवांश में नीच का हो या किसी शत्रु, अति शत्रु की राशि और नवांश में हो) और किसी क्रूर ग्रह के साथ बैठा हो या दृष्ट हो और उसपर किसी शुभ ग्रह की न तो दृष्टि हो, न ही कोई शुभ ग्रह उसके साथ बैठा हो अथवा खराब ग्रहों का स्वामी हो और विशेष तौर से जन्म राशि और लग्न दोनों ही स्थानों से खराब भावों का स्वामी हो तो गोचर में वह शुभ स्थानों में जाता हुआ भी कोई खास अच्छा फल नहीं करेगा।

(६) (अ) गोचर में यदि किसी ग्रह का किसी क्रूर ग्रह से एक ही राशि में योग हो या उस पर क्रूर ग्रह की दृष्टि पड़े, तो गोचर में जाते हुए ग्रह का अच्छा फल कम हो जाता है और खराब फल बढ़ जाता है।

(ब) यदि कोई ग्रह गोचर में अस्त हो या अपनी नीच राशि या नीच नवांश में हो तो उसका भी इसी प्रकार फल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है।

(७) (अ) गोचर में जब किसी ग्रह का किसी शुभ ग्रह से योग होता है अथवा उसपर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ती है तो उस गोचर में जाते हुए ग्रह का अच्छा फल बढ़ जाता है और खराब फल कम हो जाता है।

उदाहरण के लिए मंगल तीसरे स्थान में जा रहा हो और उसी समय शुक्र अथवा बृहस्पति भी वहां से जाएं तो मंगल के शुभ फल को बढ़ाएंगे। इसके विपरीत मंगल यदि नवम स्थान से जा रहा हो और उसपर बृहस्पति की दृष्टि पड़े तो मंगल का अशुभ फल कम हो जाएगा।

(ब) जब कोई ग्रह अपनी उच्च राशि या अपनी स्वयं की राशि अथवा अपने नवांश या उच्च नवांश में से जाता है तो भी उसका अच्छा फल तो बढ़ता है और खराब फल कम हो जाता है।

उदाहरण के लिए शनि के साढ़े सात वर्ष (साढ़े सातो) खराब माने गए हैं। परन्तु कन्या राशिवाले के लिए अन्तिम ढाई वर्षों में शनि तुला में से जाएगा। तुला राशि शनि का उच्च स्थान है तो वहां पर शनि इतनी पीडा नहीं देगा।

(८) शुभ ग्रह गोचर में जब वक्री होते हैं तो अधिक शुभ फल करते हैं। क्रूर ग्रहों का वक्री होना अत्यधिक अशुभ फल करता है।

(९) सबसे अधिक प्रभाव शुभ अथवा अशुभ उस समय प्रतीत होता है जिस समय दो या अधिक ग्रह गोचर में वक्री हो जाएं (शुभ ग्रह अथवा क्रूर ग्रह)।

(१०) संक्षेप में गोचर में जाते हुए ग्रह का न सिर्फ गोचर में जाते हुए समय का अपितु जन्म के समय कैसा प्रभाव पड़ा है—इन दोनों ही बातों का विचार करकेफल निकालना चाहिए अर्थात् ग्रह अच्छा फल देगा अथवा खराब फल देगा। मान लीजिए, किसीकी जन्म-कुण्डली में सन्तान स्थान (पांचवें भाव में) में क्रूर ग्रह हो तो संतान नहीं होगी या होकर नष्ट हो जाएगी, इस बात को बतलाते हैं तो गोचर में पंचम स्थान में जाता हुआ बृहस्पति भी सन्तान देने में समर्थ नहीं होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(११) क्रूर ग्रह अशुभ स्थानों में से जाते हुए ज्यादा खराब फल दिखाएंगे, यदि जिस राशि में से वे जा रहे हैं उस राशि में जन्म के समय कोई ग्रह बैठा हो। विशेष तौर से उस समय जबकि गोचर के ग्रह की अपनी चाल भी अति धीमी हो।[1]

(१२) शुभ ग्रह शुभ स्थानों में जाते हुए अच्छा फल दिखाते हैं—यदि वहां पर कोई ग्रह जन्म के समय भी बैठा हो तो और भी अच्छा फल देता है।

यदि गोचर में जाता हुआ ग्रह अपनी सामान्य चाल से धीमा जा रहा हो तो और भी अच्छा फल करेगा।

(१३) यदि जन्म के समय में किसी भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो गोचर में क्रूर ग्रह भी उस भाव में जाते हुए इतना खराब फल नहीं दिखलाएंगे और शुभ ग्रह विशेष रूप से अच्छा फल दिखलाएंगे।

इसके विपरीत यदि जन्म के समय क्रूर ग्रह दृष्ट भाव से कोई शुभ ग्रह भी जाता हो तो अच्छा फल नहीं देगा और क्रूर ग्रह तो ज्यादा ही खराब फल देंगे।

(१४) जन्म के समय लग्न में बैठा हुआ ग्रह गोचर में जिस भाव में जाएगा उस भाव का फल देगा (यहां लग्न से भाव का विचार करना)।

हमारा अपना अनुभव यह है कि लग्न में बैठा हुआ ग्रह दूसरे-तीसरे इत्यादि भावों में तो वृद्धि करता है, परन्तु जब गोचर में लग्न में जाएगा तो खराब असर करेगा।

---

१. सूर्य की चाल में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता। चन्द्रमा करीब १३°—१०′ प्रतिदिन की चाल से चलता है। बुध और शुक्र भचक्र का एक वर्ष में भ्रमण पूरा कर लेते हैं इसलिए उनकी चाल जब ५९′—८″ प्रतिदिन से अधिक हो तो उन्हें शीघ्रगामी समझना, मंगल की प्रतिदिन की ३३′—२८″ की चाल समझना, बृहस्पति की प्रतिदिन ५′ और शनि की २′।

राहु और केतु साधारण तौर से एक ही चाल से चलते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन्म-कुण्डली

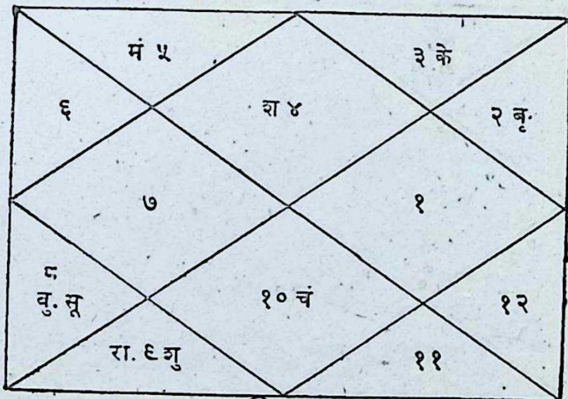

इन्दिरा गांधी

१७ नवम्बर १९१७; ११-११ सायं; भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम; इलाहाबाद।

गोचर का शनि इनके लग्न में जुलाई, १९७५ से सितम्बर, १९७७ तक गया। इसमें यह अपने स्थान से हटीं।

मोहम्मद रज़ा पहलवी

मोहम्मद रज़ा पहलवी का जन्म २६ अक्टूबर, १९१९ को तेहरान (ईरान) में १२-२० मध्य रात्रि को हुआ। शाह की जन्म-कुण्डली में पहले भाव में वृहस्पति अगस्त, १९७८ से सितम्बर, १९७९ तक गया। धार्मिक कारणों से (जिनका वृहस्पति कारक है) इन्हें गद्दी छोड़कर जाना पड़ा। (देखे पृष्ठ १८४)

(१५) जो अच्छा या खराब फल ग्रह जन्म-कुण्डली में बताता है वह फल उस समय होगा जबकि ग्रह लग्न में से जा रहा हो।

(१६) सूर्य और मंगल गोचर में राशि के ०° से १०° तक विशेष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईरान के बादशाह की जन्म-कुण्डली

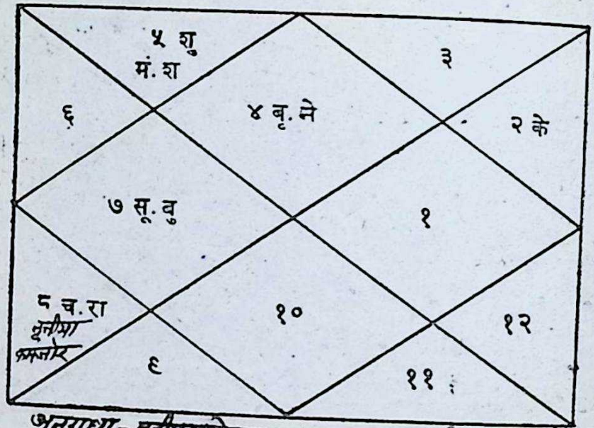

फल दिखाते हैं अर्थात् इनका फल राशि में प्रवेश करने के साथ ही हो जाता है, वृहस्पति और शुक्र अपना अधिक प्रभाव राशि के मध्य में (१०° से २०° तक) और चन्द्रमा और शनि राशि के अन्तिम १०° में अपना प्रभाव दिखलाते हैं। बुध, राहु और केतु राशि के शुरू से राशि के अन्त तक अपना प्रभाव दिखलाते हैं अर्थात् ०° से ३०° तक।

(१७) ग्रह गोचर में किस प्रकार का अच्छा या खराब फल देगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह ग्रह जन्म-कुण्डली में—

(अ) किन भावों का स्वामी है,

(ब) किस स्थान में बैठा हुआ है,

(स) किस वस्तु का कारक है,

(द) गोचर में किस भाव में जा रहा है। यहां भाव का विचार जन्म राशि से, जन्म लग्न से तथा अपने स्वयं के स्थान से करना चाहिए। भाव और ग्रह के फल के लिए पिछले अध्यायों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को देखिए । इस पुस्तक में हमने जन्म-कुण्डली का फलादेश करने के लिए काफी सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं । जीवन के विभिन्न पहलुओं का विचार और किस समय किस भाव का फल होगा (महादशा और अन्तर्दशा के अनुसार तथा ग्रहों के गोचर से)। पाठकों से हमारा निवेदन है कि अपने और अपने मित्रों की जन्म-कुण्डली का विचार कर अनुभव प्राप्त करें। कई वार ग्रहों का परस्पर विरोधाभास प्रतीत होता है, परन्तु अनुभव से ही निचोड़ निकालना चाहिए । चाहे ज्योतिष या कोई और विद्या, केवल सिद्धान्त से ही ज्ञान पूर्ण नहीं होता । वार-वार अनुभव करने से ही पूर्णता प्राप्त होती है ।

नीचे हम १९०० ईसवी से १९८० का अयनांश दे रहे हैं । पाठकों को किसी विशेष मास का अयनांश इकाई के अनुसार निकाल लेना चाहिए (यह अयनांश प्रत्येक वर्ष में पहली जनवरी के लिए है) :

वर्ष	अंश कला विकला	वर्ष	अंश कला विकला
१९००	२२—२८— ५	१९३२	२२—५४—३३
१९०२	२२—२९—३५	१९३४	२२—५६—२५
१९०४	२२—३१— ८	१९३६	२२—५८—११
१९०६	२२—३२—३८	१९३८	२२—५९—५०
१९०८	२२—३४—१२	१९४०	२३— १—२३
१९१०	२२—३५—५४	१९४२	२३— २—५४
१९१२	२२—३७—४२	१९४४	२३— ४—२३
१९१४	२२—३९—३४	१९४६	२३— ६— ०
१९१६	२२—४१—२४	१९४८	२३— ७—४४
१९१८	२२—४३— ८	१९५०	२३— ९—३५
१९२०	२२—४४—४५	१९५२	२३—११—२५
१९२२	२२—४६—१६	१९५४	२३—१३—१५
१९२४	२२—४७—४४	१९५६	२३—१४—५६
१९२६	२२—४९—१७	१९५८	२३—१६—३१
१९२८	२२—५०—५६	१९६०	२३—१७—५५
१९३०	२२—५२—४३	१९६२	२३—१९—२४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्ष	अंश कला विकला	वर्ष	अंश कला विकला
१९६४	२३—२०—५९	१९७०	२३—२६—२१
१९६६	२३—२२—४१	१९७४	२३—२९—५५
१९६८	२३—२४—३०	१९८०	२३—३४—३१

ग्रंथों के नाम

विशेष अध्ययन के लिए निम्नलिखित ग्रंथों का अवलोकन करें :

(१) वृहत् पाराशर होराशास्त्र
(२) वृहत् जातक
(३) सारावली
(४) फलदीपिका
(५) सर्वार्थ चिन्तामणि
(६) जातक पारिजात
(७) उत्तरकालामृत
(८) जातकालंकार
(९) जातकाभरणम
(१०) भारतीय लग्न सारिणी
(११) जातकादेशमार्ग
(12) भावार्थ रत्नाकर.

ज्योतिष रत्नाकर
(मन्त्रेश्वर)
भावार्थ रत्नाकरकार

ग्रहको विशेष दशा प्रणाली

जन्म देखि १६ वर्ष सम्म वृहस्पतिको प्रभाव.
१७ वर्ष देखि २२ वर्ष सम्म सूर्यको प्रभाव.
२३ वर्ष देखि २४ वर्ष सम्म चन्द्रमाको प्रभाव.
२५ वर्ष देखि २५ वर्ष सम्म शुक्रको प्रभाव.
२६ वर्ष देखि २८ वर्ष सम्म मंगलको प्रभाव.
२९ वर्ष देखि ३२ वर्ष सम्म बुधको प्रभाव.
३३ वर्ष देखि ३६ वर्ष सम्म शनिको प्रभाव.
३७ वर्ष देखि ४२ वर्ष सम्म राहुको प्रभाव.
४३ वर्ष देखि ४८ वर्ष सम्म केतुको प्रभाव.

जन्म कुण्डलीमा उपरोक्त ग्रह कुनै अशुभ ग्रह ले युक्त वा दृष्ट ६।८।१२ भावमा छ वा शुभ भावमा शुभ ग्रहले युक्त दृष्ट छ भने [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पारिभाषिक शब्दों का अर्थ

(१) अयनांश

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करने के अतिरिक्त अपनी धुरी पर लट्टू की तरह घूमती रहती है। इसकी धुरी के बिन्दु एक जगह स्थिर नहीं रहते हैं अपितु एक प्रकार का वृत्त बनाते

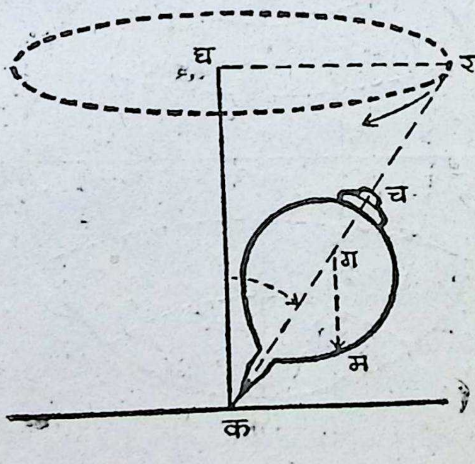

चित्र १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं। यह प्रतिवर्ष करीब ५० विकला के हिसाब से हटते हैं और ३६० अंश की पूर्ण परिक्रमा २५,८०० वर्षों में पूरी करते हैं। भारतवर्ष में विभिन्न पंचांग अपना-अपना अयनांश मानते हैं।

पीछे दिए गए चित्र में धुरी 'क च' खड़ी रेखा 'क घ' पर एक कोण बनाती हुई घूम रही है; क्योंकि यह घूमने की चाल तेज है इसलिए वह 'ग म' की तरफ नहीं गिरती अपितु यदि कोई बिन्दु 'ख' इस धुरी पर माना जाए तो वह बिन्दु 'घ' के चारों तरफ एक वृत्त का आकार (जैसा कि पीछे दिखाया गया है) बनाएगा। इसी प्रकार का वृत्त पृथ्वी की धुरी के बिन्दु बनाते हैं।

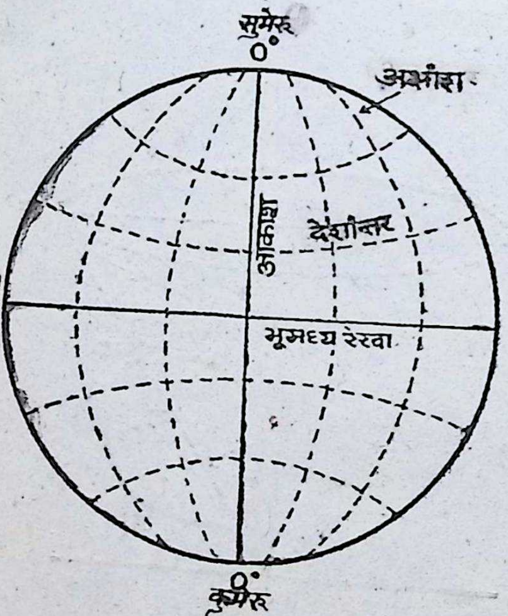

चित्र २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) अक्षांश Latitude.

भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण की दूरी। एटलस में यह दूरी 'पड़ी' हुई रेखाओं द्वारा देखिए।

देशान्तर , (रेखांश) Longitude.

आकाश-मध्य से पूर्व या पश्चिम की तरफ की दूरी। सुविधा के लिए लन्दन को शून्य मानकर उससे पूर्व या पश्चिम की दूरी।

एटलस में यह खड़ी हुई रेखाओं द्वारा देखिए (चित्र २)।

जिस प्रकार पृथ्वी पर किसी भी स्थान का अक्षांश और देशान्तर देखा जाता है उसी प्रकार से ग्रहों का भी देखना चाहिए। १ घण्टा मे १५ देशान्तर होता है १० देशान्तर मे ४ मिनट होता है।

(३) अन्तर्दशा Sub-period.

प्रत्येक महादशा में नौ ग्रहों की दशाएं होती हैं; क्योंकि एक महादशा का काल बहुत वर्षों का होता है इसी कारण उसके पुनः नौ विभाग किए जाते हैं।

(४) अस्त Combust.

सूर्य की किरणों के अधिक पास आ जाने पर ग्रह अस्त समझा जाता है अर्थात् वह दिखाई नही देता। चन्द्रमा सूर्य से १२° पर, मंगल १७° पर, बृहस्पति ११° पर, शनि १५° पर, बुध यदि वक्री हो तो १२° पर अन्यथा १४° पर, शुक्र यदि वक्री हो तो ८° पर अन्यथा १०° पर अस्त होता है। बुध सूर्य से २८° से अधिक दूर नहीं रहता है, उसे अस्त होने का दोष नहीं होता है। इसी प्रकार शुक्र सूर्य से ४८° से दूर नहीं होता है। उसे अस्त होने का क्षीण दोष होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) अंश Degree.

प्रत्येक राशि में तीस अंश होते हैं। यह पूर्ण वृत्त का ३६०वां भाग होता है। इसे अंग्रेजी में डिग्री कहते हैं।

प्रत्येक अंश में ६० कलाएं होती हैं। प्रत्येक कला में ६० विकलाएं होती हैं।

(६) आपोक्लिम

जन्म लग्न से तीसरे, छठे, नवें और बारहवें भावों को आपोक्लिम कहते हैं। ३-६-९-१२.

(७) उच्च (High) Exalted

प्रत्येक ग्रह किसी एक राशि में उच्च होता है। सूर्य मेष में, चन्द्रमा वृषभ में, मंगल मकर में, बुध कन्या में, बृहस्पति कर्क में, शुक्र मीन में, शनि तुला में। राहु और केतु के उच्च स्थान के बारे में मतभेद हैं।

नीच (Low.) Debilited.

प्रत्येक ग्रह किसी एक राशि में नीच का (अर्थात् कमजोर) होता है।

सूर्य तुला में, चन्द्रमा वृश्चिक में, मंगल कर्क में, बुध मीन में, बृहस्पति मकर में, शुक्र कन्या में, शनि मेष में।

(८) उपचय

लग्न से तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें भावों को उपचय कहते हैं। ३-६-१०-११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

angle =

(९) उदय Rise.

देखिए 'अस्त'

(१०) कला (मिनेट)

देखिए 'अंश'।

(११) क्रूर ग्रह

देखिए पीड़ित।

(१२) केन्द्र Square.

जन्म लग्न, चौथे, सातवें और दसवें भाव को केन्द्र कहते हैं। १-४-७-१०

त्रिकोण Trine

पांचवां और नवां भाव। जन्म लग्न को त्रिकोण और केन्द्र दोनों ही कहा गया है। १-५-९

(१३) क्रान्तिवृत्त

राशि-मण्डल भी कहते हैं। आकाश गोल में अपनी गति से चलने का जो सूर्य का मार्ग है, उसका नाम क्रान्तिवृत्त है।

(१४) गोचर

किसी भी ग्रह का जन्म-कुण्डली के किसी भी भाव अथवा ग्रहों (जन्म के समय जो ग्रहों की स्थिति हो) पर से जाने को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोचर कहते हैं। शनि और वृहस्पति के गोचर विशेष प्रभाव दिखाते हैं।

गति *Motion.*

ग्रहों की चाल को गति कहते हैं।

(१५) ग्रह *Planet.*

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ये सात ग्रह हैं। राहु और केतु ये दो छाया ग्रह हैं (ये अदृश्य हैं)। भारतीय ज्योतिष में इन्हीं नव ग्रहों को माना गया है।

इसके अतिरिक्त हर्शल (इसे यूरेनस भी कहते हैं), नेपच्यून और प्लूटो इन तीन ग्रहों का प्रभाव भी विशेष फल दिखलाता है।

(१६) देशान्तर – रेखांश *Longitude*

देखिए 'अक्षांश'।

(१७) दृष्टि

ग्रह जहां बैठते हैं वहां से विभिन्न भावों को देखते हैं। सब ग्रह अपने से सातवीं राशि (या भाव को) को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। इसके अतिरिक्त वृहस्पति अपने से पांचवें, नवें भावों को, मंगल अपने से चौथे, आठवें भावों को तथा शनि अपने से तीसरे, दसवें भावों को भी पूर्ण रूप से देखता है।

राहु और केतु की दृष्टि नहीं होती है। शनि की दृष्टि खराब फल देती है और वृहस्पति की दृष्टि शुभ फल देने वाली होती है।

(१८) दशाएं *Period.*

देखिए महादशाएं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१६) दिशाएं

देखिए तीसरा और पांचवां अध्याय।

(२०) नीच

देखिए 'उच्च'।

(२१) नवांश

प्रत्येक राशि के (३० अंश के) नौ विभाग किए जाते हैं जो कि ३°—२०′ के होते हैं। इन विभागों को नवांश कहते हैं (देखिए अध्याय ३)।

(२२) नक्षत्र Sidereal.

सत्ताइस नक्षत्र होते हैं। कुछ अन्य मतों से २८वां नक्षत्र, जिसे 'अभिजित' कहते हैं, भी है। नक्षत्रों के समूह जिस प्रकार देखने में आए, उसीके आधार पर राशियों के नाम भी रखे गए हैं।

(२३) पणफर

लग्न से दूसरे, पांचवें, (आठवें) और ग्यारहवें भावों को पणफर कहते हैं। २-५-८-११

(२४) पाप ग्रह ३-६-८-११.

तीसरे, छठे और ग्यारहवें भावों के स्वामी पाप ग्रह कहलाते हैं। आठवें भाव का स्वामी भी पाप ग्रह होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

(२५) पीड़ित *Afflicted.*

जो ग्रह पाप ग्रह के साथ हो, उसके द्वारा देखा जाता हो, पाप ग्रह की राशि में हो, पाप ग्रहों के मध्य में बैठा हो अथवा नीच, शत्रुक्षेत्री हो, वह पीड़ित (कमज़ोर) होता है।

शुभ *Benefic.*

जो ग्रह अच्छे भावों का स्वामी हो (जैसे पहले, पांचवें, नवें भावों का) वह शुभ होता है। चन्द्रमा, बुध, शुक्र और बृहस्पति शुभ ग्रह हैं।

क्रूर *Malefic.*

सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु क्रूर ग्रह हैं।

(२६) पुरुष राशियां *Male Signs.*

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ।

स्त्री राशियां *Female Signs.*

वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन।

पुरुष ग्रह *Male Planet.*

भारतीय ज्योतिष में सब ग्रहों को पुरुष माना गया है। पाश्चात्य ज्योतिष में सूर्य, मंगल, बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं; चन्द्रमा, शुक्र स्त्री ग्रह हैं; बुध, शनि नपुंसक माने गए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२७) पृष्ठोदय राशियां

मेष, वृषभ, कर्क, धनु और मकर। "अन्त्यमा."

शीर्षोदय राशियां

मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुंभ। "आरम्भमा"

उभयोदय राशि "मध्यममा"

मीन।

(२८) बलवान ग्रह Powerful Planet.

ग्रह या राशि शुभ ग्रह से सम्बन्धित हो तो बलवान कहलाती है। जो ग्रह अपनी राशि, उच्च, मित्र की राशि में तथा जहां वह दिग्बली होता है, उसमें बैठा हो तो बलवान समझा जाता है। जिस राशि में शुभ ग्रह हो अथवा जो शुभ ग्रहों के मध्य में हो, अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो अथवा राशि का स्वामी बलवान हो वह राशि बली होती है। ऐसा ही भाव के लिए भी समझना।

(२९) भाव House.

जन्म-कुण्डली में १२ भाव होते हैं। किस भाव से किन-किन वस्तुओं का विचार करना चाहिए, यह चौथे अध्याय में देखिए।

(३०) महादशा Subperiods

चन्द्र स्पष्ट के द्वारा महादशा का निर्णय किया जाता है। नौ ग्रहों की महादशाएं होती हैं। विशेष विचार के लिए नवां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय देखिए।

(३१) पंचांग *Ephemeris.*

इसमें पांच चीजों का विचार किया गया है—नक्षत्र, तिथि, वार, कारण और योग—इसलिए इसे पंचांग कहते हैं। इसके अलावा इसमें सूर्य, चन्द्र इत्यादि ग्रहों का स्पष्ट दिया जाता है।

(३२) युति *Conjunction.*

जब दो या अधिक ग्रह एक ही भाव में बैठे हों।

(३३) राशि *Zodiac.*

भचक्र (कान्तिवृत्त) को १२ भागों में बांटा गया है। प्रत्येक राशि में ३० अंश (या सवा दो नक्षत्र होते हैं)। राशियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ और मीन।

(३४) लग्न *Ascadent.*

इसे जन्म लग्न भी कहते हैं। यह जन्म-कुण्डली का पहला भाव होता है। जन्म के समय पूर्व में जो राशि उदित हो, उसे लग्न कहते हैं।

(३५) लग्न स्पष्ट

लग्न के जितने अंश पर जन्म हो, उसे लग्न स्पष्ट कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३६) वक्री ग्रह *Retrograde Planet.*

जो ग्रह मीन से कुंभ की तरफ जाएं वे वक्री होते हैं। सूर्य और चन्द्रमा हमेशा सीधी गति से चलते हैं। राहु और केतु हमेशा उलटे (अर्थात् मीन से कुंभ से मकर) चलते हैं। बाकी पांचों ग्रह कभी सीधे (मार्गी) और कभी वक्री (उलटे) चलते हैं। पृथ्वी और सब ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। जब पृथ्वी की चाल अपेक्षाकृत अधिक होती है तब उससे कम गति से चलता हुआ ग्रह पीछे हटता हुआ प्रतीत होता है। यह इसी प्रकार से लगता है जैसे कि दो गाड़ियां एक ही दिशा में जाएं परन्तु एक की चाल तेज़ होने से उसमें बैठे हुए व्यक्तियों को दूसरी गाड़ी पीछे की तरफ चलती हुई प्रतीत होती है।

(३७) वर्गोत्तम

जब कोई ग्रह जिस राशि में हो, उसी नवांश में भी हो तो वह वर्गोत्तम कहलाता है। ज्योतिष मे वर्गोत्तम की प्रशंसा विशेषतया की गई है। वर्गोत्तम ग्रहका फल स्वक्षेत्रीय ग्रह के समान है।

(३८) विकला (~~[illegible]~~) (सेकेण्ड)

देखिए 'अंश'।

(३९) विषुव काल

यदि कोई घड़ी २१ मार्च को चालू की जाए और इतने धीरे चले कि पूरे एक वर्ष में २४ घंटे ही चल पाए। वह एक दिन में जितने मिनट और सेकण्ड चलेगी वह उस दिन का विषुव काल होगा (देखिए अध्याय दूसरा)।

(४०) मार्गी ग्रह *Direct Planet.*

देखो 'वक्री ग्रह'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४१) स्वगृही

प्रत्येक ग्रह की अपनी राशि/राशियां होती हैं। जब वह जन्म के समय अपनी राशि में हो तो स्वगृही कहलाता है (देखिए तीसरा अध्याय)।

(४२) स्थानीय मध्यम काल *Local Time*

ग्रीनिज (०°) से पूर्व या पश्चिम का समय। यह चार मिनट प्रति अंश के हिसाब से जोड़ा या घटाया जाता है। जैसे कोई स्थान ग्रीनविच से १५° पर पूर्व में हो तो वहां का स्थानीय मध्यम काल ग्रीनविच से एक घण्टा आगे होगा!

(४३) स्टैण्डर्ड टाइम *Standard Time.*

किसी भी देश का रेलवे टाइम। भिन्न-भिन्न देशों का स्टैण्डर्ड टाइम अलग-अलग हैं। उन्होंने पूरे क्षेत्र के लिए किसी एक आकाश मध्य को आधार मानकर टाइम निश्चित किया है। भारतवर्ष का स्टैण्डर्ड टाइम ८२°—३०′ के आधार पर है।

(४४) स्वामी

सातों ग्रह अलग-अलग राशियों के स्वामी हैं (देखिए अध्याय तीन)।

(४५) स्थिर राशियां *Fixed Signs.*

वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुंभ।

चर राशियां *Movable Signs.*

मेष, कर्क, तुला और मकर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्विस्वभाव राशियां Common Signs.

मिथुन, कन्या, धनु और मीन।

(४६) सम्बन्ध

ज्योतिष में 'सम्बन्ध' बहुत महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। जब किन्हीं दो ग्रहों में परस्पर युति या पूर्ण दृष्टि हो या दोनों की राशियों में परिवर्तन हो अथवा एक ग्रह दूसरे ग्रह की राशि में बैठे और उसे देखता हो—यह चार प्रकार के सम्बन्ध होते हैं।

(४७) त्रिक Evil House

जन्म लग्न से छठे, आठवें और बारहवें भाव को त्रिक कहते हैं। ६-८-१२.

(४८) योगकारक

जब कोई ग्रह एक साथ ही किसी केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी हो तो वह योगकारक कहलाता है।

(४९) मारकेश

दूसरे और सातवें भाव के स्वामी को मारकेश कहते हैं (देखिए दसवां अध्याय)।

(५०) राजयोग

किसी केन्द्र और किसी त्रिकोण के स्वामी का परस्पर सम्बन्ध राजयोग कहलाता है।

(५१) रेखांश Longitude.

देखो 'देशान्तर'

(५२) चरण Quarter.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सरल और सुबोध भाषा में अनेक चित्रों सहित

हस्त-रेखाएं

पं० आशुतोष ओझा

हस्तरेखा-विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के विद्वान और ज्योतिषी पंडित आशुतोष ओझा ने अपने निजी अनुभवों के आधार पर इस पुस्तक को लिखा है और हाथ की रेखाओं से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी को चित्रों के साथ प्रस्तुत किया है।

इसकी सहायता से आप अपना व अपने सगे-संबंधियों और मित्रों का हाथ सफलतापूर्वक देख सकते है तथा जीवन के सारे उतार-चढ़ाव, आय-व्यय, स्वास्थ्य, विवाह, प्रेम, सन्तान और विदेश-यात्रा की जानकारी पा सकते हैं। इस दृष्टि से यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है।

मूल्य ५.००

आनंद पेपरबैक्स
मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

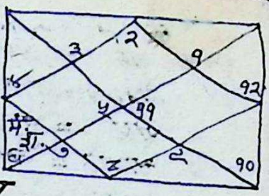

नैसर्गिक दशा

जन्म देखि १ वर्ष सम्म चन्द्रमाको दशा
२ वर्ष देखि २ वर्ष सम्म मंगलको दशा
४ वर्ष देखि १२ वर्ष सम्म बुधको दशा
१३ वर्ष देखि ३२ वर्ष सम्म शुक्रको दशा
३३ वर्ष देखि ५० वर्ष सम्म बृहस्पतिको दशा
५१ वर्ष देखि ७० वर्ष सम्म सूर्यको दशा
७१ वर्ष देखि १२० वर्ष सम्म शनिको दशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महिनाहरूको स्वामी. (दूषित, मलिन, अस्त)
उन महिनामा जन्म भएकोले उनग्रह मान्ने | उक्त महिनामा स्त्रीको पीडा हुन्छ)

1. वैशाख = मंगल.
2. जेष्ठ = शुक्र.
3. आषाढ = बुध.
4. श्रावण = चन्द्र.
5. भाद्र = सूर्य.
6. आश्विन = बुध.
7. कार्तिक = शुक्र.
8. मार्ग = मंगल.
9. पौष = बृहस्पति.
10. माघ = शनि.
11. फाल्गुण = शनि.
12. चैत्र = बृहस्पति.

2. वृष लग्नमा शनि — मेष
4. कर्कट लग्नमा मंगल — मिथुन (बुध)
5. सिंह लग्नमा मंगल — कन्या गुरु
7. तुला लग्नमा शनि — वृश्चिक
10. मकर लग्नमा शुक्र — धन
11. ~~कुम्भ लग्नमा~~ शुक्र — मीन.

जनताको सकलनमा रहेका
पुस्तकहरु सार्वजनिक प्रयोगका
लागि प्रदान गरिएको छ।
श्रीमती मेदिनी मल्ल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu